❀ श्रीहरिः ❀

जयपुर नरेश की इङ्गलेण्ड यात्रा

जिसमें

श्रीहुजूर पुरनूर लेफ़टिनेन्ट जनरल हिज़ हाइनेस सरामदे राजहाय हिन्दुस्तान राज राजेन्द्र श्री महाराजाधिराज सर सवाई **माधोसिंहजी बहादुर** जी. सी. एस. आई., जी. सी. आई. ई., जी. सी. वी. ओ., जी. वी. ई., एल. एल. डी. वालिये रियासत जयपुर

के

इङ्गलेराड यात्रा का संक्षिप्त वर्णान है

प्रकाशक

मुन्शी शिवनारायण सकसेना, बी० ए०

नायब फ़ोजदार, जयपुर.

जेलप्रेस, जयपुर.

सम्वत १९७२

॥ समर्पण ॥

जो आज दिन भगवद्भक्ति परायणता, प्रजावात्सल्य तथा धर्मरक्षा के लिए भूमण्डल में विख्यात हैं, जिन की दानवारी धारा ने अनेक दुखियों के कुम्हलाये हुए हृदयों को सिक्त कर पुनः प्रफुल्लित किये हैं, जो भारत सम्राट के परम हितैषी तथा विश्वास पात्र मित्र हैं, ऐसे हिन्दू नृपति कुल चूड़ामणि, परम प्रतापी महामान्य सूर्य वंशावतंश

लेफ्टिनेन्ट जनरल हिज़ हाईनेस सरामदे राजहाय हिन्दुस्तान
राज राजेन्द्र श्रीमन महाराजाधिराज सर सवाई

माधवसिंह बहादुर

जी. सी. ऐस. आई., जी. सी. आई. ई., जी. सी. वी. ओ.,
जी. बी. ई., एल. एल. डी.,

वालिए रियासत जयपुर

के

चरण कमलों में

उन्हीं का तुच्छ सेवक, उन की

इङ्गलेण्ड यात्रा के संक्षेप समाचार

सविनय सादर और भक्ति पूर्वक समर्पण करता है।

विनीत निवेदक,
शिवनारायण सक्सेना.

॥ निवेदन ॥

आज कल ऐसी प्रथा चल रही है कि प्रत्येक पुस्तक के साथ उस का परिचय दिया जाता है, परन्तु हम को इस पुस्तक के परिचय की आवश्यकता नहीं जान पडती, क्यों कि पुस्तक के आरंभ में ही इस का परिचय दिया जा चुका है। यह पुस्तक श्रीमान महाराजाधिराज की कीर्ति बढाने के उद्देश से प्रकाशित नहीं की जाती है। उन का यश तो संसार में चारों ओर में फैल रहा है, इस के प्रकाशित करने का मुख्य कारण यही है कि श्रीमान जयपुर नरेश की इङ्गलेण्ड यात्रा से जो सच्चे उपदेश और मर्यादा की रक्षा की पवित्र शिक्षा और अटल राज भक्ति प्राप्त होती है उस से जयपुर नगर की प्रजा, राज्य कर्मचारी और समस्त संसार के धर्मानुरागी लाभ उठावें।

मैं राय बहादुर बाबू **अविनाशचन्द्रजी सैन**, सी. आई. ई., की कृपा का बहुत कुछ ऋणी हूं कि जिन होंने जयपुराधीश से मेरी हार्दिक तथा उत्कट इच्छा प्रगट की और श्रद्धेय महाराजा साहिब से आज्ञा प्राप्त कर मुझ को श्रीमानों की इङ्गलैण्ड यात्रा के बृतान्त पुस्तक रुप में प्रकाशित करने का शुभ अवसर प्रदान किया। इतना ही नहीं वरण उपरोक्त बाबू साहिब ने आवश्यक सूचना और मनोरंजक बृतान्त को समयानुसार बता कर इस की कमी को पूर्ण किया और अन्त में अपना अमूल्य समय दे कर एक बार पुस्तक का आद्योपान्त अवलोकन कर उचित संशोधन किया।

इस पुस्तक के लिखने में श्रीयुत राय बहादुर **पुरोहित गोपीनाथजी** एम. ए., सी. आई. ई., और विद्यावाचस्पति **पंडित मधुसूदनजी झा** की अपूर्व कृपा का भी अनुग्रहीत हूं कि जिनहों ने इस पुस्तक के संबन्ध में पूर्ण सहायता दे कर उत्साहित किया।

मैं डाक्टर **केशवदेवजी** शास्त्री एम. डी. को भी धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकता क्यों कि आपने इस पूस्तक के प्रूफ संशोधान में बहुत परिश्रम किया।

अन्त में मैं उस सच्चिदानन्द आनन्दकनद स्वरूप को धन्यवाद देता हूं कि जिस की कृपा से आज मुझ को भगवत्स्वरूप स्वामी की यात्रा के विषय में कुछ निवेदन करने का साहस हुआ और अन्त में जगदाधार से प्रार्थना करता हूं कि हमारे न्यायशील स्वामी महाराज कुमार सहित सदा प्रसन्न और चिरनजीव रहें।

भवदीय निवेदक
शिवनारायण सक्सेना.

॥ चित्र सूची ॥

श्री हुजूर महाराज साहिब बहादुर (जयपुर).

* जयपुर नरेश की इङ्गलेण्ड यात्रा *

सनातन हिन्दू धर्म और उस में जयपुर नरेश का अटल अनुराग ।

यह मानी हुई बात है कि हिन्दुओं का परम पवित्र धर्म जिस का कि सनातन धर्म जैसे पवित्र नाम से परिचय दिया जाता है संसार के सब धर्मों से पुराना और अनादि धर्म है। सनातन शब्द का अर्थ ही यह है कि जो सदा से चला आया हो। सनातन धर्म किसी काल या देश में बना हुआ नहीं है यह ईश्वराज्ञासिद्ध अनादि नित्य धर्म है। यह सदा से एक रूप रहता है किसी काल में इस के मुख्यसिद्धान्तों में परिवर्तन नहीं होता। जो रूप इस का कई हजार या कई लाख वर्ष पहिले था वही रूप आज भी बना हुआ है। जो सत्पुरुष ईश्वर की कृपा से इस का महत्व जान लेते हैं वे प्राण पण से इस के दृढ विश्वासी बन जाते हैं। व प्राण जाने पर भी

इस से विमुख नहीं होते। आज से हजारों वर्ष पहिले हमारे पूर्वज भगवान् श्रीराम और श्रीकृष्ण के जैसे भक्त थे, रामकृष्ण नाम की मधुर रसधारा जिस प्रकार उन के कान में अमृत सेवन करती थी, वैसे ही आज भी अनेक भावुक भक्त भारत में मौजूद हैं और वे भी इन नामों के श्रवण-मात्र से प्रेमविह्वल हो कर अपने शरीर तक की सुध बुध भूल जाते हैं। इस सनातन धर्म की मर्यादा संसार में स्थापित करने को परम पुनीत रघुवंश में श्रीरामचन्द्र महाराज का मर्यादा पुरुषोत्तमावतार हुआ था। उस वंश के महाराज अब तक सनातन धर्म के प्रसिद्ध रक्षक होते आये है। ऐतिहासिक सज्जनों को विदित है कि श्रीरामचन्द्र भगवान के वंश में ही कछवाहाकुलतिलक महाराजाधिराज राज-राजेन्द्र श्री जयपुर नरेश विद्यमान हैं। यह वही कुल है जिस के मूलपुरुष अयोध्या में श्रीरामचन्द्र के पुत्र महाराज कुश हुए थे। इसी कारण इस वंश के राजपूत "कुशवाहा" भी कहलाते हैं। इस ही वंशमें साधुसेवी महाराज पृथु, और भगवद्भक्त ध्रुव, सत्यवादी महाराज हरिश्चंद्र, कुलतारक महाराज भगीरथ, तेजस्वी और प्रतापी महाराज दशरथ आदि अनेक राजा महाराजा हो चुके हैं। इस ही मशहूर वंश कछवाहा के महाराजाओं ने अयोध्या से आ कर नरवर अपनी राजधानी स्थापित की थी और राजा शूरसेनजी ने ग्वालियार में जाकर बहुत बडा क़िला बनवाया था। फिर दूलेरायजी का ग्वालियर से दौस में जाकर ढूंढार राज्य स्थापित करना और कांकिलरावजी का वहा से

आ कर आमेर पर अधिकार जमाना, उस के बाद राजा **जयसिंहजी** का जयपुर बसाना प्राचीन इतिहास से भली प्रकार सिद्ध है। प्राचीन इतिहास से यह बात भी ज़ाहिर होति है कि इस राज्य के महाराजाओं को उस समय की गवर्न्मेन्ट ने महाराजाधिराज, राजराजेन्द्र, परमेश्वर और भट्टारक आदि की उच्च पदवियों से सम्मानित किया था हमारे जयपुर नरेश के पुर्वज महाराजा **मानसिंहजी** ने उत्तर पश्चिम में काबूल तक और दक्षिण में अरब समुद्र के उन टापुओं तक कि जहां आज बम्बई बन्दर सुशोभित है, अपने प्रताप और तेजबल से मुगल वंश के प्रसिद्ध सम्राट् अकबरशाह के समय में बहुत कुछ सम्मान और यश प्राप्त किया था। दक्षिण में सीलोन या लङ्का के टापू तक अपनी वीरता का डङ्का बजा दिया था। और जहां कहीं आप ने अपनी वीरता से शत्रू पर विजय पा कर अपना अधिकार जमाया उसी जगह अपनी यादगार बनाते गए। जैसा इस समय तक सूर्य भगवान् के मन्दिरों और जयसिंहपुरों से सिद्ध हो रहा है उनका वर्णन प्रतिष्ठित इतिहासों में पाया जाता है। कवियों में ऐसा कोई विरला ही होगा जिस का हृदय—

जननी जने तो ऐसा जन, जैसा मान मरद्द।
समन्दर खांडो पखालियो, काबुल पाड़ी हद्द ॥ १ ॥

दोहा सुन कर विकसित न हुआ हो। जब काबुल जाते हुए महाराज मानसिंहजी की राजपूत सेना ने धर्म की दुहाई दे कर

अटक नदी पार करने में आनाकानी की तब यह निहायत प्रसिद्ध दोहा—

सभी भूमी गोपाल की, या में अटक कहा।
जाके मनमें अटक है, वोही अटक रहा॥

कहते हुए सब से पहले अपना घोड़ा अटक में कुदा कर और अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए पार हो गये। आज यह बात असम्भव सी प्रतीत होती है मगर नहीं हम को ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं कि परमात्मा ने अपने प्रेमी भक्तों की हर समय सहायता की है केवल पूर्ण विश्वास होना चाहिए। हमारे सरताज जयपुर नरेश उनही महाराजा **मानसिंहजी** और **जयसिंहजी** के वंश में हैं कि जिनको मुगल सम्राटों ने उन के साहस और वीरता से प्रसन्न होकर पञ्जहज़ारी, हफ्तहज़ारी और अमीरुलउमरा इत्यादि उच्चपदवियां प्रदान की थीं, और माही मरातिब वगैरह लवाज़मा देकर मान बढ़ाया था। हमारे महाराज ने उनहीं महाराज **सवाई जयसिंहजी** के वंश में जन्म लिया है कि जिनको ज्योतिष शास्त्र का प्रेम ही न था किन्तु जो उस शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान् भी थे और यूरोप की पश्चिमी सल्तनत पुर्तगाल के विद्वानों ने जिनको इस कठिन शास्त्र का पूर्ण उस्ताद माना था। महाराज सवाई **जयसिंहजी** के बनवाये हुए यन्त्र जयपुर, काशी, देहली उज्जैन आदी स्थानों में आजभी अनुपम विद्वत्तातथा कलाकौशल का परिचय दे रहे हैं। शहर जयपुर भी महाराजा सवाई जयसिंहजी की बुद्धिमानी का एक ही नमूना है।

यूरोप निवासी तो इस जयनगर को इसकी सुन्दरता के कारण हिन्दुस्तान का पैरिस कहते हैं। आप उनही महाराज रामसिंहजी के उत्तराधिकारी हैं कि जो प्रत्येक इल्म और हुनर के पूरे कद्रदान थे। वह स्वभाव के गम्भीर दूरदर्शी मिष्टभाषी और अत्यन्त बुद्धिमान् थे। उन्होंने अपनी प्रजाके सुखके लिए रियासत में अनेक उत्तमकार्य किए और वह शहर जयपुर को और भी सुन्दर बनाने के वास्ते कई तरह के तरीके काममें लाए।

हमारे श्रीहुजूर महाराजा साहिब बहादुर ने ऐसे प्राचीन प्रसिद्ध तथा उच्च क्षत्रियवंश में शुभ मिती भादों बदि नवमी ९ सम्वत् १९१८ मुताबिक तारीख ३१ अगस्त सन् १८६१ ई. स्थान ईसरदा में जन्म लेकर और महाराज रामसिंहजी के वैकुण्ठ वासहोने पर पूर्वोक्त ठिकाने से गोद आकर ता. २९ सितम्बर सन १८८० ई. को राज जयपुर के राज्य सिंहासन को सुशोभित किया और उस समय से अबतक धर्ममार्ग में स्थित रहतेहुए जो कर्तव्य पालन किया है वह विश्व में विख्यात है। आप भी रघुकुलके प्राचीन प्रसिद्ध पूर्वजों के समान एकही मर्यादा पालन करने वाले हैं। आपने भक्ति के चारों अङ्ग पितृभक्ति, गुरुभक्ति, ईश्वर भक्ति और राजभक्ति का भलीप्रकार पालन किया है। वर्तमान समयमें आपके सदृश राजभक्त तथा ईश्वरभक्त बहुत कम राजा नज़र आते हैं। सरकार गवर्मेन्टने भी आपके अटल राजभक्ति और सुप्रबन्ध से प्रसन्न होकर आपको समय २ पर अनेक उपाधियों से विभूषित कियाहै। इसही कारण

से जब आपके गद्दी पर विराजे केवल आठ ही वर्ष का समय व्यतीत हुआ था और पूर्ण अधिकार मिले तो केवल ६ छै ही वर्ष व्यतीत हुएथे कि आपकी सुपरिपाटी से सन्तुष्ट होकर गवर्मेन्टने आपको जी. सी. एस. आई. की पदवी से विभूषित किया । दुर्भिक्ष के समय आपने अपनी प्रजा के लिए बहुत द्रव्य खर्च करके अनाज इत्यादि का प्रशंसनीय प्रबन्ध किया । और सम्पूर्ण भारतवर्ष के अनाथों की सहायता के लिए प्रथम आपही ने १६००००० लाख रुपया प्रदान करके इन्डियन पीपिल्स फ़ेमीन फ़न्ड क़ायम फ़रमाया । और ग़रीबों की सहायता के ख़याल से कई प्रकार के अन्य उत्तम कार्यों में भी बहुत द्रव्य ख़र्च किया जिससे प्रसन्न होकर गवर्मेन्ट ने आपको जी. सी. आई. ई. की पदवी से संमानित किया । दरबार ताजपोशी दहली के समय जो सन् १९०३ में हुआ था आपको एक और भी उच्चपदवी जी. सी. वी. ओ. से संमानित कियागया । सन् १९०४ ई. के दूसरे दरबार दहली में आप रेजिमेंट नम्बर १३ राजपूत इन्फेन्टरी के आनरेरी कर्नल नियत फ़रमायेगए । सन् १९०८ ई. में ऐडिन्बरा यूनीवर्सिटी ने शिक्षाके सुप्रबन्ध और गुणग्राहकता से प्रसन्न होकर आपकी अनुपस्थिति में ही एल. एल. डी. की डिगरी प्रदान की । दरबार ताजपोशी दहली सन् १९११ ई. में आपको मेजर जनरल का ख़िताब दियागया । इस ख़िताब का मिलना आपके कुल के ख़याल से नई बात नहीं थी क्योंकि आपके पूर्वजोंने भी मुग़ल बादशाहों

से इसही प्रकार बड़ी बड़ी उच्च पदवियां प्राप्त की थी ।

सन् १९१२ में आप आर्डर आफ़ दी हास्पिटल आफ़ सेन्टजान आफ़ जेरुसलम के डोनेट बनाये गए । यूरोप के घोर संग्राम में आपने अनेकप्रकार से गवर्मेन्ट की पूरी सहायता की जिससे प्रसन्न होकर गवर्मेन्ट ने आप को जी. सी. ई. की पदवी से सुशोभित किया । सन् १८९७ में जङ्ग चित्राल में गवर्मेन्ट की सहायता के वास्ते आपने अपनी ट्रैन्सपोर्टकोर को भिजवाया और उसने लड़ाई में ऐसे प्रशंसनीय कार्य किए कि जिसके बदले में आपकी सलामी की २ तोपें बढादीं जिस से १७ के स्थानमें १९ होगईं ।

सन् १८९८ में आपने टीरा के युद्ध में गवर्मेन्ट की सहायता की जिससे प्रसन्न होकर सलामी की २ तोपें और भी बढादीं जिससे १९ के स्थान पर २१ होगईं । और सन् १९२० में अङ्गरेज़ी फ़ौज के आप आनरेरी लेफ़टिनेन्ट जनरल बनायेगए ।

हमारे महाराज साहिब को प्रजाके सुख और पालन पोषण का सदैव पूर्ण ध्यान रहता है । ग़रीब दुखियों की सहायता करना आप राजधर्म का मुख्य अङ्ग मानते हैं । इस समय तक आपने दिलखोलकर जिन कार्यों में रुपया ख़र्च किया है उससे सिद्ध होता है कि चार बातोंका विचार आपको हर समय रहता है, प्रथम दान पुण्य और अनाथों की सहायता दूसरे गुणवानों का संमान तथा विद्याकी उन्नति तीसरे सहानुभूति तथा गवर्मेन्टकी ख़ैरख़्वाही चौथे प्रजाके

हितकारी उपाय ।

(१) जैसा कि हम ऊपर लिखचुके हैं भारतवर्ष-व्यापी दुर्भिक्ष के समय जो फ़ण्ड अनाथों की सहायता के लिए खोलागया है वह आपही की उदारता का पूर्ण परिचय है । आपने शुरुही में इसके वास्ते १६००००० रुपये प्रदान किये थे । उसके पीछे भी कई दफ़ा बहुतसा रु० इस फ़ण्ड में आप देतेरहे हैं । इस समय २५००००० लाख रुपया केवल आपही का प्रदान कियाहुआ इस फ़ण्ड में मौजूद है । इसके सिवाय दूसरे दान पुण्य के कार्यों में जो रुपया ख़र्च हुआहै उसकी कुल तादाद २९००००० लाख रुपये से भी अधिक है इङ्गलिस्तान में भी इसही प्रकार के पुण्य कार्यों के लिए आप बहुत रुपया भिजवाचुके हैं और रियासत की आमदनी का तीसरा हिस्सा पहलेकी तरह दान पुण्य में बराबर ख़र्च होरहा है । हर साल लाखों ब्राह्मणों को भोजन करायाजाता है । और बाहरके तीर्थस्थानों पर आप स्वयं पधारकर या यहां से राजकर्मचारियों को भेजकर पुण्य दान और सत्कर्म में बहुत ख़र्च कियाकरते हैं ।

(२) राज जयपुर में शिक्षा और कलाविज्ञान आदिका जैसा सुप्रबन्ध है वैसा प्रायः अन्य रियासतों में नहीं पाया-जाता है । महाराजा कालेज, गर्लस्कूल, स्कूल आफ़ आर्ट्स, पब्लिक लाईब्रेरी और संस्कृतकालेज वग़ैरह आदि से राज्य जयपुर केही नहीं किन्तु अन्यान्य प्रान्तनिवासी भी हरसमय पूर्णलाभ उठारहे हैं और उसमें भी यह विशेषता है कि छात्रों से किसी प्रकारकी फ़ीस नहीं लीजाती है बल्कि पढनेवाले विद्यार्थियों को वज़ीफ़ा दियाजाता है ।

विद्याकी उन्नति के लिए भारतवर्ष में प्रायः जहां कहीं भी ज़रूरत पेश आई है आपने द्रव्य देकर पूर्ण सहायता की है जिसकी तादाद अवतक ६१४२२३) रुपया होती है।

(३) ब्रिटिश गवर्मेन्ट के आप सच्चे हितैषी हैं। समय २ पर पूर्ण सहायता देकर आपने अपने अनुपम प्रेम का पूरा परिचय दिया है।

सन् १८८९ में आपने इम्पीरियल सर्विस ट्रान्सपोर्ट को खास गवर्मेन्ट की सहायता के लिए नियत की है जिसने चित्राल, टीरा और यूरोप के घोर संग्राम में बड़े २ कठिन कार्य संपादन किए हैं। आपने चित्राल की लड़ाई के समय १०००००) रुपया नक़द प्रदान कर आर्थिक सहायता भी पहुंचाई है। लड़ाई के समयों में आपने जो आर्थिक सहायता अवतक कीहै उसकी तादाद १६६७४१७) लाख रुपया होती है।

(४) प्रजाका सुधार और उसके सुख के लिए आपने जो जो कार्य किए हैं वे प्रायः सर्वत्र विख्यात हैं।

हमारे महाराज साहिब को भगवद्भक्ति में हर समय पूर्ण प्रेम है। प्रातःकाल सब से पहिले आप अपने इष्टदेव श्रीगोपालजी महाराज और श्रीगङ्गामहाराणी के दर्शन करते हैं। इसके अनन्तर गौ के दर्शन कर फिर राजकार्य में तत्पर होते हैं। यौंतो प्रायः आपको हिन्दुओं के संपूर्ण देवताओं परही पूर्ण विश्वास है परन्तु खासतौर पर श्रीगोपालजी महाराज व तरणतारिणी श्रीगङ्गामहाराणी के तो आप अनन्यभक्त हैं और उनही को अपने इष्टदेव मानते हैं। आप सदा गङ्गाजल का ही पान कियाकरते हैं। जहां कहीं बाहर पधारते हैं तो अपने इष्टदेव को भी साथही

रखते हैं। आपने एक बहुत बड़ा मन्दिर **वृन्दावन** में और दूसरा **बरसाने** में बनवाया है और श्रीगङ्गास्नान के लिए वर्ष में एक समय तो जहांतक होसकता है अवश्यही पधारते हैं। **गङ्गोत्री** में एक मन्दिर बहुत उत्तम बनाया-जारहा है। मगर हमारे महाराज साहिब का सबसे बड़ा काम जिसमें ईश्वरभक्ति और राजभक्तिका पूरा ब्यौरा मिलताहै यूरोपयात्रा है जिसका संक्षिप्त वर्णन सर्व साधारण के हितार्थ यहां पर कियाजाता है।

(नम्बर २)

सम्राट् सप्तम ऐडवर्ड की ताजपोशी में शामिल होनेका निमन्त्रण और यूरोपयात्रा का प्रबन्ध।

महाराणी क्विन विक्टोरिया के सन् १९०१ में वैकुण्ठवास होने पर ता. २६ जून सन् १९०२ **सम्राट् ऐडवर्ड** सप्तम की ताजपोशी के वास्ते मुकर्रिर कीगई। और उसमें शामिल होने के लिए हिन्दुस्तान के बड़े २ राजा महाराजाओं को और रईसों को सम्राट् की ओरसे निमन्त्रित कियागया। इसही विषय में ता. ७ अक्टूबर सन् १९०१ को गवर्मेन्ट हिन्दुस्तान की तरफ़ से एक ख़रीता श्रीदरबार के नाम आया जिसमें यह दर्ज था।

॥ तर्जुमा ख़रीता ॥

लिखजानिब आनरेबिल कर्नल ए. बी. **थार्नटन** साहिब बहादुर एजेन्ट गवरनर-जनरल रियासतहाय राजपूताना बना-म नामी हिज़हाईनेस महाराज सर सवाई **माधवसिंहजी**

बहादुर जी. सी. ऐस. आई., जी. सी. आई. ई., वालिए रियासत जयपुर, अज़ मुक़ाम कोहे आबू, मरकूमा ता. ७ अक्टूबर सन् १९०१।

मेरे ज़ीशान और मोअज़्ज़िज़ दोस्त!

"जनाब हुज़ूर वाइसराय गवर्नर-जनरल बहादुर किशवरे हिन्द ने आपको यह सूचना देने के लिए मुझे आज्ञा प्रदान कीहै कि श्रीमान् जनाब बादशाह इङ्गलिस्तान व सम्राट् हिन्दुस्तान की आज्ञानुसार वह आप के पास संदेशा भेजते हैं कि श्रीमान् सम्राट् महोदयके राजतिलक के उत्सव में जो जून सन् १९०२ में शहर लन्दन में मनायाजायगा शामिल हों।

सम्राट् की इस आज्ञा का उत्तर आपके पाससे आने पर जनाब हुज़ूर वाइसराय गवर्नर-जनरल बहादुर की सेवा में भेजदिया जावेगा। मेरा हार्दिक धन्यवाद स्वीकार करते हुए आप मुझको अपना सच्चा मित्र समझें"।

इस सूचना के मिलने पर श्रीदरबार को बहुत आनन्द हुआ और आपने ताजपोशी में शामिल होने के निमंत्रण को सहर्ष स्वीकार करलिया। इसके बाद इस आनन्द की सूचना खुले तौर पर ज़ाहिर करने के लिए ता. १० अक्टूबर सन् १९०१ को दीवानखाने आम में दरबार फ़रमाया और उसमें साहिब रजिडेन्ट बहादुर ने निम्नलिखित स्पीच दी।

स्पीच मिस्टर काब साहिब बहादुर रजिडेंट जयपुर

जनाब महाराज साहिब बहादुर, और हाज़रीन दरबार!

"आज आपको इस दरबार आम में यह खुशखबरी सुनातेहुए मुझे खुशी हासिल होती है कि जनाब शाहनशाह

ऐडवर्ड सप्तम ने आपको आगामी जून में विलायत आनेके लिए और उत्सव ताजपोशी में शामिल होने के लिए आज्ञा फ़रमाई है। आपको फ़रमान शाही देते वक्त मैं यक़ीन करताहूँ कि मुझको इजाज़त फ़रमाई जायगी कि इस नये नादिर ऐज़ाज़ और भरोसे के बाबत कि जो गवर्मेन्ट और शाहनशाह इङ्गलिस्तान ने आपके निस्बत ज़ाहिर फ़रमाया है खुद अपनी तरफ़से और आपकी तमाम रिआया की तरफ़से आपको मुबारिकबाद दूँ। मैं सच्चे दिल से यक़ीन करताहूँ कि आपका दरयाई सफ़र जो आपको फ़रमान शाही की तामील में करना ज़रूरी है खैरियत और कामयाबी के साथ अंजाम को पहुँचे"।

इसके जवाब में श्रीदरबार की ओर से निम्नलिखित स्पीच फ़रमाईगई—

मिस्टर काब साहिब व जैन्टिलमैन!

"जिस खुशी का ऐलान इसवक्त दरबार में कियागया है वह हमेशाके लिए इस रियासत की तारीख में क़ाबिल यादगार रहेगा। तवारीख से साबित है कि मुग़लिया सल्तनत के ज़माने में भी तामील फ़रमान शाही में वालियान रियासत जयपुर हमेशा मुस्तैद रहे हैं। गो जयपुर से दूर दुश्मनों और मुखालिफों के मुल्क में जाने के लिए भी हुक्म क्यों न हुआहो कि जहां सब तरह से जान का खतरा है। आज का फ़रमान हमारे बादशाह की तरफ़ से और ही तरह का है और मुताबिक़ शानदौलत इङ्गलिस्तान के अमन अमान पर मबनी है अगले ज़माने में जिस गरम जोशी से मेरे बुज़ुर्ग अहकाम शाही बजालाते रहे हैं

इसही तरह मैं भी अपने बादशाह आलीमुक़ाम का हुक्म. ख़ुशी और फ़रहत के साथ बजालाऊँगा। जिस जशने मुबारिक में शामिल होने के लिए मुझको हुक्म फ़रमायागया है उसमें मैं अपनी ज़ात ख़ास से यह दिखलाने की उम्मीद करताहूँ कि गवर्मेन्ट इङ्गलीशिया के साथ रियासत जयपुर की ख़ैरख्वाही किस आला मरतबे की है। इस पैग़ाम शाही पहुंचाने के बाबत मैं अपनी तरफ़ से और अपनी रियासत की तरफ़ से गवर्मेन्ट के क़ायम मुक़ाम मिस्टर काब साहिब बहादुर का शुकरिया अदा करता हूँ।"

इस दरबार के बाद सफ़र के इन्तज़ाम शुरू कियेगए। मगर यूरोप का सफ़र करने में धर्म के आचार विचार सहमत न थे। इस चिन्ता को मिटाने के वास्ते श्रीहुज़ूर साहिब ने अपने राज्य के विद्वान् पण्डितों को एकत्र करके यह आज्ञा दी कि कोई प्रमाण इसप्रकार का बतलाया जाय जिससे समुद्र पार करके यूरोप जासकें। और सम्राट् की ताजपोशी में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त करसके। और साथ ही धर्म के विरुद्ध कोई कार्य भी न होने पावे। देखने में तो यह सवाल बहुत पेचदार मालूम होता था क्यों कि हिन्दूधर्मशास्त्र में कालापानी या समुद्रयात्रा की आज्ञा नहीं है। मगर हुज़ूर साहिब के हुक्म से पण्डितों ने इस विषय में विचार किया। और धर्मपुस्तकों के अनुसार यह सम्मति प्रगट की कि यदि अन्नदाताजी अपने इष्टदेव श्रीगोपालजी महाराज के साथ सफ़र में तशरीफ़ लेजाँय और सिवाय उनके प्रसाद के दूसरा भोजन न पावें तो धर्म में किसी प्रकार की हानि नहीं होसक्ती। मगर

इसके साथ ही यह बात भी विचारने योग्य थी कि जिन जहाज़ों में गोहत्या होती है और जिनमें अनेक प्रकार के मांस मदिरा का इस्तैमाल कियाजाता है उनमें **श्रीठाकुरजी** महाराज को लेजाना कैसे उचित होसक्ता है। मगर परमात्मा की कृपा से यह कठिनाई भी जल्द दूर होगई । राज के कर्मचारियों ने मैसर्स टामस कुक ऐन्ड सन्स मुक़ाम बम्बई के एजेन्टों की मारफ़त एक ऐसा जहाज़ तलाश किया जो उस समय बिलकुल नया तैय्यार हुआ था। इस जहाज़ का नाम **"ऑस. ऑस. ओलिम्पिया"** था। इसको अपनी आवश्यकता के अनुसार तैय्यार कराने के वास्ते **श्रीहुजूर** साहिब ने चन्द अहलकारों और ओहदेदारों को बन्दरगाह बम्बई को रवाना किए जिन्हों ने उसको बहुत जल्द महाराज साहिब की इच्छानुसार दुरुस्त करालिया। महाराज साहिब बहादुर और उनके अनुचरों की संख्या क़रीब १२५ के थी जिस की तफ़सील हस्ब ज़ेल हैः—

(१) हिज़हाईनैस श्रीहुजूर पुरनूर महाराज साहिब बहादुर.

(२) पुजारी बिहारीदासजी ।
(३) ठाकुर देवीसिंहजी चौमूं ।
(४) रावराजा माधवसिंहजी सीकर ।
(५) राजा उदयसिंहजी ।
(६) बाबू संसारचन्द्रजी सैन, चीफ़ मैम्बर, कौन्सिल ।
(७) बख़्शी हरीसिंहजी ।
(८) ठाकुर पृथ्वीसिंहजी ।
(९) ,, अमरसिंहजी ।

पं. मधुसूदनजी. बा. अविनाश चन्द्रजी. मो. गुलाम रहमानजी.
कर्नल जेकब साहिब. श्री हुजूर महाराज साहिब. बा. संसारचन्द्रजी.
खवास राम कुमारजी. खवास बालाबखशजी. रघुनाथजी कपतान.

(१०) खवास वालावख्शजी ।
(११) बाबू अविनाशचन्द्रजी ।
(१२) खवास रामकुमारजी ।
(१३) डाक्टर हेमचन्द्रजी सैन ।
(१४) ,, दलजङ्गसिंहजी खांका ।
(१५) पण्डित मधुसूदनजी ओझा ।
(१६) सेठ रामनाथजी ।
(१७) लाला राधाकृष्णजी ।
(१८) नाज़र खुशनज़रजी ।
(१९) कर्नल सर ऐस. ऐस. जैकब साहिब ।
(जो बतोर पोलीटिकैल एजेन्ट के तशरीफ़ लेगये थे)
(२०) लैडी जैकब ।
(२१) मिसिस स्कैलिटन ।
(२२) मिस स्कैलिटन ।
(२३) मुलाज़िमान व शागिर्दपेशा १०३ ।

राय बहादुर धनपतरायजी सुपरिन्टैन्डैन्ट ट्रान्सपोर्ट कोर को श्रीदरबार ने उनके चार मुलाज़िमों सहित तारीख ३ मई को ही इस ख़याल से पहिले से रवाना करदिया था कि वह विलायत पहुंचकर दरबार के तशरीफ़ लेजाने से पहिले ज़रूरी इन्तज़ाम करलें। साथवालों के वास्ते जहाज में हर एक के दर्जे के मुताबिक़ जुदा २ इन्तज़ाम करदिये थे। उसमें छै रसोई और बनवा दीगई थीं। जिनमें **एक** श्रीठाकुरजी के लिए, **दूसरी** श्री अन्नदाताजी के वास्ते, **तीसरी** ताज़ीमी सरदारों के लिए, **चौथी** पं. मधुसूदनजी के लिए, **पांचवीं** साथवाले ब्राह्मणों के लिए, **छठी**

शागिर्दपेशों के लिए। सामूली गुसलखानों के अलावा चार नये गुसलखाने और बनवाये गए थे। एक हौज़ बहुत बड़ा पानी भरने के वास्ते तैय्यार कराया गया था। इन तमाम इन्तज़ामात के होजाने के बाद एक कर्मचारी बम्बई खास इसवास्ते भिजवाया गया कि वह जहाज़ को धुलवा कर पूरी तौर पर सफ़ाई करादे। उसके साथ २५ ब्राह्मण जहाज़ धोने के लिए भिजवाये गये थे। कुल साथवालों के वास्तै इस क़दर श्रीगङ्गाजल साथ लेजाने का बन्दोबस्त किया था कि जो पूरे छै महीने के लिए काफ़ी था। खाने का सामान मिस्ल चांवल, आटा, घी वग़ैरा भी काफी तौर पर जहाज़ में रखदिया गया था। और यह इन्तज़ाम कियागया था कि विलायत पहुंचने पर खाने पीने की और चीज़ें हिन्दुस्तान से हफ्तेवार पहुंचती रहें। हाथ धोने की मिट्टी भी हिन्दुस्तान से साथ लेली गई थी। जहाज के मालिक से एक दस्तावेज़ लिखवाली थी कि जबतक वह जहाज़ श्रीहुज़ूर साहिब के सफ़र में रहे उसमें ऐसी वस्तुयें काम में न लाई जाँय कि जो हिन्दुधर्म में वर्जनीय हों। उस जहाज़ का किराया डेढ लाख रुपया स्थिर किया गया था। श्रीहुज़ूर साहिब के साथ तीस लाख रुपये का जड़ाऊ ज़ेवर गया था। उसका बीमा ४५ हज़ार पौण्ड में करालिया गया था। और पन्द्रह लाख रुपये टामस कुक ऐण्ड सन्स की प्रसिद्ध कम्पनी के पास सिर्फ़ इसलिए जमा करादिए गये थे कि सफर में जब कभी कोई ग़ैर मामूली ज़रूरत पेश आजावे तो वह रुपया लिया जासके। इस सफ़र का क़रीब कुल इन्तज़ाम इसही कम्पनी के सुपुर्द था।

कर्नेल एस. एस. जेकब साहिब.

ता. ५ मई सन् १९०२ । इस तारीख़ को जयपुर से प्रथम स्पेशल रवाना हुई जिसमें रेल की आठ गाडियां भर कर सफ़र का सामान भिजवाया गया था जिसका कुल वज़न दो हज़ार मन था । यह ट्रेन ज़ेर निगरानी रामप्रतापजी मुन्सरिम भिजवाई गई थी ।

ता. ६ मई । प्रस्थान किया गया ।

ता. ७ मई । को कोई लिखने योग्य वृत्तान्त नहीं हुआ ।

ता. ८ मई । इस तारीख़ को ९॥ साढे नो बजे रातको दूसरी स्पेशल रवाना हुई जिसमें राजा उदयसिंहजी, रावराजाजी सीकर और ठाकुर साहिब चौमूं मय ३० तीस शागिर्दपेशों के बम्बई तशरीफ़ लेगए ।

(नम्बर ३)

जयपुर से रवानगी ।

ता. ९ मई । श्रीहुज़ूर साहिब ने उस दिन सब से पेशतर रियासत के बड़े कर्मचारी नवाब फ़ैय्याज़अलीखांजी, ठाकुर उमरावसिंहजी कोटला, बाबू संसारचन्द्रजी, मीर-मुन्शी रामजीदासजी, पण्डित लक्ष्मीनारायणजी, पुरोहित गोपीनाथजी एम. ए., बाबू मोतीलालजी गुप्ता, प्राईवेट-सेक्रेटरी, गौरीशङ्करजी चेला, और ख़ुशनज़रजी नादर आदि को बुलाकर अपने पीछे से ड्योढी व राज्य के इन्तज़ाम करने के विषय में ज़रूरी हुकम दिया । कौन्सिल से इसही सम्बन्ध में ख़ास रोबकार जारी कियागया । उसके बाद क़रीब २ बजे तक श्रीदरबार दूसरे कामों में लगे रहे । फिर मज़हबी रसूमात शुरू कीगई । और रातको क़रीब

८।। बजे पूजन और दूसरे कामों से फुरसत पाकर सिरेह-ड्योढी दरवाज़े से यूरोपयात्रा के लिए सवारी बाहर पधारी। और उसही समय २५ तोप सलामी की नाहरगढ के क़िले से चलाई गई। सांगानेर दरवाज़े होकर सवारी हथरोही की कोठी में दाखिल हुई। उस रातको शहर में रिआया का हुजूम होरहा था। मर्द, औरत, बूढे, जवान सभी अपने महाराजाधिराज श्रीअन्नदाताजी के दर्शनों के वास्ते सड़क पर, दूकानों में, मकानों की छतोंपर, हर जगह ठठ के ठठ खड़े नज़र आते थे। ताज़ीमी सरदार और हुक्काम रियासत पहिले से स्टेशन पर पहुंच गए थे। श्रीहुज़ूर साहिब के विराजने के कुछ देर बाद ११ बज कर ४५ मिनट पर स्पैशल ट्रेन जयपुर से रवाना हुई।

ता॰ १० मई। जब स्पेशल स्टेशन **मारवाड़ जङ्क्शन** पर पहुंची तो वहां पण्डित सुखदेवप्रसादजी मुसाहिब आला राज जोधपुर और दूसरे सरदार व ओहदेदार आदि मौजूद थे। स्पेशल जोधपुर बीकानेर रेल्वे प्लेटफार्म पर खड़ी करदी गई। और ओहदेदारान् रियासत ने श्रीहुज़ूर साहिब की नज़रें कीं। फिर दरबार तामझाम में सवार होकर एक बङ्गले में तशरीफ़ लेगए जो ख़ास तौर पर रियासत की तरफ़ से हुज़ूर साहिब के ठहरने के वास्ते तैयार किया था और उसमें ख़श की टट्टी और पङ्खों वग़ैरह का ऐसा अच्छा इन्तज़ाम था कि गर्मी नाम को नहीं मालूम होती थी। और हमराही डेरों में ठहरे रहे। सरबराह का तमाम इन्तज़ाम रियासत जोधपुर की तरफ़ से कियागया था। सन्ध्याआरती के बाद श्रीदरबार प्लेटफार्म स्टेशन पर तशरीफ़
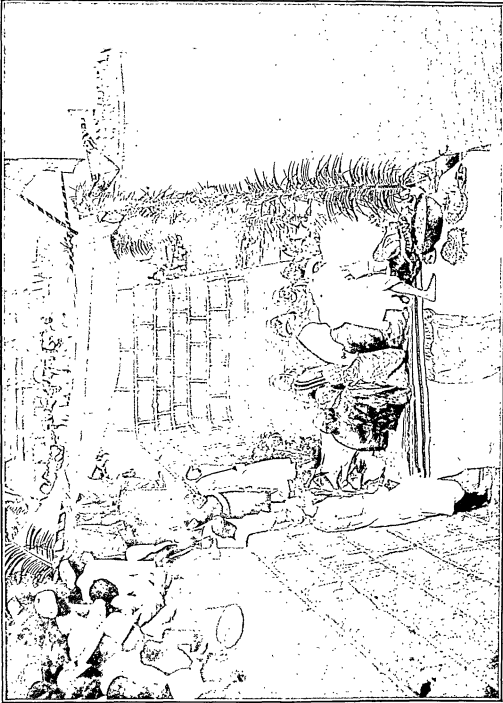
समुद्र पूजन.

ले आए। और कुछ देर के बाद मारवाड़ जङ्कशन से स्पेशल आगे रवाना हुई।

ता. ११ मई। क़रीब ८॥ साढे आठ बजे सुबह स्पेशल **अहमदाबाद** पहुंची। आधे घण्टे स्टेशन पर ठहरने के बाद सवारी शहर में दाख़िल हुई। दरबार व उनके हमराहियान् ने जयसिंह भाई धारा की कोठी में क़याम किया जो अहमदाबाद के मशहूर नगरसेठ थे। सरबराह का इन्तज़ाम **महारानी भालीजी** साहिबा के कामदारजी की ओरसे कियागयां था। शहर अहमदाबाद भी देखने योग्य बनाहुआ है। बाज़ार की सुन्दरता और व्यापार के ख़याल से उसको बम्बई का छोटा नमूना बतलाया जाता है। श्रीदरबार साढे सात बजे श्याम को स्टेशन अहमदाबाद पर तशरीफ़ लाए। वहां से स्पेशल आठ बज कर दश मिनट पर आगे रवाना होगई। **लखूदरा** स्टेशन पर ट्रेन ग्यारह बजे रात को पहुंची और वहां क़रीब एक घण्टे ठहरने के बाद बंबई रवाना हुई।

ता. १२ मई। स्पेशल आठ बजे बाद **कुलाबा स्टेशन** पर पहुंची। उसही समय सलामी की तोपें चलनी शुरू हुई। हरतरफ़ दरबार के विलायत पधारने की धूम मची हुई थी। प्लेटफ़ार्म पर आदमियों का हजूम होरहा था। रज़िडेन्ट काब साहिब, रावराजा माधवसिंहजी सीकर, ठाकुर देवीसिंहजी चौमूं, राजा उदयसिंहजी, पण्डित जयनाथजी अटल, खेमराज श्रीकृष्णदास प्रोप्राईटर श्रीव्येङ्कटेश्वर समाचार, नौरौजी धनजी भाई प्रोप्राईटर थियेट्रीकल कम्पनी और बहुतसे सेठ साहूकार वहां मौजूद थे। सेठ साहूकारों

ने डालियां पेश कीं। उसके बाद दरबार दूसरी पोशाक धारण फ़रमाकर रजिडैन्ट काब साहिब के साथ अपालो बन्दर की ओर रवाना होगए। और दूसरे साथवाले भी वहां पहुंचगए। व्येङ्कटेश्वर प्रेस के एक पण्डित ने श्रीहुजूर साहिब की सेवा में सम्मानपत्र पेश किया। जिसमें क़रीब आधा घण्टा ख़र्च हुआ। वहां भी आदमियों का बहुत हुजूम था। ग़ुल शोर के कारण कान पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं देती थी। डाक्टर ने दरबार के साथ वालों की परीक्षा की। और फिर जहाज़में सवार होने का पास दिया। इसके बाद श्रीहुज़ूर साहिब ने विधिपूर्वक **समुद्र का पूजन** किया यह पूजन ठीक उसही विधि से कियागया था कि जिस तरह श्रीरामचन्द्रजी महाराज ने त्रेता युग में सेतुबंध पर किया था। ख़ालिस सोने और चांदी के कलश सच्चे मोतियों की मालाएं और बहुमूल्य वस्त्र समुद्र की भेट किए। हज़ारों सेठ साहूकार नौकाओं में सवार होकर पहिले से समुद्र में इस पूजन को देखने के लिए चलेगए थे। पूजन के बाद जब श्रीदरबार ने समुद्र की आरती उतारी वह दृश्य भी देखने योग्य था। हर एक मनुष्य आश्चर्य में खड़ाहुआ प्रेमाश्रु बहारहा था। श्रीदरबार के दर्शनों से किसी काभी जी नहीं भरता था। इसही प्रकार जहाज़ का पूजन करके उसकी भी शुद्धि की गई।

(नम्बर ४) बम्बई से रवानगी।

(अरब का समुद्र)

जब जहाज़ बंबई से रवाना हुआ सम्पूर्ण मनुष्य जहाज के तख्ते पर खडे हुए प्रेमभरी निगाहों से अपने प्यारे देश की
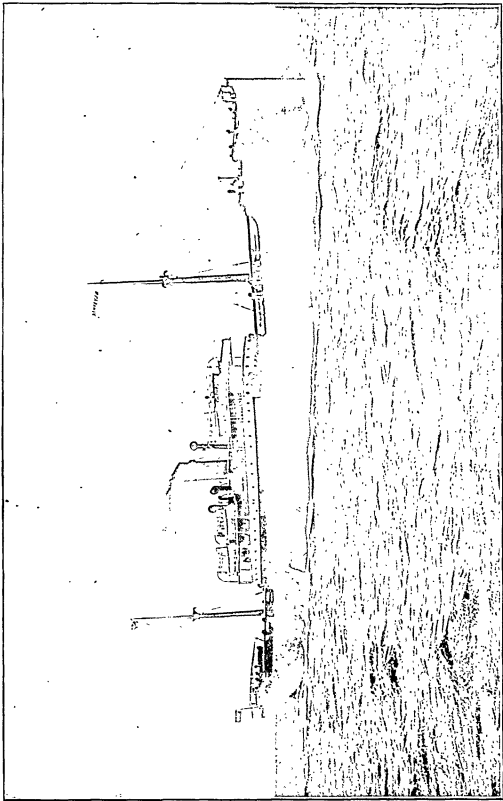
जहाज़ ओलिम्पिया.

ओर देख रहे थे गो निज देश की जुदाई हरएक मनुष्य को भली नहीं मालूम होती थी मगर जाने का शौक़ दिल में रञ्ज को आने नहीं देता था। इधर हमारे श्रीहुज़ूर महाराज साहिब बहादुर निहायत शान्ति के साथ कभी हिन्दुस्तान के किनारे की तरफ़ देखते थे और कभी अपार समुद्र की तरफ़ निगाह फैलाते थे। और इस विचार से उनके चित्त में प्रसन्नता पैदा होती थी कि वह भी अपने पूर्वजों के समान समुद्र पार करके अपनी अटल राजभक्ति की इच्छा सम्पूर्ण करने का अवसर पाकर इङ्गलिस्तान को पधार रहे थे। और इनके इष्टदेव श्रीगोपालजी महाराज आपके साथ थे।

प्रारम्भ में जहाज़ की चाल बहुत सुहावनी मालूम होती थी। समुद्र की अलबेली छटा और लहरों की अठखेलियां देखने से किसी का जी नहीं भरता था। जहाज़ चौदह नाट, या दो हज़ार गज़ फ़ी घण्टे के हिसाब से समुद्र में चला जारहा था। थोड़े समय के बाद ही हिन्दुस्तान का किनारा नज़रों से ग़ायब होगया और अब चारोंतरफ़ पानी ही पानी दीखपड़ने लगा। सिवाय सीगल (Seagull) (एक प्रकार के सामुद्रिक पक्षी) के कोई पक्षी भी उडता हुआ नज़र नहीं आता था सूर्य की किरणों से समुद्र में तरह २ के रङ्ग नज़र आते थे। और पानी में सुनहरी झलक बहुत प्यारी मालूम होती थी मगर सन्ध्या से कुछ पहिले बड़ी २ लहरें उठनी शुरू होगईं थीं जिनसे जहाज़ डगमगाने लगा कभी उछल कर लहरों के ऊपर बहुत ऊंचा उठजाता था और कभी एकदम नीचे गिरता मालूम होता था। पानी जहाज़ के तख़्तों से आकर टकराता था और हर तरफ़ समुद्र की लहरों ने बड़ा शोर मचा रखा था। यह दशा

उस रात्रि को बराबर बनी रही और समुद्र मनोहर के बजाय भयानक मालूम होने लगा। साथवालों को व्याकुल देखकर श्रीहुज़ूर साहिब ने बाबू संसारचन्द्रजी, पण्डित मधुसूदनजी, बाबू अविनाशचन्द्रजी को यह हाल पूछने के लिए कप्तान जहाज़ के पास भेजा कि उस तूफ़ान से जहाज़ को किसी प्रकार का नुक़सान होने का तो भय नहीं है। कप्तान जहाज़ ने इत्मीनान दिलाया कि उससे जहाज़ को कुछ नुक़सान नहीं पहुंच सकता। यह हाल मालूम होने पर साथवालों की कुछ चिन्ता दूर हुई मगर समुद्र में तूफ़ान बराबर बना रहा।

ता. १३ मई। श्रीहुज़ूर साहिब ने समुद्र के तूफ़ान का तमाशा देखा और उसे देखकर आप निहायत ख़ुश हुए। रात्रि को तूफ़ान में किसी क़दर कमी हुई मगर साथवालों में से प्रायः लोग समुद्र की बीमारी से पीड़ित हुए। किसी को कै होती थी, किसी का जी घबराता था। और हर एक मनुष्य का शिर चकराता था। डाक्टर साहब हरतरह पर तसल्ली देते थे मगर किसी को तसल्ली नहीं होती थी। जहाज़ बराबर अरब के समुद्र में पश्चिम की ओर बढ़ा चला जाता था। तजरुबे से मालूम हुआ कि सामुद्रीय रोग का असर उन लोगों पर कम होता है कि जो किसी बड़ी लहर के आते समय लेटे होते हैं। ख़ुशी का स्थान था कि हमारे श्री हुज़ूर साहिब पर इस रोग का प्रभाव नहीं पड़ा।

ता. १४ मई। श्रीहुज़ूर साहिब इस दिन ख़ूब प्रसन्न थे। आप रावराजाजी सीकर के डेरे में पधारे और वहां बैठ

कपतान आसवर्न साहिब ॥
(कपतान जहाज़.)

कर कुछ समय तक समुद्र की सैर फ़रमाई। एक छोटी देशी ढङ्ग की बनी हुई किश्ती दूर से दिखलाई दी। उसे देखकर हरएक को एक अजब तमाशा मालूम होता था। इस दिन तक जहाज़ क़रीब ४०० मील का सफ़र तै कर चुका था। एक दुख़ानी जहाज़ "कैलीडोनिया" नामी जिस में हिन्दुस्तान की डाक जारही थी दूर से आता हुआ दिखलाई दिया। सब से पहिले उसका ऊपरी भाग नज़र आया और धीरे २ उसका तमाम हिस्सा दीखने लगा। समुद्र में किसी दूसरे जहाज़ को दूर से आता हुआ देखना भी बहुत सुन्दर मालूम होता है।

ता. १५ मई। यह दिन भी बहुत प्रसन्नता से गुज़रा।

ता. १६ मई। महाराज साहिब कप्तान के कमरे में तशरीफ़ लेगये और वहां पर जहाज़ का वह नक़्शा मुलाहिज़ा फ़रमाया कि जिसमें समुद्र के किनारे चट्टान और जहाज़ इत्यादि का सम्पूर्ण वृत्तान्त उल्लिखित होता है। इसके पश्चात् जहाज़ के तमाम कल पुरज़े भी मुलाहिज़ा किए। इस रोज़ श्रीदरबार को भूख न लगने की कुछ शिकायत रही।

ता. १७ मई। इस दिन कोई विशेष बात लिखने के योग्य नहीं हुई सिवाय इसके कि जो हवा दो दिन से बहुत तीक्ष्ण बेग से और सामने की चल रही थी वह सांझ के समय ठहर गई और बहुत सुहावनी चलने लगी जिससे गरमी में बहुत कमी होगई।

ता. १८ मई। जहाज़ से क़रीब ११ बजे दिन के अरब के ख़ुश्क पहाड़ नज़र आने लगे जिनमें से बहुधा

आबू के पहाड़ के बराबर ऊंचे थे और समुद्र के किनारे के बराबर बराबर दूर तक फैले हुए थे। कभी २ बालूरेत के टीले भी नज़र आते थे जिन्हे देखकर हरशख्स खुश होता था। और तरह तरह के ख़याल ज़ाहिर करता था। यह पहाड़ चार बजे श्याम तक बराबर दीखते रहे। चूँकि अब **अदन** बहुत क़रीब रहगया था और दूसरे रोज़ सुबह जहाज़ वहां पहुँचने वाला था, सब साथ वालों ने अपने इष्टमित्रों और सम्बन्धियों को चिट्ठियां लिखीं ताकि अदन पहुँच कर हिन्दुस्तान रवाना करदी जावें। इस रात्रि को फिर बहुत गरमी रही जिससे किसी को नींद नहीं आई।

ता. १६ मई। इस रोज़ मौसम बहुत अच्छा था। हवा ठहरी हुई थी। समुद्र में लहरें अनुपम आनन्द दिखा रहीं थीं। अदन क़रीब आता जाता था यहां तक कि क़रीब १० बजे सुबह के जहाज़ **अदन** में दाख़िल होगया। जहाज़ के पहुँचने पर अदन के क़िले से २१ तोप सलामी की चलाई गईं। हुज़ूर साहिब अदन की सैर करने के लिए कप्तान जहाज़ के कमरे में तशरीफ़ लेगए। वहां पर टामस कुक के एजेन्ट ने एक छोटी किश्ती में आकर दो तार श्रीहुज़ूर की ख़िदमत में पेश किए। एक तो साहब एजेन्ट गवरनर-जनरल बहादुर राजपूताना का था और दूसरा प्राइवेट सेक्रेटरी बा. मोतीलालजी गुप्ता का था। एक चिट्ठी धनपतरायजी की राजा उदयसिंहजी के नाम थी जिसमें उन्हों ने अपने सफ़र अदन का हाल दरज किया था। इसही मुक़ाम पर जहाज़ के खेवटिया ने आकर श्रीहुज़ूर साहिब की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि एक जर्मनी का

जहाज़ जिस में सौदागरी माल था डूब गया । वह जहाज़ बम्बई से ता. १० मई को रवाना हुआ था और उसके यात्रियों में से क़रीब ११ यात्री तो किश्तियों की मदद से बचा लिए गये थे, बाक़ी ३२ यात्री समुद्र में डूब गए । इस हाल को सुन कर सब ने अफ़सोस व हमदर्दी ज़ाहिर की । उस जहाज़ के पीछे ही बम्बई से परशिया नामी डाक का जहाज़ रवाना हुआ था, जिस में महाराजा साहिब ग्वालियर तशरीफ़ लेजा रहे थे । वह भी इस तूफ़ान में आगया था मगर किसी क़दर नुक़सान के बाद सही सलामत बच निकला । यह हाल सुन कर सब ही को इस बात की ख़ुशी हुई कि श्री दरबार का जहाज़ "एस. एस. ओलिम्पिया" दो रोज़ पीछे रवाना हुआ कि जब तूफ़ान का ज़ोर कम हो चुका था । अदन में श्रीहुज़ूर साहिब के पहुंचने पर हर तरफ़ धूम मची हुई थी, हर मनुष्य जहाज़ "ओलिम्पिया" को आश्चर्य के साथ देखता था, जिसमें रङ्ग बरङ्ग के ख़ूब सूरत झण्डे फहरा रहे थे, और साथ वालों की ज़र्क़ बर्क़ पोशाकें श्रीदरबार का महत्व ज़ाहिर कर रहीं थीं । इधर साथ वालों की बहुत ज़ियादा तादाद देख कर बहुत से अदन निवासी यह ख़याल करते थे कि इस जहाज़ में किसी मुल्क का बादशाह जा रहा है, और इस ही लिए श्रीहुज़ूर साहिब की जानिब इशारा करके यह कहते सुनाई देते थे "दी किङ्ग, देयर इज़ दी किङ्ग" । अदन में सब से ज़ियादा मनोरञ्जक दृश्य वहां के छोटे बालकों की तैराकी व ग़ोते-ज़नी का होता है । यह सब प्रायः काले रङ्ग के होते हैं । समुद्र के पानी में जहां गहराई मील डेढ मील से कम नहीं होती

इन लड़कों के गिरोह के गिरोह इस तौर पर पानी में खड़े दिखलाई देते हैं मानों ज़मीन पर खड़े हैं। वह जहाज़ के यात्रियों से सवाल करते हैं और जब कोई सिक्का समुद्र में फेंक दिया जाता है तो तमाम बालक मेंडकों की तरह सर के बल गोता लगाते हैं और एक क्षण भर में दांतों से पकड़ कर उस सिक्के को बाहर निकाल लाते हैं और मुँह खोल कर दिखलाते हैं जिस में तमाम सिक्के जमा होते रहते हैं कारण यह है कि उन के शरीर पर कोई वस्त्र यहां तक कि लँगोटी भी नहीं होती जिसमें वह रख सकें। अदन मुल्क अरब से दक्षिण पश्चिम के मध्य कोण में स्थित है और यह ब्रिटिश गवर्मेन्ट का खास स्थान है और यही लाल समुद्र में दाख़िल होने का ख़ास दरवाज़ा है। यहां पर कोयला बहुत ज़ियादा जमा रखा जाता है कि उधर से गुज़रने वाले जहाज़ ले सकें। अदन का क़सबा एक रेगिस्तान में बसा हुआ है और उस ही पहाड़ियों पर बने-हुए अङ्गरेजों के बङ्गले बहुत खूबसूरत मालूम पड़ते हैं।

रैड सी (लाल समुद्र)।

जब "ओलिम्पिया" अदन से आगे रवाना हुआ तो श्रीहुज़ूर की सलामी में क़िले अदन से फिर २१ तोपें चलाई गईं। दरबार के इतने महत्व और सम्मान को देख कर कप्तान जहाज़ बहुत खुश हुआ कि वह हिन्दुस्तान के बहुत बड़े रईस को सम्राट की ताजपोशी में शरीक होने के लिए लेजा रहा था। रात्रि के समय जहाज़ पैरिम के टापू के पास होकर गुज़रा कि जो बावल मण्डब स्ट्रेट में है। बहुत समय पहिले बहुत जहाज़ इस

टापू के पास आकर डूब जाया करते थे मगर अब गवर्मेन्ट ने एक "लाइट हाउस" बनवा दिया है ताकि उस की रोशनी देख कर जहाज़ चट्टान से बच कर निकलें और टकरा कर नष्ट न हों। पैरिम से नहर सुयेज़ तक "रैड सी" के रास्ते में बहुत ज़ियादा गरमी रहती है और सूर्यभगवान् के ताप से समुद्र का पानी भी गरम होजाता है। इस ही लिए दरबार के तमाम साथ वाले यहां पर गरमी से बहुत बेचैन हो रहे थे। इस समुद्र में हर वक्त हवा भी तेज़ चलती रहती है इस लिए तूफ़ान हर समय बना रहता है मगर जहाज़ों को नुकसान नहीं पहुंचता। पैरिम से रवाना होने के बाद जहाज़ का रुख दक्षिण पश्चिम के कोण को छोड़कर पश्चिम उत्तर के कोण में होगया था।

ता. २० मई। ठण्डी हवा चलने से मनुष्यों को कुछ तसल्ली हुई। अब जहाज़ सीधा उत्तर की ओर जा रहा था। इस लिये सुबह के वक्त पूर्व की तर्फ के और तीसरे पहर को पश्चिम की तर्फ से परदे छिटकाये गए कि सूरज की गरमी से ताप न लगने पावे। पांच बजे शाम को हुज़ूर साहिब जहाज़ के तख्ते पर पधारे। समुद्र में फ़्लाइङ्ग फिश यानी उडने वाली मछलियां क़रीब चालीस २ गज़ दूर तक उड कर फिर पानी में ग़ोता लगाती थीं। इनका यह तमाशा भी देखने योग्य था। कुछ साथवालों ने ह्वेल मछली को भी इस ही समुद्र में देखा था। जहाज़ उस रोज़ २७० मील फ़ी २४ घण्टे के हिसाब से चलरहा था इस से अधिक तेज़ इस समय तक यह जहाज़ नहीं चला था। रास्ते में पांच छै सोदागरी जहाज़ मिले जो चीन व कलकत्ते

से दूसरे स्थानों को जारहे थे। रात को ९ बजे के क़रीब फिर तेज हवा चलने लगी जो सुबह के दो बजे बाद बन्द हुई।

ता. २१ मई। हवा फिर तेज़ चलने लगी। श्रीदरबार ने कुछ वक्त कर्नल जैकब साहिब व कप्तान आसबर्न साहिब के साथ शतरञ्ज खेलने में गुज़ारा। इस ही तरह और साथवाले भी दूसरे खेलों में या पुस्तकादि पढने में अपना वक्त काटने लगे। सुयेज़ तक हवा का वही हाल बनारहा।

ता. २२ मई। हवा की वह ही कैफियत रही। जहाज़ के डगमगाने से राजा उदयसिंहजी, सेठ रामनाथजी और कई अन्य साथ वालों को समुद्री बीमारी ने फिर आ दबाया।

ता. २३ मई। तेज़ हवा के चलने से और बड़ी २ लहरों को देखकर अकसर साथ वाले घबरा उठे थे। इस दिन मिश्र की डाक का जहाज़ पास होकर गुज़रा जो आस्ट्रेलिया को जारहा था। इस में खूब रोशनी हो रही थी। श्री हुज़ूर साहिब ने कप्तान के कमरे में तशरीफ़ लेजा कर वहां से "ब्रादर आईलेन्डस" की सैर फ़रमाई यह टापू मूंगे के बने हुए हैं। इन में से एक टापू पर लाइट हाउस बना हुआ है। जहाज़ के नम्बर ३ अफ़सर ने झण्डियां दिखलाईं ता कि लाइट हाउस पर रहनेवालों को उस जहाज़ के आने का हाल मालूम हो जाय लाइट हाउस से भी जवाब में झण्डियां दिखलाईं गईं। आधी रात के बाद तूफ़ान कम होगया।

ता. २४ मई। सुबह के वक्त से सुयेज का

किनारा दिखलाई देने लगा। जहाज़ के कप्तान ने तीसरे दर्जे के मुसाफ़िरों के कमरों को धुला कर साफ़ करादिया क्यों कि सुयेज़ में जहाज़ का डाक्टरी मुआइना होने वाला था। ६ बज कर कुछ मिनट के बाद जहाज़ सुयेज़ में दाख़िल हुआ। एक मिश्र के डाक्टर ने आकर जहाज़ का मुआइना किया। तमाम मुसाफ़िर सिवाय दर्जे अव्वल के मुसाफिरों के एक क़तार में खड़े कर दिये गए थे, और डाक्टर ने उन हर एक का अलाहिदा २ भी मुआइना किया। शाम को ७ बजे जहाज़ बन्दरगाह सुयेज़ से नहर सुयेज़ में दाख़िल होगया। नहर की गहराई तो ज़ियादा न थी मगर चौड़ाई इस क़दर थी कि बहुत बड़ा जङ्गी जहाज़ भी उसके अन्दर अच्छी तरह जा सकता था। पांच २ या छै २ मील के फ़ासले पर साइडिंग्स या स्टेशन बने हुये थे जहां नहर की चौड़ाई इतनी ज़ियादा रक्खी गई है कि दो तीन जहाज़ एक समय में लङ्गर डाल सक्ते हैं। जब जहाज़ नहर में क़रीब आधे मील दूर पहुंचा तो एक चौरस सितून पर बहुत बड़ी मूर्ति दिखलाई दी जो अपनी अंगुली से सुयेज़ कैनाल की ओर इशारा कर रही थी। यह मुल्क फ्रांन्स के उस मशहूर इञ्जीनियर की मूर्ति थी जिस ने नहर सुयेज तैयार कराई है। जहाज़ बराबर रोशनी में चल रहा था क्योंकि जहाज़ में समुद्र के किनारों पर खूब रोशनी हो रही थी। इधर चांदनी रात अपना आनन्द अलाहिदा ही दिखला रही थी। सब से बढ कर सर्च-लाइट की रोशनी ने वहां की सुन्दरता को दूना कर दिया था। दूर २ के स्थान बख़ूबी दिखलाई देते

थे। किनारों पर मकान और सुन्दर दरख़्तों के झुण्ड बहुत सुहावने मालूम होते थे। नहर में किसी जहाज़ को तेज़ चलने की इजाज़त नहीं होती है क्योंकि इस से किनारों से मिट्टी ठसक जाने का भय रहता है। जहाज़ ओलिम्पिया की रफ्तार भी पहिले से आधी करदी गई थी। नहर से सीधे हाथ की तरफ़ रेल्वे लाइन और तार की लाइन बराबर चली जाती हैं। नील नदी की शाख़ से एक बहुत छोटी नहर मीठे पानी की काट ली गई है जिस से जहाज़ के यात्री मीठा पानी पीने के काम में ले सकते हैं। यह रात अन्य रातों से ठण्डी रही।

ता. २५ मई। ११ बजे दो पहर के वक्त जहाज़ बन्दरगाह सईद में दाख़िल हुआ। साथ वालों को किनारे पर जाकर सैर करने की इजाज़त दे दी गई थी। यहां सौदागरी सामान के जहाज़ बेशुमार मौजूद थे। दुख़ानी किश्तियां और दूसरी तरह की किश्तियां हर तरफ़ मौजूद थीं। घोड़े गाड़ी और ट्राम्वे भी चलती नज़र आती थीं। यहां पर सवारी में ख़ास तौर पर ख़च्चर काम में आते हैं। अरब वालों की दूकानें और मकान बहुत ख़ूब सूरत मालूम होते थे। यहां पर भी डाक्टर ने सब यात्रियों का मुआइना किया। दरबार ने एक तार इस ही स्थान से टामस कुक के एजैन्ट के नाम मार्सलिस भिजवाया जिस में दरज था कि मुक़ाम मार्सलिस से कैले तक जाने के वास्ते एक स्पेशल का इन्तज़ाम करादिया जावे। सईद-बन्दरगाह में यूरोप की क़रीब २ तमाम क़ौमें-जर्मनी, रूसी, अङ्गरेज़ और फ़रांसीसी सब ही आबाद हैं। वहां की

पुलिस में ज़ियादा तर तुर्की हैं। जहाज़ ओलिम्पिया ने यहां पर कोयला भरा। साढे पांच बजे बाद शाम को जहाज़ वहां से रवाना होगया और मेडीट्रेनियन सी यानी बहरे रूम में दाख़िल होकर मार्सलिस की तरफ़ चलना शुरू कर दिया।

मेडीट्रेनियन सी।

बन्दरगाह सईद से रवाना होने के बाद ही जहाज़ ने डगमगाना शुरू कर दिया था। इस रोज़ सर्दी भी ज़ियादा मालूम होती थी। श्रीहुज़ूर साहिब सङ्गीत भवन (म्यूज़िक रूम) में विराजे हुए बात चीत फ़रमाते रहे।

ता. २६ मई। दरबार ने जहाज़ ओलिम्पिया का नक़शा मंगवा कर मुलाहिज़े फ़रमाया। इस के बाद फ्रान्सिस बटलर साहिब से उन की अठारह साला तजरुबे की बातें सुनते रहे। जीमन के बाद जब आप आराम फ़रमा रहे थे इस समय किसी आवाज़ से नींद उछट गई। तख्ते जहाज़ पर जाने से मालूम हुआ कि वह पिङ्गपाङ्ग टेबिल की आवाज़ थी जो हवा की तेज़ी से इधर उधर लुढक रही थी। फिर श्रीदरबार केबिन में पधारे और दीगर सरदारों को जगा कर तख्ते जहाज़ पर ले गए वहां बैठे हुए समुद्र की सैर फ़रमाते रहे। समुद्र इस समय बिलकुल ठहरा हुआ था।

ता. २७ मई। जहाज़ क़रीब २ बजे दिन के जज़ीरे कैनेडिया के पास होकर गुज़रा। दरबार ने बटलर साहिब को इस दिन भी अपने पास बुलाकर बात चीत फ़रमाई।

ता. २८ मई। बावू संसारचन्द्रजी सेन श्री जी को अख़बार सुनाते रहे। फिर दरबार ने कर्नल जैकब साहिब को बुलवा कर यह तजवीज़ फ़रमाई कि मार्सलिस में ग़रीबों को बांटने के वास्ते २००० फ्रेङ्क मेयर आफ़ मार्सलिस के पास भिजवा दिए जावें। इस के बाद कप्तान जहाज़ से गुफ्तगू फ़रमाते रहे, और उस को यह हुक्म दिया कि वापिस लौटते समय भी जहाज़ के मुलाज़िम वही रहें जो इस समय हैं। शाम को दर्शन के बाद आप सङ्गीतभवन में पधारे और वहां सरदारों के साथ गाना सुनते रहे।

ता. २९ मई। सुबह के वक्त ज़मीन दिखलाई देने लगी। दाहिनी तरफ़ सिसलि का टापू दिखलाई दिया इटना पर्वत के पास बर्फ़ दिखलाई दे रही था। और अस्तम्बोल में ज्वालामुखी पहाड़ दिखलाई देते थे। इटेली के हरे भरे खेत बहुत सुन्दर मालूम होते थे। यह दृश्य अरब के जलते हुए टीबों से बिलकुल मुख्तलिफ़ था। समुद्र के किनारों के बराबर २ दूर तक हरयाली नज़र आती थी जिसे देख कर कश्मीर का मुल्क याद आता था। पर्वत के नीचे जो सुन्दर स्थान थे वह दूरबीन से साफ़ दिखलाई देते थे। समुद्र के बराबर २ दूर तक एक लाईन सी नज़र आती थी। पास पहुंचने से मालूम हुआ कि वह पक्की सड़क थी, और इस ही सड़क के सामने दूसरी तरफ़ रेल्वे लाईन नज़र आती थी जिस पर एक छोटी ट्रेन चलती हुई दिखलाई दी। जब जहाज़ "स्ट्रेट आफ़ मैसीनिया" में होकर चला तो सिसली

और इटली के दोनों टापू जहाज़ के दाहिनी और बाईं तर्फ़ नज़र आते थे। यह दृश्य बहुत ही मनोरञ्जक था। हरएक मनुष्य कभी इटली के दृश्य देखता और कभी **सिसली** की ओर नज़र दौड़ाता था। यह दोनों टापू सिर्फ़ पानी से अलग हो रहे थे वरना देखने में दोनों बिलकुल एक से मालूम पड़ते थे। इस स्ट्रेट में हो कर चलते समय जहाज़ों को बड़े २ भयङ्कर भँवरों का ख़तरा रहता है इस लिए उन से बचाने के ख़याल से जहाज़ों को बहुत सँभाल कर चलाना पड़ता है। उस दिन भी आसमान पर बादल छाये हुये थे और समुद्र में तूफ़ान आ रहा था। जहाज़ बराबर डगमगा रहा था। मगर ईश्वर की कृपा से समुद्र का वह हिस्सा कुशल पूर्वक निकल गया। यूरोप में इटली की आब हवा बहुत ही अच्छी ख़याल की जाती है। यूरोप के प्रायः रहने वाले सैर के तौर पर वहां जा कर कुछ दिन रहा करते हैं।

ता. ३० मई। चूँकि **मार्सेलिस** में फिर डाक्टरी मुआइना होने वाला था और महसूली चीज़ों की वहां पर तलाशी भी होने वाली थी इस लिए दरबार ने अपने तमाम सामान की फ़ेहरिस्त पहिले से तैयार करा ली और कर्ज़न वायली साहब के नाम एक तार भिजवादिया कि अफ्सर चुङ्गी को मार्सेलिस में हिदायत करादी जावे कि महसूली चीज़ों के देखने में अधिक समय न लगाया जावे।

ता. १ जून। जहाज़ सुबह के वक्त बन्दरगाह मार्सेलिस में पहुँचा। पाईलाट जहाज़ पर आया और तीसरे दर्जे के मुसाफ़िरों का डाक्टर ने मुआइना किया। जहाज़ के तमाम केबिनों का मुआइना किया परन्तु

श्रीठाकुरजी व महाराज साहिब के केबिन नहीं देखे गये। कर्ज़न वायली साहब सेन्ट जेम्स पैलिस में लीवी दरवार होने की वजह से ता २ जून को श्रीहुजूर साहिब की पेशवाई के वास्ते डोवर तशरीफ़ नहीं लासकते थे इस वास्ते श्रीहुजूर साहिब ने मार्सलिस में ठहरना उचित समझा। और अब ३ जून को लन्दन पहुंचना नियत किया गया, और इस तारीख की इत्तिला कर्ज़न वायली साहब को तार के ज़रिये से दे दी गई। मार्सलिस में स्पेशल तैयार थी। जहाज़ ओलिम्पिया को कुछ साथवालों के सहित वहां पर ही छोड़ दिया गया और यह हुक्म फ़रमाया गया कि वह स्ट्रेट आफ़ जबराल्टर में होकर लिवरपोल के बन्दर गाह में पहुंच जाय कि जो इङ्गलिस्तान में मर्सी नदी पर एक प्रसिद्ध बन्दर गाह है। जिस स्पेशल में दरवार का मार्सलिस से कैले तक मुल्क फ्रान्स में सफ़र होने वाला था उस की सफ़ाई ख़ास तौर से की गई थी। ट्रेन का सामान हिन्दुस्तानी रेल गाडियों के सामान से बहुत ही बढिया था मगर डब्बे ज्यादा बड़े नहीं थे। श्रीहुजूर साहिब ने मार्सलिस के ग़रीबों को बांटे जाने के वास्ते २००० फ्रेङ्क दान किए, और इस विषय में एक चिट्ठी मार्सलिस के ब्रिटिश कन्सल जनरल के नाम भिजवाई गई। साथवालों को यहां पर काफ़ी समय मिल गया था। इस लिए बहुत से नाटक देखने के लिए थियेटर चले गए। मार्सलिस में एक और भी नई घटना हुई। श्रीदरवार जयपुर से अपने साथ आम ले गए थे उस का हाल वहां के रहने वालों को मालूम होगया तो उन्हों ने आम माँगना शुरू किया।

पहिले कुछ आम बांटने के वास्ते देदिये गये। लेकिन जब माँगने वाले ज्यादा हो गए तो दरबार ने जितने आम मौजूद थे सब बटवा दिए।

ता. २ जून । श्रीहुजूर साहिब ने जहाज़ के कप्तान को बुला कर धन्यवाद दिया कि उस की वजह से सब को बहुत आराम मिला । जीमन के बाद स्पेशल ट्रेन में सवार हो कर मार्सेलिस से आगे रवाना हुए । सामान ज्यादा होने से ट्रेन की रवानगी में बीस मिनट की देरी हो गई थी। ट्रेन में गरमी विशेष थी। मार्सेलिस से कैले तक **फ्रान्स** का देश दोनों ओर से बाग़ सा सुन्दर मालूम होता था । प्राकृतिक दृश्य मन को मोहते थे । वृक्षों के बीच में कहीं २ मकान भी दिखाई देते थे। हरे भरे घास चरते हुए पशु गण अतीव सुहावने मालूम होते थे। फ्रान्स देश की यात्रा चौबीस घण्टे में पूर्ण हुई।

ता ३ जून. को साढे ग्यारह बजे के समय स्पेशल कैले पहुंची। स्पेशल से जहाज़ **डचैज़ आफ़ यार्क** तक जिस में सवार होकर अब श्री दरबार को **इङ्गलिश चैनल** पार कर के डोवर पहुंचना था दोनों ओर लेडीज़ और जैन्टिलमैन खड़े थे। वृटिश कन्सल दरबार की सेवा में श्रीमान् सम्राट के हुकुम से हाज़िर हुए । उन्हों ने पहिले से तमाम ज़रूरी इन्तिज़ाम कर रक्खा था । कैले से इङ्गलिस्तान बहुत नज़दीक रह जाता है । प्रायः जब आसमान साफ़ रहता है तो चाक (खड़िया) के सफ़ेद चट्टान मन्द २ दिखाई देने लगते हैं । जहाज़ डचैज़ आफ़ यार्क में इङ्गलिस्तान और हिन्दुस्तान के झण्डे लहरा रहे थे।

जिस वक्त जहाज़ ऐडमीरैलटी पायर से रवाना हुआ तो तमाम जैन्टिलमैन और लेडीज़ ने चीयर्स दिए। इङ्गलिश चैनल पार कर के क़रीब आधे घण्टे में ही जहाज़ बन्दरगाह डोवर में दाख़िल हुआ और उस ही वक्त एक जङ्गी जहाज़ इमार्टे लाइट से २१ तोपें सलामी की चलाई गईं। जङ्गी जहाज़ के देखने का यह पहला ही अवसर था। हिन्दुस्तान से रवाना होने के २३ दिन पीछे ज़मीन के देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ कि जिस के लिए इस प्रकार तकलीफ़ें सहन की गईं थीं। बन्दरगाह के ऊपर पहाड़ियों पर सिपाहियों के बारग और एक ओर बहुत विशाल क़िले दिखलाई देते थे। इन सम्पूर्ण दृश्यों को देख कर हर नवीन शख्स के दिल में तवारीख़ के ख़ास २ वाक़े स्पेनिश आरमेडा आदि याद आजाते हैं। डोवर तक सर कर्ज़न वायली साहब, सी. आई. ई., (Lt. Col., W. H. Curzon Wyllie, C. I. E., Political A. D. C. to the Secretary of State.) मिस्टर रिचमाण्ड रिक्सी साहब, सी. बी., लार्ड जार्ज हैमिल्टन साहब के प्राईवेट सेक्रेटरी (The Rt. Hon. Lord Geo. Hamilton, M. P., Secretary of State for India.) और अन्य बड़े २ अफ़सर हुज़ूर बादशाह आलमपनाह की जानिब से श्री जी का स्वागत करने के लिए तशरीफ़ लाए थे। और बादशाह साहिब ने दो निहायत बड़े और सुन्दर गुलदस्ते श्रीदरबार के लिए भिजवाए थे। जो बादशाही कृपा का पहिला प्रसाद था, दरबार ने उन्हें निहायत ख़ुशी के साथ श्री ठाकुरजी

सर कर्ज़न वायली साहिब.
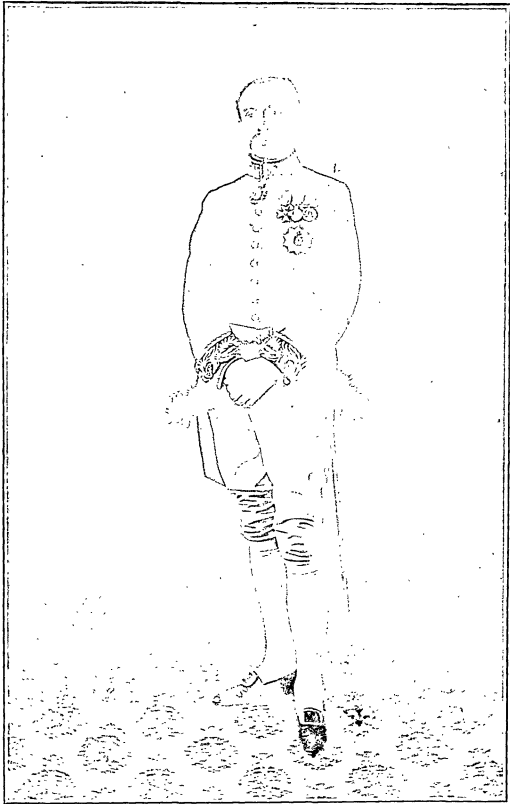
के कम्पार्टमैन्ट में रखवा दिया। इस स्थान पर भी खलकत का बहुत हजूम हो रहा था। **लार्ड मेयर आफ़ डोवर** ने दरबार की सेवा में मान पत्र पेश किया जिस में श्रीहुजूर साहिब के सद्गुण और स्वभाव की प्रशंसा करते हुए यह प्रकट किया कि हम आशा करते हैं कि वापसी के समय इङ्गलिस्तान और २ यहां के निवासियों की एक आनन्द पूर्ण यादगार आप अपने साथ हिन्दुस्तान ले जाँयगे इस में सन्देह नहीं कि दरबारने और उन के साथियों ने इस ख़याल को एक २ अक्षर से सत्य पाया। दरबार ने इस ऐड्रेस का शुक्रिया अदा किया और फ़रमाया कि मुझे सब से ज्यादा खुशी इस बात की है कि हुजूर बादशाह साहिबकी ताज-पोशी जैसे मुबारिक मौके पर यहां पहिले मरतबा आया हूं।

डोवर में इस समय एक अद्भुत दृश्य नज़र आरहा था। सामान के क़रीब ६०० पैकट बन्दरगाह पर उतार कर ट्रेन में रखवाये जा रहे थे। दरबार के साथी रङ्ग बरङ्ग के कपड़े पहने हुए यूरोप निवासियों को विलक्षण मालूम होते थे। श्रीहुजूर साहिब ने काली साटन का चुग़ा धारण कर रक्खा था। राय बहादुर धनपतरायजी जो पहिले से इन्तज़ाम करने के वास्ते विलायत भेज दिए गए थे इस ही स्थान पर दरबार की सेवा में उपस्थित हुए। पुलिस का इन्तज़ाम ख़ास तौर पर कर दिया गया था कि सरकारी नौकरों के सिवाय कोई अन्य मनुष्य दरबार के किसी सामान को हाथ न लगाए। सामान को ट्रेन में लादने में क़रीब दो घण्टे ख़र्च हुए। इस के पश्चात् कर्ज़न वायली साहब के साथ और अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ ४ बजे पीछे

स्पेशल ट्रेन में सवार हो कर लन्दन को रवाना हुए। जिस समय ट्रेन इङ्गलिस्तान के रमणीक मैदानों में हो कर गुज़र रही थी वहां के कुदरती दृश्य निहायत भले और लुभाने वाले मालूम होते थे। इन्हीं कुदरती दृश्यों की वजह से इङ्गलिस्तान के यह हरे भरे मैदान गार्डन आफ़ इङ्गलैण्ड कहलाते हैं। और इस में सन्देह नहीं कि कुदरत ने इस उत्तम भूमि को भी अन्य देखने योग्य संसार के स्थानों की तरह सुशोभित करने में अपनी जादूगरी का परिचय दिया है। मुमकिन नहीं कि यहां के प्राकृतिक दृश्यों को देख कर प्रत्येक मनुष्य को आनन्द और हर्ष प्राप्त न हो और परमात्मा की प्रभुताई का दिल पर असर न हो। यह वही स्थान है कि जहां की हुकूमत का झण्डा आज तमाम संसार के किसी न किसी हिस्से में फहराता नज़र आता है और इस के आधीन जितने देश हैं उन में सूर्य कहीं न कहीं हमेशा ही जग मगाता रहता है। इस देश की अंग्रेज़ी भाषा ने कितनी उन्नति प्राप्त की है कि आज तमाम संसार में प्रचलित हो रही है और अंग्रेज़ी का विद्वान् चाहे कहीं जाय वह अपने विचारों को प्रगट करने में कदापि नहीं रुक सकता।

* शहर लन्दन में प्रवेश *

श्रीहुज़ूर साहिब की स्पेशल ट्रेन ता. ३ जून को पांच बज कर ५७ मिनट पर विक्टोरिया स्टेशन में दाख़िल हुई। वहां भी आदमियों का बहुत हुजूम हो रहा था। प्रत्येक मनुष्य टोपी और रुमाल उछाल २ कर अपने हर्ष का परिचय दे रहा था। मिस्टर रिची साहब,

स्टेट आफ़ इण्डिया के सेक्रेटरी के प्राईवेट सेक्रेटरी. (Mr. Ritchie P. S. to Secy. of State for India) मेजर जनरल वैनन साहब, (Genl. Beynon.) करनल विक्टरला साहब. (Col. Victor Law.) मिस्टर ए. लारेन्स साहब, (Mr. A. Lawrence.) और अनेक आला अफ़सरान रेल्वे दरबार के स्वागत के लिए स्टेशन पर उपस्थित थे। प्लेटफार्म पर निहायत खूब सूरत सुर्ख़ क़ालीन बिछा दिया गया था। हुजूर साहिब के वास्ते शाही वेटिङ्ग रूम खोल दिया गया था। और हुजूर सम्राट की खास़ा गाडी सवारी के लिए मौजूद थी। श्री दरबार की सादगी देख कर अनेक मनुष्य अपने २ विचारों को अनेक प्रकार से प्रगट कर रहे थे। एक साहब ने श्रीगोपालजी को गाड़ी में जाते देख कर कहा कि निःसंदेह हुजूर सम्राट के महमानों में से जयपुर नरेश इसी कारण से अत्यन्त संमानित हैं कि वह अपने धर्म के पूर्ण पालक हैं। वह ज़ाहिरी टीप टाप और बनाव शृङ्गार को पसन्द नहीं करते। इसी कारण से लार्ड कर्ज़न साहब ने अपनी एक स्पीच में फ़रमाया था कि जयपुर राजधानी को इस बात का नाज़ होना उचित है कि वहां पर महाराज साहिब जैसे नरेश्वर राज्य कर रहे हैं कि जिन को अपनी प्रजा के सुख का विचार हर समय बना रहता है और जिन्हों ने अपने राज्य को बहुत उन्नति पर पहुंचा रक्खा है। आज दिन जयपुर राज्य महाराज साहिब के सुप्रबन्ध के कारण राजपूताने की तमाम रियासतों में सब से ज्यादा उच्चकोटि का गिना जाता है। इतने साथियों

के साथ और हर तरह का सामान बड़े २ बादशाहों के सदृश लेकर विलायत आना दरवार के उच्च पद का पूरा परिचय दे रहा था। वेटिङ्ग रूम में कुछ समय तक ठहरने के पश्चात् हुजूर साहिब गाडी में सवार होकर **मोरेलाज** स्थान पर पधारे कि जहां आप के ठहरने का इन्तज़ाम किया गया था।

मोरेलाज लन्दन से पश्चिम दक्षिण की ओर **कैम्पडनहिल** पर एक प्रसिद्ध स्थान है। इस की तीन तरफ़ की सतह सड़क के बराबर है और पश्चिम की ओर कुछ ढलाव है। मोरेलाज के चारों ओर एक सुन्दर वाग़ लगा हुआ था और उस में महल के अतिरिक्त अनेक लकड़ी के मकान साथवालों के लिए हुज़ूर साहिव ने बनवा दिए थे। तहखाने के अलावा इस महल के तीन खन थे। जिन में अतिशय कर के काच का काम हो रहा था। महल के अन्दर भी एक छोटा और सुन्दर फ़र्न हाउस बन रहा था जिस में काच और चीनी के घमले निहायत कारीगरी और सुन्दरता से सजाए गये थे। इस मकान में रोशनी, पानी और दूसरी आवश्यक वस्तुओं का प्रवन्ध हो रहा था। सब से ऊपर के खन पर शागिर्दपेशों के कमरे बने हुए थे। नीचे के खन में श्रीहुज़ूर साहिव और उन के संमानित सरदार ठहरे हुए थे। और उस से नीचे के खन में करनल जैकब साहव वहादुर जो पोलीटिकल अफ़सर की हैसियत से हुज़ूर साहिव के साथ गए थे मए अपने दफ्तर के ठहरे थे। और वहां पर ही दरवार के प्राईवेट सेक्रेटरी जी का दफ्तर था। तहखाने में हर क़िस्म के भोज्यपदार्थ
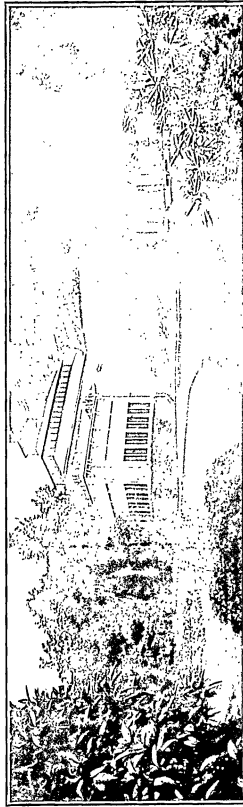
स्थान मोरेलाज, लन्दन.

रक्खे गए थे । यह मकान हुज़ूर साहिब के कुल साथ वालों के लिए काफ़ी न था इस लिए एक और मकान पास ही किराये पर लिया गया था। जिस में ठाकुर साहब चौमूं, रावराजाजी सीकर, और धनपतरायजी वगैरह ठहरे थे। हुज़ूर साहिब के वास्ते चार ख़ास शाही गाड़ियां तईनात कर दी गई थीं । इन गाड़ियों के मुलाज़िम सुर्ख़ वर्दी पहिने रहते थे । ऐसी गाड़ियों को सिवाय रायल फ़ैमिली (बादशाह के कुटुम्ब) के या शाही महमानों के और कोई इस्तेमाल नहीं कर सक्ता। यही कारण था कि जब कभी ऐसी गाड़ी में हुज़ूर साहिब सवार होकर बाहिर पधारते तो गाड़ी और नौकरों की वर्दी देख कर हर मनुष्य को यह प्रतीत हो जाता था के उसमें कोई मोअज़िज़ शाही महमान है। घोड़ों के लिए जो स्थान तबेले के तौर पर काममें लाया जाता था वह "म्यूज़" कहलाता था। श्रीहुज़ूर साहिब के लन्दन पहुँच जाने के बाद उन के सद्गुण और राज्य के सुप्रबन्ध के हालात प्रतिदिन अख़बारों में प्रकाशित होने लगे । अगर पूरीतोर से उन का वर्णन यहां पर किया जाय तो बहुत समय लगे । इस लिए हम उन में से थोड़े लेख संक्षेप से पाठकों के सामने पेश करते हैं ।

ता. ५ जून । के अख़बार **मारनिङ्ग पोस्ट** में यह छपा था कि "मुग़ल सम्राटों के समय में भी जयपुर के राजा महाराजा बड़े संमानित गिने जाते थे। सन् १८५७ के ग़दर के समय में जयपुर महाराज ने गवर्मेन्ट को बहुत सहायता दी थी । समस्त हिन्दू यह देख कर अत्यन्त प्रसन्न हैं कि इस यूरोप यात्रा से श्रीहुज़ूर साहिब

ने समस्त भारतवर्ष में इस बात की नज़ीर क़ायम कर दी है के हिन्दुस्तान के राजा महाराजा अगर चाहें किस प्रकार से अपने धर्म का पालन कर सकते हैं"।

अख़बार ग्रेट थाट्स २ जून सन् १९०२ में दर्ज था:—
"करीब दो साल का अरसा हुआ जब हम ने सुना था कि महाराज जयपुर ने १०००००) रुपया जङ्ग ट्रैन्सवाल के दुखियों की सहायता के लिए दान दिया था और उस समय यहां आम तौर पर यह ख़याल था कि महाराज साहिब का कार्य बहुत उदारता का है। लेकिन् सत्य तो यह है कि महाराज साहिब जयपुर जब से राज सिंहासन पर विराजे हैं तब से अब तक बहुत ही उदारता के कार्य कर चुके हैं"।

ता. २३ मई के अख़बार क्रानिकल में वर्णित था "इस देश में हज़ारों हिन्दू आचुके हैं मगर अब तक ऐसा कोई नहीं आया कि जो हिन्दू धर्म का इतना पालने वाला हो। अच्छे हिन्दू का धर्म है कि वह अपने धर्म की मर्यादा का पालन करे। जयपुर, राजपूताना और सेन्ट्रैल इण्डिया की बहुत बड़ी रियासतों में से एक विख्यात रियासत है। यह महाराज बहुत ही बुद्धिमान् और प्रजा हितैषी हैं"।

"इङ्गलिस्तान के बाशिन्दों के लिए श्रीगोपालजी की मूर्त्ति का पधारना बहुत ही आश्चर्य की बात थी, और वहां के रहने वाले मूर्त्ति पूजन के रहस्यों को नहीं जानते थे। इस वास्ते मूर्ति पूजन के विषय में प्रायः अख़बारों में विरुद्ध लेख प्रकाशित किए गए। उन्हीं दिनों में बाबा प्रेमानन्दजी भारती लन्दन में उपस्थित थे उनको यह विरुद्ध प्रस्ताव बहुत ही अप्रिय लगे। उन्हों ने इस का प्रतिवाद

ता. २८ जून सन् १९०२ के अखबार वेस्टमिन्सटर में छपवाया जिस का शिक्षित समाज पर अच्छा असर पड़ा।

"इस खबर ने कि महाराज जयपुर अपने साथ श्रीभगवान् गोपालजी की मूर्ति लाए हैं एक खास हल चल पैदा करदी है । यह कुदरती बात है कि जो लोग मूर्ति पूजा के विरुद्ध हैं और गिरजाओं में धूप दीप जलाना भी एक प्रकार से मूर्ति पूजन ही है ऐसा नहीं समझते हैं इस लिए उन को विलायत में साक्षात् श्रीगोपालजी महाराज का पधारना अनुचित तथा आश्चर्यकारी होना ही चाहिए। इसही कारण से अखबारों में इन शीर्षकों से लेख प्रकाशित होने लगे। "देवता गाड़ी में", "एक राजा मए देवता के", " महाराज और उन के देवता "। परन्तु मुझे विश्वास है कि सम्पूर्ण सभ्य तथा शिक्षित समुदाय को इस प्रकार के यह लेख बहुत ही अप्रिय मालूम हुए होंगे । और मैं बहुत अंग्रेजों से मिला हूं जो इस बात को सुन कर बहुत दुखी होते हैं। मगर इङ्गलिस्तान एक स्वतन्त्र देश है जहां पर शारीरिक व मानसिक स्वतन्त्रता पूर्ण रूप से प्राप्त है। इस ही तरह धार्मिक स्वतन्त्रता भी है । वह समय चला गया कि जब ब्रिरतानियां के रहने वाले धर्मविरोधी हुआ करते थे और उन मनुष्यों से घृणा रखते थे जो ईसाई नहीं थे। अंग्रेज़ों को हिन्दुओं के मज़हब का हाल प्रोफेसर मैक्समूलर आदि के कारण बहुत सा मालूम होगया है। वेद, उपनिषद्, भगवद्गीता के तरजुमे अंग्रेजी में मौजूद हैं। श्रीकृष्ण भगवद्गीता के उपदेशक सर ऐडविन् आरनाल्ड साहब के कथनानुसार बहुत बड़े फ़िलासोफ़र थे, जिन को

हिन्दू ईश्वर का अवतार मानते हैं। महाभारत के हीरो श्रीकृष्ण भगवान् के बराबर आज तक किसी मुल्क में वीरता, बुद्धिमानी तथा न्यायशीलता में अन्य देखने में नहीं आता। अगर ईसाई कृष्ण भगवान् के हालात को झूठी सिद्ध करते हैं तो हिन्दू लोग भी ईसाई वृत्तान्त को झूठा मानते हैं। यह कैसे उचित है कि तवारीख़ यूरोप के हालात या मिश्र और रूम के हालात तो सही हों और हिन्दुओं की कहानी बिलकुल झूँठ हो कि जो हज़ारों वर्ष पहिले की धर्मपुस्तकों में स्थित हैं। वही श्रीकृष्ण भगवान् जयपुर नरेश के इष्टदेव हैं। वह उन को यहां पर श्रीगोपालजी के नाम से लाए हैं। वह किसी प्रकार का भी सांसारिक कार्य करने से पहिले उन का पूजन करते हैं। यहां तक कि बिना पूजन के भोजन तक नहीं करते और सुबह शाम के वक्त खुशबूदार फूल तुलसी के पत्र जिन में चन्दन लगा होता है श्रीकृष्ण भगवान् के चरणों में भेट करते हैं। श्रीकृष्ण भगवान् की पूजन का यह तरीक़ा सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में प्रचलित है। मूर्त्ति सिर्फ़ एक चिन्ह है। उस की पूजा ख़ास तौर पर मानसिक है। इस प्रकार की पूजन को देख कर बिरतानियां निवासी याने साहिबान अंग्रेज़ भी ज़रा अपने पूजन के तरीक़े पर ग़ौर करें, और यदि अपने गिरजा के तरीके पर ध्यान दें तो उन को मालूम हो जायगा कि उन का मज़हब भी इस पूजन पद्धति से ख़ाली नहीं है। मूर्त्ति-पूजन के विरोध के विषय में कैथोलिक गिरोह भी इस ही तौर पर पूजन करते हैं और फ़िरके प्रोटैस्टैन्ट इस पूजन

से उस समय तक वञ्चित नहीं समझे जाते कि जब तक वह किसी न किसी रूप में अपने हीरोज़ के बुतों और तसवीरों और क्रास के सामने अपने मस्तक को झुकाते हैं। किसी बुत के सामने चाहे अपने सिर को झुकाया जाय या केवल विश्वास से पूजन के वास्ते पुष्प चढ़ाये जाएँ, दोनों ही पूजन में शामिल हैं। श्रीकृष्ण भगवान् के भक्त हिन्दू भी इसी प्रकार पूजन करते हैं। फिर मेरे ख़याल में नहीं आता कि इङ्गलिस्तान निवासी इस से क्यों चकित होते हैं। मैं ने यह वृत्तान्त केवल इस कारण से छपवाया है कि इङ्गलिस्तान के शिक्षित जन अनभिज्ञ जन को लाभ पहुंचाने के वास्ते हिन्दुओं की धार्मिक पुस्तकों का अवलोकन करें और द्रोही ईसाइयों के दिलों से और मिशनरियों के दिमाग़ों से यह झूँठे ख़यालात हटा देवें। उन को यह सबक़ भी दिया जाना चाहिये कि वह भी किसी दूसरे मुल्क के रहने वाले के विषय में इस प्रकार विरुद्ध सम्मति केवल इस कारण से न दिया करें कि वह एक दूसरे ढङ्ग के मज़हब का पैरोकार है और केवल वह आप ही सत्य मार्ग पर हैं। उन को यह ख़याल दिल में रखना चाहिये कि उन के पानी से रस्म बैप्तिस्मा अदा करना और एक लकड़ी की क्रास के सामने घुटने टेक कर इबादत करना और ताजपोशी के समय रोग़न ज़ैतून लगाना भी उस ही तरीक़े पूजन के समान है कि जैसे महाराज साहिब जयपुर हर रोज़ अपने इष्टदेव श्रीगोपालजी महाराज की पूजन के समय में फूल व गङ्गाजल काम में लाते हैं।

ता. ४ जून । लण्डन पहुंचने के दूसरे दिन श्रीहुजूर साहिब **कर्नल वायली** साहिब से मिलने को तशरीफ़ ले गए और उस ही दिन से " मोरेलाज " में इङ्गलिस्तान के बड़े २ रईसों ने आना प्रारम्भ किया । श्री दरबार इण्डिया आफ़िस में १२॥ बजे दिन के पहुंचे । मिस्टर **रिचमाराड रिची** साहिब प्राईवेट सेक्रेटरी **लार्ड जार्ज हेमिल्टन,** साहिब और कर्जन वायली साहिब ने गाडी से उतरने पर स्वागत किया । सुर्ख़ कपड़ा ज़ीने से ले कर कमरे तक बिछवा दिया गया था । **इण्डिया आफ़िस** स्वयं एक निहायत खूबसूरत और बढिया इमारत है । यह सेन्ट जेम्स पार्क में बना हुआ है । पानी की रवानी और सघन वृक्षों की छटा ने इस बाग़ के सौन्दर्य को दूना कर रक्खा था । इन ही दरख्तों के बीच में और खूबसूरत इमारतें नज़र आती हैं । वहां पर फ़ारन आफ़िसेज़, हार्स गार्ड परेड और ऐडमीरैल्टी पायर वाक़े हैं । लार्ड जार्ज हैमिल्टन साहिब ने दरबार से बड़े प्रेम के साथ मुलाक़ात की । क़रीब ३५ मिनट तक बात चीत अनेक विषय में फ़रमाते रहे । दरबार के साथ ५ सरदार तशरीफ़ लेगए थे । उन की साहिब से मुलाक़ात कराई गई । इस के पश्चात् फिर मोरेलाज में वापिस तशरीफ़ लाए ।

तारीख ७ जून से १० जून तक

इन दिनों में जो यूरोपियन साहिब लोग दरबार से समय २ पर मिलने मोरेलाज आये उन में मुख्यतः जिन का नाम लिखना चाहिये नीचे लिखा जाता है । मेजर पैड्क साहिब,

कर्नल ब्रेडफोर्ड साहिब, कर्नल पीकाक साहिब साबिक रेजीडैन्ट जयपुर। तारीख ९ जून को दरबार ने बाबू संसारचन्द्रजी सैन के साथ पधार कर सर ऐडवर्ड ब्रेडफोर्ड साहिब (Col. Sir Edward, R. C. Bradford, G. C. B., K. C. S. I., Commissioner Police.) से मुलाक़ात फ़रमाई। यह साहिब उस समय लण्डन की पुलिस के बडे ओहदे पर थे।

ता. ११ जून। लार्ड जार्ज हेमिल्टन साहिब सैक्रेटरी आफ् स्टेट ने करीब ११ बजे मोरेलाज में पधार कर दरबार से मुलाक़ात फ़रमाई। मिस्टर रिचमाण्ड रिची साहिब उन के साथ थे। श्रीदरबार ने लाटसाहिब का उनके उच्चपदानुसार दरवाज़े पर पधार कर स्वागत किया। दरवाज़े के कमरे तक सुर्ख़ कपड़ा बिछा दिया गया था। राज के सिपाही मुलाक़ाती कमरे तक लाईन बांधे खड़े थे। वापसी के समय दरबार ने इत्र फूल आदि से सत्कार किया। लाट साहिब के तशरीफ़ लेजाने के बाद करीब १२॥ बजे दरबार लार्ड राबर्ट साहिब से मिलने पोर्टलैन्डपैलेस नामिक स्थान पर पधारे। यह साहिब सं. १८८५ में हिन्दुस्तान में कमाण्डर-इन चीफ़ की उच्चपदवी पर नियुक्त रह चुके थे। रास्ते में बाज़ार की सैर करने का फिर अवसर मिला। बाज़ार प्रायः ऊपर से पटे हुए हैं। उन में दूकानों की लाईन के बीच में होकर गुज़रने से आनन्द मिलता है। दूकानें छै से आठ मनज़िल तक बनी हुई हैं। लण्डन में अख़बार पढने का शौक़ पूरा बढ़ा हुआ है। साधारण से साधारण मनुष्य भी अख़बार

पढे विना नहीं रहता । रेल में, गाडी में, रास्ते में, तमाशा देखते हुए, चलते फिरते, जहां देखो अखबार पढते नज़र आते हैं । सड़कों के सिपाहियों का काम भी प्रशंसनीय है, सड़कें तीन चार तरह की देखने में आईं । कुछ सड़कें रवड़ या घास या लकड़ी की वनी हुई थीं जिन पर मिट्टी का तेल इतना छिड़का हुआ था कि वह सदा शीशे के तुल्य चमकती रहती थीं । तारीफ़ की वात यह है कि वहुत वर्षा होनेपर भी कीचड़ सड़क पर नहीं होने पाता । कहीं कहीं सड़कों पर वरावर दूरी पर एक प्रकार के समान वाले वृक्ष लगे हुए वड़े भले मालूम होते थे । लण्डन में भी पैरिस की तरह पोशाक के फ़ैशन हर समय पलटते रहते हैं । जव दरवार पोर्टलैण्ड पैलेस पहुंचे तो लाट साहिव ने निहायत प्रेम के साथ उन का सन्मान किया और दरवार के साथी सरदारों के साथ भी आदर पूर्वक वरताव किया । वापिस पधारते समय भी गाडी तक पहुंचाने आए ।

ता. १२ जून । कर्नल और मिसेज़ पैङ्क साहिवा दरवार से मिलने मारेलाज में पधारे ।

ता. १३ जून । सम्राट महोदय का लैवी दरवार ।

इस दरवार में जाने के वास्ते श्रीहुजूरसाहिव ने रावराजाजी सीकर, ठाकुर साहिव चौमूँ. राजा उदयसिंहजी और धनपतरायजी को पास दिये । आप ने दरवार में पधारने के वास्ते खूंटेदार पाग धारण फ़रमाई । उस दिन हुजूर सम्राट ने ऐड्रैस लेने के वास्ते यह लैवी दरवार किया था । उस रोज़ तमाम दिन वारिश होती रही मगर हुजूरसाहिव ने हुजूर सम्राट के मिलने के विचार से उस मौसम का

कुछ ख्याल नहीं किया। बादशाह सलामत ने दरबार के समय के अतिरिक्त श्रीदरबार से स्वतन्त्र मुलाक़ात का भी अवसर दिया था। जिस से उनकी कृपा का परिचय पूर्णरूप से होता था। बकिङ्घाम पैलेस वह स्थान है जहां श्रीसम्राट स्वयं विराजते हैं। सब से पहिले इस महल को सन् १७०३ में ड्यूक आफ़ बकिङ्घाम ने बनवाया था और इस समय तक यह उन ही के नाम से विख्यात है। इस में दर्शनीय इमारतें बहुत हैं। जिन में से मुख्यतया पुस्तकालय, ड्राइङ्ग रूम, थ्रोन रूम, पिकचर गैलेरी, स्टेट बालरूम, इत्यादि अनेक भवन अवश्य ही देखने योग्य हैं। महल के नीचे एक सुन्दर बाग़ लगा हुआ है और उस में एक समर हाउस भी देखने योग्य बना है जहां पर गरम देश के वृक्षों को बिजली की शक्ति से बल पहुंचा कर पालन किया जाता है। दरबार जिस समय मोरेलाज से रवाना हुए उस समय वर्षा ज़ोर से हो रही थी। महल बकिङ्घाम के द्वार तक चारों ओर पानी ख़ूब बह रहा था परन्तु ऐसा उत्तम प्रबन्ध किया गया था कि किसी को ज़रा भी तकलीफ़ नहीं मालूम होती थी। जब हुज़ूर साहिब महल के दरवाज़े में दाख़िल हुए तो वहां पर आप के स्वागत के लिए ख़ुद लार्ड जार्ज हेमिल्टन साहिब, सर कर्ज़न वायली साहिब और महाराज सर प्रतापसिंहजी उपस्थित थे। श्रीदरबार कमरे दर कमरे पधारते हुए निज मन्दिर में पहुंचे। जहां हुज़ूर सम्राट व महारानी विराजमान थे। कर्ज़न वायली साहिब ने हुज़ूर सम्राट महोदय से श्रीदरबार की मुलाक़ात कराई और सम्राट महोदय बड़े संमान के

साथ कुशल प्रश्न के अनन्तर यात्रा का वृत्तान्त दर्याफ्त फ़रमाते रहे । इस के अनन्तर सन् १८७६ में श्री बड़े महाराज के समय जयपुर पधारने की चर्चा की । फिर रावराजाजी सीकर, ठाकुर साहिब चौमूं, राजा उदयसिंहजी धनपतरायजी व बाबू संसारचन्द्रजी का सम्राट महोदय से परिचय कराया गया । फिर महाराज साहिब बादशाह साहिब से विदा हो कर थ्रोन रूम में तशरीफ़ लेगए । वहां आप हिन्दुस्तान के अन्य महाराजाओं के साथ एक गैलेरी में विराजे । लार्ड लेन्सडाऊन साहिब ने श्रीदरबार से वहां ही मुलाक़ात फ़रमाई । कुछ समय व्यतीत होने पर बादशाह साहिब मय मलिका साहिबा के थ्रोन रूम में तशरीफ़ लाए और महमानों से मुलाक़ात करने में उन के क़रीब दो घण्टे व्यतीत हुए । इस शाही दरबार की शोभा वर्णन करना शक्ति से बाहिर है । वहां क़रीब चार हज़ार आदमी उपस्थित थे । दरबार समाप्त होने पर लौटते समय सर कर्ज़न वायली साहिब, कप्तान स्पेन्स साहिब और दूसरे उच्च अफ़सर दरवाज़े तक श्री हुज़ूर साहिब को पहुंचाने आए । हुज़ूर साहिब उस दिन का दरबार देख कर बड़े प्रसन्न हुए ।

ता. १४ जून को महाराज साहिब ग्वालियार महाराज साहिब से मुलाक़ात करने पधारे ।

ता. १५ जून को आनरेबिल मिस्टर कैन्डी साहिब, जज हाईकोर्ट बम्बई, दरबार से मिलने के लिए पधारे । वह उस ही जहाज़ परशिया नामी पर सफ़र कर के पहुंचे थे जिस में नव्वाब फ़ैयाज़अलीखांजी विलायत गए थे ।

फ़ौजी रिव्यू । स्थान ऐलडरशाट ।

ता. १६ जून । श्रीदरबार, जैकब साहिब व अन्य सरदारों सहित क़रीब ७॥ बजे वाटरलू स्टेशन पर पधारे। यहां दर्शकों की अधिक भीड़ थी । मार्ग में लण्डन नगर के बाज़ारों की सजावट देखने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रत्येक दूकान उत्सव ताज पोशी की ख़ुशी में विशेष प्रकार से सजाई गई थी । स्थान २ पर मनोहर झण्डियां फहरा रही थीं। कृत्रिम पुष्पों के हारों से बाज़ार की सुन्दरता दूनी हो गई थी। वाटरलू स्टेशन से श्रीदरबार साहिब ट्रेन द्वारा ऐलडरशाट नामिक स्थान पर पधारे। यह स्थान लण्डन से क़रीब ४० मील की दूरी पर है । फ़ौजी रिव्यू का कार्य ११ बजे प्रारम्भ हुआ और १॥ बजे समाप्त हुआ। श्रीमती महा-राणी साहिबा अस्वस्थ होने के कारण रिव्यू में भाग न ले सकीं । श्री मान् युवराज श्रीप्रिन्स आफ़ वेल्स और श्रीमती प्रिन्सेज़ आफ़ वेल्स ने सेना में झण्डियें प्रदान कीं। श्रेणी बद्ध सैन्यक अत्यन्त वीरता के साथ प्रणाम पूर्वक झण्डियां लेते थे और अत्यन्त हर्ष के साथ वापिस जाते थे । उन की चाल ढाल व अन्य सब बातों में नियमानुकूलता पाई जाती थी। पैदलों के बाद सवारों का व उन के बाद तोप ख़ाने का रिव्यू निरीक्षण निहायत ख़ूबी के साथ किया गया। अन्य देशों के सफ़ीर अनूपम आन बान से खड़े थे। रिव्यू में लञ्च का ख़ास प्रबन्ध किया गया था परन्तु श्रीमान महाराज साहिब ने उस में कोई भाग नहीं लिया। उस ही स्थान पर श्रीमान् प्रिन्स आफ़ वेल्स और श्रीमती प्रिन्सेज़ आफ़ वेल्स से श्रीमहाराज साहिब को भेट करने

का प्रथम अवसर मिला। रिव्यू के अनन्तर श्रीदरबार ५ बज कर २५ मिनट पर अनुयायियों सहित मोरेलाज में वापिस पधारे।

ता॰ १७ जून। रायल एशियाटिक सोसाईटी का उत्सव।

इस उत्सव में श्रीदरबार, राजा उदयसिंहजी व बाबू संसारचन्द्रजी सेन सहित पधारे। श्रीदरबार को विशेष संमानपूर्वक लार्ड क्रास साहिब और लार्ड राबर्ट साहिब के बीच में स्थान दिया गया। महाराज साहिब सिन्धिया, ड्यूक आफ़ कैनाट के समीप थे। डिनर और साधारण जाम सेहत के पश्चात् भाषण प्रारम्भ हुआ। उस भाषण में जयपुर के ट्रान्सपोर्ट कोर ने ऐफ्रिका युद्ध में जो जो सेवा की थीं उन का विशेष रूप से परिचय दिया गया था। रायल एशियाटिक सोसाईटी में ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैन्ड के बड़े २ माननीय महाशय मेम्बर हैं। इन्हों ने हिन्दुस्तान के उन रईसों को दावत देने को यह जलसा किया था जो लण्डन में ताजपोशी के महोत्सव में शामिल हुए थे। यह जलसा भी अनूपम था। इस जलसे में भारतीय रईस व सम्राट की प्रजा के एक ही स्थान पर एक समय में मिलने का प्रथम अवसर था। लार्ड रे (Lord Reay) साहिब जो बम्बई में गवर्नर रह चुके थे सभापति नियत किए गए थे। भारत के राजा महाराजा अपनी पूर्वीय चमक दमक की पोशाकें पहने हुए थे। उस दिन श्री महाराज साहिब ने हलके आसमानी रङ्ग की

पाग धारण कर रक्खी थी जिस पर बहु मूल्य मोती झलक रहे थे । इस महोत्सव में भिन्न २ देशों के लगभग ३०० महमान निमन्त्रित थे ।

ता. १८ जून । इस दिन श्री दरबार इलेक्ट्रिक वर्क्स ऐक्सपैरीमैन्टस अर्थात् बिजली के तमाशे देखने पधारे । यह अत्यन्त आश्चर्य जनक और मनोरञ्जक थे । ११ बजे रात को श्री महाराज साहिब वापिस पधारे । मार्ग में बाज़ार की सजावट देखने का अवसर फिर मिला । दूकानें सजावट के कारण ऐसी सुन्दर प्रतीत होती थीं मानों किसी सम्राट के ही महल हैं । दूकानों के द्वार पर जो साईन बोर्ड लगे हुए थे उन में कहीं २ शोबदे बाज़ी दिखाई देती थी । बिजली की रोशनी से उन के बड़े २ अक्षर हरे लाल पीले आदि अनेक रङ्ग बदलते हुए दिखलाई देते थे । अभी २ जो अक्षर काले दीखते थे वह ही क्षण मात्र में हरे लाल पीले नज़र आने लगते और सब की आँखें उन को देखने के लिए एकटक हो जाती और फिर सम्पूर्ण अक्षर बिजली की भाँति चमकने लगते । किसी २ दूकान में बाहिर की तर्फ़ कृत्रिम चित्र लटक रहे थे जिन के देखने से जी नहीं भरता था ।

रेस कोर्स अार्थत् घुड़दौड़ (स्थान ऐसकाट)

ता० १९ जून ! श्रीमहाराज साहिब इस रेस को देखने के लिए ११ बजे पधारे । स्टेशन वाटरलू से सर वालटर लारेन्स साहिब भी दरबार के साथ हो गए थे । यह साहिब लार्डकर्ज़न वाईसराय हिन्दुस्तान के प्राईवेट सेक्रेटरी थे ।

हुजूर सम्राट अस्वस्थता के कारण इस रेस में शामिल नहीं हो सके। रेस में श्रीमती महाराणी साहिबा शाहज़ादे व शाहज़ादी साहिबा वेल्स और ड्यूक आफ़ कैनाट विद्य-मान थे। सम्पूर्ण भारतीय रईस भी पधारे थे। स्टेशन तक मोटर व अन्य सवारियों से मार्ग भरा हुआ था। यह रेस अत्यन्त मनोरञ्जक और दर्शनीय थी। कहा जाता है कि इस जुलूस के साथ पहिले यह रेस कभी नहीं हुई थी। इस ही कारण से इस के देखने की उत्कण्ठा ग़रीब व अमीर सब को थी। टिकट घर में बहुत भीड़ हो रही थी। दर्शकों की ट्रेन पर ट्रेन छोड़ी जारहीं थीं। ख़ास रेस के स्थान पर तिल धरने के लिए भी कोई स्थान नहीं था। रेस में प्रशंसनीय बात यह थी कि इतनी भीड़ के कारण रेस कोर्स (घोड़े दौड़ने का स्थान) बिलकुल रुक गया था और उस में क़रीब एक लाख मनुष्य उपस्थित थे, परन्तु जब रेस के प्रारम्भ होने का समय आया तो एक पुलिस अफ़सर ने बीच में आकर उच्च स्वर से यह बात कही कि ("प्लीज़ क्लीयर दी रेस कोर्स") अर्थात् रेस का स्थान कृपापूर्वक ख़ाली कर दीजिए। इतना कहना ही था कि क्षण मात्र में सब भीड़ हट गई और वह स्थान ख़ाली हो गया मानों किसी ने जादू के द्वारा विना शोर गुल के हटा दिया हो। यह रेस ३ बजे प्रारम्भ हुई और ६ बजे समाप्त हुई। श्री दरबार ने इस को बहुत पसन्द किया। रेस मुलाहिज़ा फ़रमा कर ६ बजे बाद श्रीदरबार मोरेलाज वापिस पधारे।

ता० २० जून। १०॥ साढे दस बजे महाराज साहिब विक्टोरिया स्ट्रीट में मिस्टर लारेन्स साहिब से

मिलने पधारे और उन के सहित हाउस आफ़ पारलिया-मैन्ट में गए। यह भवन लण्डन की अद्भुत वस्तुओं में गिना जाता है। इस की सुन्दरता बाहिर से भी देखने योग्य है। सैकड़ों मूर्त्तियां इस पर इस प्रकार की जड़ी हुई हैं जैसी हिन्दुओं के मन्दिरों में देखी जाती हैं। टेम्स नदी इस के नीचे होकर बड़ी सुन्दरता से बहती है। कहीं २ पर पूर्व पुरुषों की मूर्त्तियां हैं जिन की शिल्पविद्या की निपुणता देखने योग्य है। केवल जीव डालने की ही कमी है। भवन के मध्य में एक बड़ा विशाल कमरा है। उस के बाईं तरफ़ अन्य देशों के एलचियों के बैठने का स्थान है और दाहिनी तरफ़ श्रीमान् सम्राट भारतवर्ष तथा अन्य रईसों के वास्ते बैठकें बनी हुई हैं। सम्राट के सिंहासन के समीप ही स्पीकर की बैठक बनी हुई है और एलचियों के कमरे के समीप स्पीकर का दफ्तर बना हुआ है जो पार्लियामैन्ट में इस प्रकार के कार्य किया करता है जैसे साधारण जलसों में सभापति नियत होना इत्यादि। समीप ही एक अद्भुत बड़ा कमरा है जिस में पार्लियामैन्ट के मैम्बर उस समय विचार किया करते हैं और टहलते रहते हैं कि जिस समय उन को किसी विशेष बड़े मामले में अपनी अन्तिम सम्मति देनी पड़ती है और केवल 'हां' अथवा 'नां' कहना पड़ता है। वहां पर यह नियम प्रचलित है कि बिना इजाज़त इस कमरे में कोई प्रवेश नहीं कर सकता। पार्लियामैन्ट में जब मैम्बर लोग कार्य प्रारम्भ करते हैं तो उन के समीप शार्ट हैण्डराईटर्स भी बैठते हैं जो स्पीकर और अन्य मैम्बरों के भाषण उस ही समय लिखते रहते हैं और उन के समीप अख़बार के सम्पादकों के तार भी लगे होते हैं

जिन के द्वारा वह भाषण अख़बारों के आफ़िस में बराबर पहुंचता रहता है और वे उस को मेशीनों द्वारा तत्काल छाप देते हैं। इधर स्पीच का अन्त हुआ उधर प्रत्येक स्पीच की असंख्य प्रतियां छप कर सम्पूर्ण नगर में बट जाती हैं। इस ही पिङ्गपाङ्ग हाऊस के पास क्लाक टावर है। जिस पर बहुत बड़ा चौमुखा घण्टा लगा हुआ है जो चारों तरफ़ से देखा जासक्ता है। उस के अक्षर दो दो फ़ुट लम्बे हैं और उस की मिनट की सूई १६ फ़ुट लम्बी है और तौल में यह घण्टा लगभग २ दो सौ पौण्ड के है। इस घण्टे की आवाज़ बड़ी तेज़ है। लण्डन नगर में प्रायः सर्वत्र पहुँच जाती है और इस ही से सारे लण्डन निवासी अपनी २ घड़ियां मिलाया करते हैं। इस भवन के देखने के पश्चात् लारेन्स साहिब ने सोरेलाज में पधार कर उन वस्तुओं को देखा जो श्रीमान् सम्राट की भेंट के लिए श्री महाराज साहिब जयपुर से विलायत ले गए थे।

ता. २१ जून। कालोनियलट्रूप्स का मुलाहिज़ा करने के लिए श्रीदरबार करीब चौदह अनुयायियों के साथ ऐलैकज़ैन्डरा पैलेस नामिक स्थान पर क़रीब ७॥ बजे पहुंचे। मेजर ऐटकिन साहिब दरबार को लाईन्स में ले गए जहां पर फ़िज़्जी के बाशिन्दों का ट्रूप मौजूद था और उस में मलाया (टापू) आफ़्रिका के लोग व सिख भी शामिल थे। इन्हों ने अपने हथियारों से श्री दरबार की सलामी उतारी जज़ीरे फ़िज़्जी के बाशिन्दों ने लड़ाई का नाच दिखलाया जो लकड़ी के तीन टुकड़ों पर हुआ था और नाचने वालों

हाथों में भी लकड़ी के तीन २ टुकड़े थे, वह उनको बजाते और गाते जाते थे। श्री दरबार ने प्रसन्न होकर उन को ५ पाऊण्ड इनाम में दिये। उन्होंने अपनी भाषा में दरबार को आशिर्वाद दिया। श्रीदरबार १० बजे मोरेलाज वापिस पधारे।

ता. २२ जून। कर्ज़न वायली साहिब और जैकब साहिब के साथ श्रीदरबार वेस्ट मिन्स्टर ऐबी का गिरजा देखने पधारे। यह गिरजा घर शहर लण्डन से कुछ दूर टेम्सनदी के किनारे क्रास की शकल का बना हुआ है और अत्यन्त मनोहर व देखने योग्य है। सब से पहिले बादशाह ऐडगर ने इसे शहर वैस्टमिन्स्टर में तैयार कराया था। पुनः इङ्गलिस्तान के अन्य बादशाहों ने बहुत द्रव्य ख़र्च कर के और भी विशाल व मनोहर बनवा दिया। इस स्थान की ऊंचाई व इस के लम्बे २ बरामदे शाहाना ख़ूबसूरती से देखने योग्य हैं। सच तो यह है कि यह भी शहर लण्डन के सुप्रसिद्ध स्थानों में से एक ही देखने योग्य स्थान है। इस में दाख़िल होने पर इङ्गलिस्तान के विख्यात बादशाहों व अन्य न्याय शील व प्रसिद्ध जनों की क़बरों के कारण दर्शकों के चित्त पर एक विशेष प्रभाव पड़ता है और संसार की अनित्यता का चित्र आंखों के सामने खिच जाता है। इस ही स्थान पर वह शाही तख़्त मौजूद है जिस पर इङ्गलिस्तान के बादशाहों की ताजपोशी की प्रथा मनाई जाती है। और यहीं वह स्थान है जहां देश के धर्माचार्य व अन्य सुप्रसिद्ध जन लाकर मिट्टी में छुपादिये जाते है। चुनांचे इस समय तक क़रीब तेरह चौदह मलिका और

बादशाह और अलङ्क देश के प्रबन्ध कर्ता व अनेक बहादुर सेनापति आदि यहां पर दफ़न हो चुके हैं जिन में से कइ एक की तो मूर्तियां भी स्थापित की गई हैं।

ता. २३ जून। हिन्दुस्तान से बाबू संसारचंद्रजी की बनाई हुई वह पुस्तक विलायत पहुंची कि जिस में उन्हों ने महाराज साहिब का वृत्तान्त संक्षिप्त रीति से वर्णन किया था। महाराज साहिब ने उस को बहुत पसन्द किया और विलायत में अपने मित्रों में इस की प्रतियां तक़सीम फ़रमाईं।

ता. २४ जून से २६ जून।

श्रीसम्राट् महोदय के अचानक बीमार होने के कारण ताजपोशी का स्थगित होना।

सब से पहिले १४ जून को श्रीहुज़ूर सम्राट की तबियत कुछ बेचैन मालूम हुई। दूसरे दिन पेट के दर्द की शिकायत पैदा होगई परन्तु डाक्टरी चिकित्सा से आराम होगया। उस के बाद १९ जून को फिर कमर में दर्द होने लगा। तारीख़ २८ जून को डाक्टरों ने सावधानी से देखा तो मालूम हुआ कि दांई तरफ़ पेट में कुछ वरम है और नब्ज़ में भी कुछ हरारत मालूम पड़ी। उचित दवा का प्रयोग किया गया परन्तु व्याधि बढती ही गई और लाचार यह विचार स्थिर हुआ कि चीरा दिया जाय। श्रीहुज़ूर सम्राट ने इस को खुशी से मंज़ूर फ़रमाया लेकिन उन्हों ने यह विचारा कि ताजपोशी के उत्सव के स्थगित होने के कारण मेरी प्यारी प्रजा तथा अन्य देश देशान्तरों

से पधारे हुए निमन्त्रित राजा महाराजाओं के चित्त में किसी प्रकार की निराशा उत्पन्न न हो इस लिए यह ज़ाहिर किया कि मुझ को चाहे जिस प्रकार की कठिन चिकित्सा करानी पड़े परन्तु यह उत्सव न रुके और प्रजा-गण में किसी प्रकार का असन्तोष न हो। मैं खड़ा भले ही न हो सकूं परन्तु लेटे ही लेटे यह कार्य हो जावे। परन्तु डाक्टरों ने (ऐपैण्डिसाईटिस) नाम वीमारी का निदान कर के यह अर्ज़ किया कि किसी भी प्रकार की चेष्टा करना मर्ज़ को वढा देगा और देर करने में इस के अत्यन्त वढ जाने का भय है। मजवूर हुज़ूर सम्राट की मंजूरी से ता. २४ जून को यह घोषणा की गई कि वीमारी के कारण ता. २६ जून को उत्सव वन्द रहेगा। इस विषय में इण्डिया आफ़िस से जैकव साहिव को तार के द्वारा इत्तिला दी गई थी। उन्हों ने हुज़ूर साहिव की सेवा में उपस्थित हो कर अर्ज़ किया कि मेरे पास १ तार वकिङ्गाम पैलेस से आया है जिस में दरज है कि वकिङ्गाम पैलेस की दावत वन्द की गई परंतु इस का कारण तार में दरज नहीं था। साथ ही यह जनश्रुति सुनी गई कि सम्राट की वीमारी के कारण ताजपोशी बंद की गई। जव श्री दरवार को ख़ास वृतांत मालूम नहीं हुआ तो वड़ी चिन्ता रही। आप ने अपना मैडिकल अफसर डा. हेमचन्द्रसेन हाल जानने के लिए वकिङ्गाम पैलेस भेजा। जव पूरे हालात मालूम पड़े कि डाक्टर सर फ्रेडरिक ट्रविस साहिव (Sir Frederick Treves Esq., K. C. V. O., F. R. C. S.) ने जो सव से वड़े डाक्टर थे अपने हाथ से ऑप्रेशन किया और ५॥ पांच इञ्च गहरा ज़ख्म का देकर क़रीव ११ छटांक मवाद

निकाला। इस वृतान्त के प्रकट होने पर लण्डन के हर गली कूचे में उदासी छा गई। ऑप्रेशन के बाद जब हुजूर सम्राट को चेत हुआ तो आप ने हुजूर प्रिन्स आफ़ वेल्स को बुलाकर जो शब्द कहे वे यह हैं "मेरी प्रजा मुझे इस मजबूरी के लिए माफ़ करेगी"। उस दिन के बाद से सुबह दुपहर व सायङ्काल के समय श्री सम्राट के स्वास्थ्य के विषय में तीन परचे याने बुलैटिन प्रकाशित होने लगे। उस समय केवल इङ्गलिस्तान की प्रजा ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के राजा महाराजाओं ने भी हार्दिक प्रार्थना कर के सच्ची सहानुभूति का पूर्ण परिचय दिया। उपस्थित राजा महाराजा व अन्य महात्माओं को अधिक निराश न करने के विचार से हुजुर सम्राट ने आज्ञा फ़रमाई कि ता. १ और २ जोलाई की फ़ौजी रिव्यू ४ जोलाई का लैवी दरवार और ५ जोलाई की दावत वदस्तूर की जांय। सम्राट की बीमारी की श्रीदरवार को वड़ी चिन्ता रही प्रति दिन वही विचार चित पर रहता था। ताजपोशी रुक जाने के बाद भारतवर्ष के अन्य राजा महाराजा स्काटलैण्ड आदि दूर देशों की सैर करने चले गये थे। श्रीदरवार से भी इस विषय में कहा गया तो यही उत्तर फ़रमाया कि "जब तक हुजूर सम्राट को पूरी तरह आराम न हो जावे और मेरे चित्त से यह चिन्ता दूर न हो सैर तमाशे को मेरा जी बिल्कुल नहीं चाहता"। आप ने मुख्यता सब जगह की उस समय तक सैर बन्द रक्खी जब तक महाराज सम्राट को आराम न हो गया। आप करीब २ प्रति दिन वकिङ्गाम पैलेस में पधार कर श्रीसम्राट

की प्रकृति का हाल दर्याफ्त किया करते थे और विज़िटर बुक में दस्तखत किया करते थे और दिन रात अपने इष्टदेव श्री गोपालजी महाराज से दुआ मांगा करते थे कि श्रीमान् बादशाह सलामत को शीघ्र ही आराम हो। श्रीदरबार की प्यारी प्रजा भी श्रीमान् सम्राट के स्वास्थ्य लाभ के लिए जयपुर में प्रति दिन श्रीगोपालजी महाराज के चरणारविन्दों में प्रार्थना किया करती थी। इन ही दुआओं के प्रभाव से श्रीमान् सम्राट शीघ्र ही अच्छे होते गए। डाक्टरों की सम्मति से सामुद्रीय वायु सेवन के लिए श्रीमान् सम्राट समुद्र में पधारे। वहां कुछ समय तक जहाज़ में विश्राम किया। उन ही दिनों में तारीख़ २६ जून को जैकब साहिब को के. सी. आई. ई. का ख़िताब बख्शा गया। श्रीमान् दरबार ने उन को सब से पहिले मुबारकबाद दिया। इस ही तारीख़ को महाराज साहिब श्री ग्वालियर नरेश से मुलाक़ात करने पधारे और २७ जून को महाराज ग्वालियार मोरेलाज में पधारे और वहीं जीमन फ़रमाया।

स्पिटहैड में जहाज़ों का रिव्यू।

ता. ३० जून। इस दिन जहाज़ों का रिव्यू देखने के निमित्त २६ पास आये थे। वह श्रीदरबारने अपने अनुयायियों में वितीर्ण कर दिए। दरबार मोरेलाज से रवाना होकर इस्टेशन वाटरलू पर तशरीफ़ ले गए जहां से ट्रेन द्वारा ९॥ बजे पधारे। और साउदैम्प्टन के स्टेशन पर मिस बायली साहिबा, महाराज साहिब बीकानेर, महाराज कूचविहार और दूसरे यूरोपियन अफ्सरगण पहुंचे और वहां से सोलेन्ट में जा कर बैटिल शिप यानी जङ्गी जहाज़

हार्डिंज में सवार होकर स्पिटहैड तशरिफ़ ले गए । जहाज़ हार्डिंज बहुत से दूसरे जहाज़ों के बीच में होकर चल रहा था जो दूर तक फैले हुए थे। कुल जहाज़ों की चार श्रेणियां थीं इन में १०० जङ्गी जहाज़ थे जिन को देख कर इङ्गलिस्तान की सामुद्रीय शक्ति का पूर्ण अनुमान होता था। ९० मील से ज्यादा दूरी तक जहाज़ ही जहाज़ नज़र आते थे। स्पिटहैड जाने वालों को ३ विभागों में बांट दिया गया था, प्रथम भारतवर्षीय राजा महाराजा तथा इङ्गलिस्तान के प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध मनुष्य। दूसरे जहाज़ में कालोनियल साउथ अफ्रिकैन ट्रूप्स, तीसरे में हिंदुस्तानी सिपाही जो हैम्पडन कोर्ट में ठहरे हुए थे। इस समय न तो बारिश थी न अधिक सर्दी थी इस लिए समुद्र का दृश्य और उस के आस पास की शोभा बहुत ही सुन्दर मालूम पड़ती थी। समुद्र के किनारे पर दर्शकों की भीड़ लग रही थी। यूरोपियन जहाज़ पर हाईलैण्ड लाइट इनफैन्ट्री के दूसरे दस्ते का बैण्ड बाजा बराबर बज रहा था। टारपीडो बोट्स, डिस्ट्रायर्स, गनबोट्स, क्रूज़र्स, बैटिल शिप्स, और अन्य लड़ाई के जहाज़ों को देख कर हर एक को आश्चर्य होता था सम्पूर्ण जहाज़ वालों ने मिल कर एक सुरीली वाणी में "रूल ब्रिटेनिया" और फिर "गाड सेव दी किङ्ग" के सुप्रसिद्ध गीत का गान कर के सलामी उतारी। सिपाहियों के जहाज़ में ३० दस्ते उपनिवेशों की फ़ोज के थे। जो ४५ पृथक् २ जातियों से सम्बन्ध रखते थे। और इन सिपाहियों की विचित्र वरदी और तरह तरह के चहरों ने वहां के दृश्य को और भी अत्यन्त सुन्दर बना दिया था।

दरवार का जहाज़ हार्डिंज ३ बजे वापिस आया। स्पिटहैड में वापसी के समय स्पेशल ट्रेन क़रीव ५ बजे वाटरलू स्टेशन पर पहुंची। मिस्टर लारेन्स साहिव उस समय दरवार के साथ ही थे। इस ही तारीख़ को वादशाह आलम पनाह के आरोग्य लाभ के आनन्द में ३०० गैस के अलाव (वानफ़ायर्स) जगह २ जलाये गए थे कि जिस प्रकार फाल्गुन में होली जलाई जाती है उस ही समय डाक्टरों ने यह प्रकाशित कर दिया था कि अव श्रीमान् सम्राट वहादुर रोग से मुक्त होचुके हैं।

कालोनियल फ़ौज का रिव्यू।

ता. १ जोलाई। यह रिव्यू हार्सगार्ड्स पैरेड में ११ वजे होना नियत किया गया था। लेकिन महाराज साहिव प्रथम दिवस अधिक श्रम होजाने के कारण नहीं पधारे और इण्डिया आफ़िस से जो पास आये थे वे वावू संसारचन्द्रजी सेन, राजा उदयसिंहजी, ख़वास वालावख्शजी ख़वास रामकँवारजी और अन्य सरदारों में वितीर्ण करदीए। दरबार ११॥ वजे मोर्सिनेस आफ़ लैन्सडाउन से मिलने और उनके ऐटहोम (दावत) में शामिल होने के वास्ते पधारे। लार्ड लैन्सडाउन साहिव सन् १८८४ में भारतवर्ष में वाइसराय के पद को सुशोभित करचुके थे और उन दिनों में वे फ़ौरन आफ़िस (इलाक़े गै़र) के सेक्रेटरी थे। लेडी साहिवा ने यह ऐटहोम की दावत हिन्दुस्तान के राजा महाराजाओं तथा अन्य देशों के निमन्त्रित सज्जनों को दी थी। लेडी साहिवा दरवाज़े पर खड़ी सब का स्वागत कर रहीं थीं। और दरवाज़े पर भी आईरिश गार्डस का वेण्ड

बहुत सुरीली आवाज़ से बज रहा था। बाल रूम खूब सजाया गया था। नारवे स्विडिन श्याम के शाहज़ादे और क़रीब १५ भारतवर्ष के राजा महाराजा इस स्थान पर विद्यमान थे। शाही खानदान में से डयूक और डचैज़ आफ़ कैनाट भी वहां उपस्थित थे। श्री दरबार साहिब वहां पर बहुत देर मौजूद रहे। परन्तु जब दूसरे सज्जन रिफ्रैशमैन्ट में शामिल होने पधारे तो आप मोरेलाज वापिस आगए।

भारत वर्ष की सेनाका रिव्यू।

ता. २ जोलाई। यह रिव्यू स्थान हार्स गार्डस पैरेड में हुआ था। श्रीहुज़ूर साहिब उस में शामिल होने के वास्ते १०॥ बजे पधारे। महारानी अलैक्ज़ेन्ड्रा एक खुबसूरत जोड़ी की गाड़ी पर सवार होकर पधारी थीं। और शाही खानदान के अन्य सज्जन भी गाडी में सवार होकर शामिल हुए थे। हुज़ूर प्रिन्स आफ़ वेल्स भी वहा उपस्थित थे। फ़ौज हिन्दुस्तान के वालेंटियर्स, पैदल, सवार और तोप खाना सब वहां मोजूद थे। हिन्दुस्तान की फ़ोजों में से फ़र्स्ट ब्रेमन इनफ़ेन्ट्री, फ़र्स्ट मद्रास पायोनियर्स नं. ७, राजपूत इनफेन्ट्री, बङ्गाल इनफ़ेन्ट्री नं. ३१, पंजाब औटिलेरी, बङ्गाल लेन्सर्स वहां मौजूद थे। यह सब दृश्य एक अजब आनबान और ठाठ का था फ़ोजी अफ़सरों के सीनों पर तमगे चमक रहे थे। गोरखा देखने में छोटे मालूम होते थे परन्तु उनके क़दम, चहरों और हर एक चाल ढाल से वीरता टपकती थी। इस दिन की रिव्यू की सूचना सर्वत्र नहीं दी गई थी इस लिए बहुत से मनुष्य देखने नहीं जा सके।

पुलिस का प्रबन्ध अत्यन्त खूबी से किया गया था। लण्डन की पुलिस सम्पूर्ण संसार में प्रबन्ध के विषय में अद्वितीय है। लण्डन जैसे बहुत बड़े शहर में जहां पर असंख्य जन समूह तथा सवारी आदि के आवागमन के कारण अनेक प्रकार का भय होना सम्भव है वहां यह पुलिस के सुप्रबन्ध का ही परिणाम है कि जनता को किसी प्रकार का भय नहीं। पुलिस के सभी सिपाही बहुत मिलनसार व सहानुभूति रखने वाले होते हैं। साथ ही शहर के रहने वाले भी नियमों का पूरा पालन करते हैं। इस दिन के रिव्यू में हिन्दुस्तान के वह बहादुर सिपाही व अफसर भी मौजूद थे जो अफ्रिका के युद्ध में अपनी वीरता के कारण विजय प्राप्त कर आए थे। जब महाराणी साहिबा रिव्यू में पधारीं तो द्वार पर शाहज़ादे वेल्स ने उन का स्वागत किया फिर फौज का निरीक्षण किया गया। पश्चात् शाहज़ादे साहिब ने घोड़े से उतर कर अपने हाथ से भारतीय रईसों तथा उमरावों को पदक वितीर्ण किए। महाराज साहिब बीकानेर को भी एक पदक दिया गया था और उन को एक तमगा लड़ाई चीन के उपलक्ष में मिला था। दरबार १ बजे वापिस आये और फिर उस ही दिन ३ बजे श्रीमहाराणी की खिदमत में मिलने पधारे जहां १ रकाबी मीनाकारी की और १ प्याला जयपुर के कला कौशल के नमूने के तौर पर श्रीमती की भेट किए जिन को श्रीमहाराणी ने बहुत पसन्द किया और फरमाया कि हम इन दोनों चीज़ों को काफी पीने में प्रतिदिन काम में लेंगे। वहां से वापिस पधार कर फिर ९॥ बजे प्रिन्स आफ वेल्स से

मिलने के वास्ते राजा उदयसिंहजी को साथ ले कर यारक हाऊस पधारे जहां पर युवराज महोदय निवास करते थे।

ता. ३ जोलाई। ११ बजे के समय लार्ड रावर्ट साहिव जो भारतवर्ष के भूतपूर्व कमाण्डर-इन चीफ़ थे ऐचिन्सन साहिव और एक एडीकाङ्ग के साथ हुजूर साहिव से मुलाक़ात करने मोरेलाज में आए। हुज़ूर साहिव द्वार से ही साथ हो कर ड्राइङ्ग रूम में ले गए। रावराजाजी सीकर, वाबू संसारचन्द्रजी सेन, राजा उदयसिंहजी, ठाकुर साहिव चौमू, धनपतरायजी आदि उपस्थित थे। लार्ड-साहिव क़रीव १५ मिनट ठहरे और वापसी के समय श्री दरवार ने इत्र व माला से सत्कार किया। पश्चात् पौनेवारह वजे गाडी में सवार हो कर रावराजाजी सीकर, ठाकुर साहिव चौमू, हरिसिंहजी लाडखानी, धनपतरायजी और पृथ्वीसिंहजी के साथ विण्डसर कैसिल तशरीफ़ ले गए जो फ्रैगमूर स्थान में वना हुआ है। वहां पर लार्ड चर्च-हिल साहिव और अैशर साहिव स्वागत के लिए विद्यमान थे। उन्हों ने दरवार को वहां का सर्व दृश्य दिखाया। यह शाहन्शाह इङ्गलेण्ड का मुख्य स्थान है और यहां ही पर मलिका विक्टोरिया की क़ब्र है। यह क़ब्र वहुत ही सुन्दर वनी हुई है। इस के द्वार के दोनों तरफ़ दो फ़रिश्तों की मूर्तियां खड़ी हैं। एक के हाथ में शङ्ख और खजूर के पत्ते और दूसरे के हाथ में वाईविल की पुस्तक और तलवार हैं। यह दोनों मूर्तियां ईसाई धर्म के अनुकूल मोक्षपद का साधनस्वरूप समझी जाती हैं। थोड़ी सीढियां चढने के पश्चात् उस गुम्बज़ में पहुंचते हैं जहां मलिका विक्टोरिया

और उन के प्यारे पति प्रिन्स ऐल्वर्ट सदैव के लिए महा निद्रा में सो रहे हैं । इस क़ब्र की चरण चौकी के ऊपर दोनों की सङ्ग मर्मर की मूर्तियां लगी हुई हैं। महाराज साहिब बीकानेर ने जो उस समय वहां मौजूद थे मलिका विक्टोरिया की क़ब्र पर एक हार चढाया । इस ही स्थान के एक कोने में महारानी विक्टोरिया की पुत्री की भी क़ब्र है । इन सब क़ब्रों को देख कर प्रत्येक मनुष्य के चित्त में संसार की अनित्यता का चित्र खिच जाता है। यहां पर जो बादशाही महल बना हुआ है वह भी देखने योग्य है । इस विशाल भवन में इङ्गलिस्तान के प्राचीन बादशाह निवास किया करते थे । इस में भूतपूर्व बादशाह तथा अन्य नेताओं के चित्र उन के जीवनाकार समान बनवाकर लटकाए गए हैं । हर एक कमरा प्रयोजन वश बनवाया गया है । इन में से चार कमरे चार पृथक् २ रङ्ग लाल, पीला, हरा, व बनफ़शी रङ्ग के रेशमी वस्त्रों से ढके हुए हैं और उन में जितने पदार्थ रखे हुए हैं वह भी उस ही रङ्ग के हैं । इस भवन में एक छोटा सा गिरजा भी बना हुआ है जिस में मलिका विक्टोरिया ऐतवार को नमाज़ पढने जाया करती थीं । यहां की सैर के अनन्तर हुज़ूर पुरनूर ईटन कालेज पधारे । वहां के स्कूल को देख कर श्री दरबार बड़े प्रसन्न हुए। सात बजे श्रीदरबार वापिस मोरेलाज पधारे । फिर पौने दो बजे लेडी राबर्ट साहिबा के "ऐट होम" में शामिल होने के लिए पधारे जहां पर भारतवर्ष के राजा महाराजा व इङ्गलिस्तान के रईस उमराव अधिक संख्या में उपस्थित थे ।

हुज़ूर प्रिन्स आफ़ वेल्स का लेवी दरबार।
स्थान इण्डिया आफ़िस।

ता. ४ जोलाई। यह दरबार बहुत बड़े समारोह से किया गया था। इस के लिए बहुत पहिले से प्रबन्ध हो रहा था। हिन्दुस्तान के राजा महाराजाओं और सैनिक अफ़सरों के अतिरिक्त दूसरे मुल्कों के प्रतिष्ठित मेहमान आदि भी इस में शामिल किए गए थे। इण्डिया आफ़िस स्वयं एक बहुत सुन्दर स्थान है। इस के मध्य में जो शामियाना खड़ा किया गया था और जो मुख्यतया देखने योग्य था उस में पुष्पों की सजावट बहुत ही चतुराई से की गई थी। स्थान २ पर बहुत ही सुन्दरता तथा समान दूरी पर बर्फ़ के कृत्रिम पहाड़ बनाये गए थे। जिन के मध्य में बड़े सुन्दर वृक्ष लगाए गए थे। जिस कोर्ट में इस दरबार का प्रबन्ध किया गया था वह एक सुन्दर तीन मनज़िल की इमारत थी जिसमे असंख्य महरावें और द्वार बनेहुए थे। तीसरी मनज़िल पर सुर्ख ग्रेनाइट की जड़ाई हो रही थी। ऊपर की महरावों में और ताकों में इङ्गिस्तान के उन फ़ौजी और सिविल अफ़सरों की मूर्तियां लगीहुई थीं जो इङ्गलिस्तान के इतिहास में अपने यश के द्वारा विख्यात हैं। इस कोर्ट के ऊपर मोटे काच की छत थी। जिसे इस चतुराई से ढक दिया था कि भारतवर्ष का नीला आसमान मालूम पड़ता था। इस में ज्योतिर्मण्डल के चन्द्र, सूर्य आदि ग्रह और तारागण भी यथा स्थान चमकते हुए दिखलाई देते थे। असंख्य बिजली की बत्तियां लगी हुई थीं जिन का प्रकाश कृत्रिम बर्फ़ के पहाड़ों पर तिरकर

एक अपूर्व शोभा को दिखला रहा था। कुर्सियों पर रेशमी पोश चढ़े थे। महल के बीच में सुर्ख कालीन का फ़र्श था। फूल और गुलदस्तों की सजावट से इङ्गलिस्तान के कारीगरों की कुशलता का पूर्ण परिचय मिलता था। इन गुलदस्तों और फूलों को छानती हुई बिजली की रोशनी अद्भुत प्रकार से जगमगाती थी। ऐसे सजे हुए शानदार महल के अन्दर पूर्व की ओर एक रत्नजटित तख्त रक्खा हुआ था जिस पर श्रीहुज़ूर प्रिन्स आफ् वेल्स सुशोभित होने वाले थे। उस तख्त पर क़िरमज़ी रङ्ग का चन्द्रवा लगा हुआ था और अन्दर सफ़ेद साटन का फ़र्श बिछा हुआ था। तख्त के प्रत्येक कोने में शाही ताज बने हुए थे। पृथक् २ पोशाकों के ज़र्क़ बर्क़ सवारों और पैदलों के मध्य में हो कर निमन्त्रित भारतवर्ष के राजा महाराजा व इङ्गलिस्तान के बड़े २ अमीर सरदार आदि महल में दाख़िल हो रहे थे उस दिन भारतवर्ष के राजा महाराजाओं में हमारे श्री अन्नदाताजी की छटा अवश्य ही दर्शनीय थी। आप ने कसूमल खूंटेदार पाग धारण कर रक्खी थी। सरपेच पर ज़री का काम हो रहा था। जामे के साथ पीठ पर ढाल लटक रही थी और विशाल वक्षस्थल बहुमूल्य आभूषणों व तमग़ों से जगमगा रहा था। चार सरदार-ठाकुर साहिब चौमू, रावराजाजी सीकर, बाबू संसारचन्द्रजी और राजा उदयसिंहजी उस ही प्रकार सजे हुए आप के साथ थे। क़रीब ११॥ बजे हुज़ूर प्रिन्स आफ् वेल्स प्रथम रायल ड्रैस में पधारे। उन्हों ने ऐडमीरेल की पोशाक धारण कर रक्खी थी। शाहज़ादी साहिबा वेल्स ने हलके नीले रङ्ग का गाऊन धारण कर रक्खा था। उन के सर पर एक अद्भुत

चमकदार हीरा व गले में बहुमूल्य मोतियों का हार चमक रहा था। शाहज़ादे साहिब के पधारने पर बैण्ड और दूसरे बाजों ने शाही व राष्ट्रीय सङ्गीत द्वारा बजा करसलामी उतारी। इस के बाद हुजूर प्रिन्स आफ़ वेल्स की सेवा में भारतीय रईसों ने सविनय प्रणाम आदि निवेदन किया। ड्यूक आफ़ कैनाट भी आप के साथ थे। फिर भारतवर्ष की सेना के बड़े २ अफ़सर क्रमशः आगे बढ़ कर अपने लघुत्व तथा प्रिन्स आफ़ वेल्स के महत्व को प्रगट करते हुए तलवारें पेश करते गए। शाहज़ादे साहिब प्रसन्नता पूर्वक उन की मूँठ पर हाथ रखते जाते थे। इस दरबार से इङ्गलिस्तान का महत्व पूर्णरूप से प्रमाणित हो रहा था। क़रीब ३००० महमान अन्यान्य देशों तथा पृथक् २ जातियों व लिबासों के मनुष्य एक ही स्थान पर समलंकृत थे। आधी रात के बाद दरबार का कार्यक्रम समाप्त होने पर रिफ्रेशमैन्ट के लिए सम्पूर्ण निमन्त्रित सज्जनों सहित प्रिन्स आफ़ वेल्स पधारे। इधर श्रीहुजूर साहिब शाहज़ादे साहिब से हाथ मिला कर वापिस पधारे जिन्हों ने इस दरबार को अपने नेत्रों से देखा है वह इस दरबार का चित्र अपने हृदय मन्दिर से कभी नहीं हटा सके। सब को केवल यही अफ़सोस था कि हुजूर सम्राट बीमारी के कारण इस में शामिल न हो सके।

ग़रीबों की दावत।

ता. ५ जोलाई! हुजूर बादशाह साहिब ने ताजपोशी की खुशी में ग़रीबों को खाना खिलाने का प्रबन्ध कराया था। यद्यपि बीमारी के कारण ताजपोशी के अन्य कार्य रोक दिये गए थे परन्तु बादशाह सलामत

ने यह मन्जूर नहीं फ़रमाया कि ग़रीबों का भोजन बन्द रक्खा जाय। बस उन की इच्छानुसार क़रीब ५०००००) पांच लाख ग़रीबों को पृथक २ स्थानों में भोजन कराया गया था। स्वयं हुजूर प्रिन्स आफ़ वेल्स और शाहज़ादी साहिबा व डयूक आफ़ केनाट भोजन का प्रबन्ध देखने पधारे। इस दावत में क़रीब ४०००००) रुपये ख़र्च हुए। पांच प्रकार का भोजन खिलाया गया था। मेवेजात के अतिरिक्त स्वादिष्ट अर्क़ व शरबत आदि का भी प्रबन्ध किया गया था। यतीम ख़ानों और ग़रीब ख़ानों में जहां का तहां भोजन का सामान भेज दिया गया था ताके एकही स्थान पर इकट्ठे होने से अधिक भीड़ भाड़ न हो और किसी को तकलीफ़ न हो और प्रत्येक आदमी आराम के साथ भोजन कर सके। इस अवसर पर ग़रीब से ग़रीब मनुष्य को भी श्रीमान् प्रिन्स आफ़ वेल्स से तथा अन्य सरदारों से प्रत्यक्ष प्रणामादि का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इस ही तारीख़ को श्रीहुज़ूर साहिब १०। सवा दस बजे प्रथम कर्ज़न वायली साहिब के पास गए और फिर उन को साथ लेकर डयूक और डचेज़ आफ़ केनाट से मिलने पधारे। वहां पर आप ने दो मीनाकारी की डिब्बी और एक सिगरेट बाक्स और एक पानदान नज़र किया जिस को डयूक साहिब ने बहुत पसन्द फ़रमाया।

ता. ६ जोलाई। श्री अन्नदाताजी ४॥ बजे **जूलाजिकेल गार्डन** देखने के लिए पधारे। यह बाग़ रीजैन्ट पार्क में स्थित है। यहां पर असंख्य मनुष्य रात दिन वायु सेवन करते दिखलाई देते हैं। इस में संसार के देखने

योग्य मशहूर २ जानवर बड़ी २ युक्तियों द्वारा रक्खे गए हैं। पोलर बेयर (रीछ) जो अत्यन्त शीतल देश का प्राणी है बर्फ के मकान में रक्खा जाता है। अफ्रिका के सिंह को बिजली के द्वारा आवश्यकतानुसार गरमी पहुंचाई जाती है। हाथी सम्पूर्ण यूरोप में कहीं देखने में नहीं आता परन्तु यहां बाग़ में बड़े प्रबन्ध के साथ रक्खा जाता है। सांप नाना प्रकार के बड़ी युक्तियों द्वारा पाले जाते हैं। दरबार सामुद्रीय शेर, हिपोपोटेमिस और जिराफ़ी आदि को देख कर बहुत प्रसन्न हुए। दरयायी शेर का जीवन मछलियों के आधार पर है। वहां के समस्त जानवरों के वास्ते उन के इच्छानुकूल भोजन व स्थान आदि का प्रबन्ध बड़ी चतुराई से किया जाता है।

ता. ७ जोलाई। श्रीहुज़ूर साहिब लार्ड रिपन साहिब से मुलाक़ात करने पधारे। यह हिन्दुस्तान में सन् १८८० से सन् १८८४ तक वाईसराय रह चुके थे।

ता. ८ जोलाई। २ बजे के लग भग हुज़ूर साहिब औन्सिलो पैलेस (Onslow Palace) तशरीफ़ ले गए और वहां से कर्ज़न वायली साहिब को साथ ले कर मार्लबरा हाऊस पहुंचे और वहां हुज़ूर शाहज़ादे साहिब से बहुत देर तक बात चीत होती रही। उस ही समय आप ने हिन्दुस्तान आने का वृतान्त कहा उस रोज़ नव्वाब साहिब बहादुर फ़ैयाज अली खांजी फिर दरबार की सेवा में उपस्थित हुए।

ता. ६ जोलाई। इस दिन कोई मुख्य वृतान्त लिखने योग्य नहीं हुआ। हुज़ूर साहिब के अनुयायी सरदार गण चिल्डरेन ओरकेस्टरा (Children Orchestra) देखने पधारे।

ता. १० जुलाई । २ बजे पश्चात् श्री दरबार अपने अनुयायीगणों सहित कारोनेशन बाज़ार देखने पधारे। जिस का उद्घाटन स्वयं श्रीमती मलिका मोअज़्ज़मा ने फ़रमाया था। उन के बाज़ार में पहुंचने पर बैण्ड बाजा प्रारम्भ होगया। डयूक और डचेज़ आफ़ फ़ाईफ़ और डयूक व डचेज़ आफ़ टैक ने द्वार पर मलिका मोअज़्ज़मा का स्वागत किया। वहां से वह रायल स्टेशन रूम में तशरीफ़ ले गईं। उस रोज़ की सजावट में अधिकतर बैंगनी रङ्ग से काम लिया गया था जो मलिका मोअज़्ज़मा को बहुत पसन्द था। यह बाज़ार बीमार बच्चों के आरोग्य लाभ के लिए अस्पताल की सहायता के निमित्त लगाया गया था। दूकानें काठ की बनी हुई थीं और लण्डन के मशहूर २ सौदागरों ने अपनी ब्रांच के तौर पर वहां दूकानें खोल दी थीं। दूकानों में अतीव सुन्दर लेडियां सामान बेच रही थीं। इस बाज़ार में सामान मंहगा बेच कर उस से जो लाभ हुआ वह बच्चों के अस्पताल के काम में लाया गया था।

ता. ११ जुलाई । ३ बजे बाद हुज़ूर साहिब उन्नीस सहानुगामियों के सहित पैरिस एगज़ीबीशन देखने **क्रिस्टैल पैलेस** पधारे। क्रिस्टैल पैलेस (अर्थात बिल्लोर का महल) शहर लण्डन से लगभग ७ मील की दूरी पर है। लण्डन के समीप इस से अधिक मनोरंजक और सुखद कोई अन्य स्थान नहीं है। यहां प्रत्येक मनुष्य तातील के दिन बहुत आनन्द से व्यतीत कर सकता है। शीतल, मन्द और सुगन्धित वायु से चित्त प्रफुल्लित होजाता है।

यहां पर आरगन बाजा निहायत उम्दगी के साथ बजाया जाता है। हज़ारों स्त्री पुरुष एकत्रित होकर सुरीली ध्वनी से गायन करते हैं। यहां पर फूलों की प्रदर्शनी भी देखने योग्य होती है। गर्मी के मौसम में प्रत्येक बृहस्पतिवार ऐसी आतिशबाज़ी चलाई जाती है जैसी कि दरबार ताजपोशी के समय पर चलाई गई थी। आतिशबाज़ी में फ़व्वारों का छूटना, आग की चादर का गिरना, फूलों का निकल कर खिलजाना, आसमान में तख्त पर बादशाह सलामत की ताजपोशी होना इत्यादि बहुत से सुन्दर २ तमाशे दिखलाई देते हैं। तस्वीरों की प्रदर्शनी भी जो पिक्चर गैलेरी कहलाती है देखने योग्य है। क्रिस्टल पैलेस के प्रत्येक भाग कोर्ट कहलाते हैं। एक स्थान पर देखा गया कि एक चबूतरे पर आग जल रही थी और उस की झलों में एक सुन्दर स्त्री बैठी हुई थी जिस का आधा अङ्ग अच्छी तरह दिखाई दे रहा था। दरयाफ्त किया गया तो उस ने उत्तर दिया कि मैं एक फ्रान्सीसी लेडी हूं। मुझे इस जलती हुई अग्नि में बिलकुल तकलीफ़ नहीं है। दूसरे स्थान पर साधारण ऊँचाई का एक बुर्ज बहुत सुन्दर बना हुवा था उस के ज़ीने पर चढ़कर ऊपर पहुंचने से ऐसा मालूम होता था मानों फ्रान्स देश में ही पहुंच गये। और उस के एक मैदान में वह लड़ाई होती दिखाई देती थी जो नैपोलियन बोनापार्ट और अंग्रेज़ों के दरमियान में सन् १८१५ में वाटरलू स्थान में हुई थी। इसही प्रकार के क्रिस्टल पैलेस में और भी अनेक अद्भुत कौतुक देखने में आते हैं। इस ही तारीख़ को श्री दरबार ७ बजे से ८ बजे तक थियेटर

का तमाशा देखने गये। थियेटर के तमाशे प्रतिदिन आश्चर्य जनक होते रहते हैं। प्रत्येक कम्पनी एक ही तमाशे को एक सप्ताह तक बराबर करती है।

ता. १२ जुलाई। लग भग ७ बजे श्रीदरबार लण्डन हिपोड्राम (London Hippodram) देखने पधारे जहां ७ आदमियों के वास्ते बक्स रिजर्वड करा लिये गये थे। फिर कर्नल जैकब साहिब, ठाकुर साहिब चौमू और रावराजाजी सीकर के साथ लार्ड किचनर साहिब भूतपूर्व फ़ौजी लाट हिन्दुस्तान का स्वागत करने पैडिङ्गटन स्टेशन पधारे। शहज़ादे साहिब प्रिन्स आफ़ वेल्स और लार्ड राबर्ट साहिब भी स्टेशन पर विद्यमान थे। स्टेशन से बकिङ्गाम पैलेस तक फ़ौज पंक्ति बद्ध खड़ी थी। लार्ड किचनर साहिब से स्वयं शाहज़ादा साहिब ने मुलाक़ात कराई। रास्ते में स्थान स्थान पर जनता की भीड़ हो रही थी। क़दम क़दम पर चियरस (Cheers) दी जा रही थी, बैण्ड में "सी दी कोन्करिङ्ग हीरो कम्स," की गीति बजा कर सलामी उतारी जा रही थी। सुन्दर झन्डियां बाज़ारों में फहरा रही थीं। लाट साहिब ऐफ्रिका की लड़ाइ जीत कर आये थे। इस स्वागत से यह प्रगट होता था कि योरुप वाले अपने देश के वीरों का कितना सम्मान करते हैं।

ता. १३ जुलाई। डावेजर काऊन्टेस मेयो से मिलने श्रीदरबार कर्नल जेकब साहिब और बाबू संसारचन्द्रजी के साथ पधारे। इस ही दिन कर्नल बायली साहिब ने मोरेलाज में पधार कर हुज़ूर शाहज़ादे साहिब वेल्स और शाहज़ादी साहिबा वेल्स की तसवीरें पेश कीं जो उन्हों ने हुज़ूर

साहिब के वास्ते भिजवाई थीं । इस से श्रीमानों की विशेष कृपा प्रगट होती थी ।

ता. १४ जुलाई । श्रीदरबार लगभग पौन बजे ऊलविच आर्सिनेल (तोप खाना) देखने के लिए पधारे । और सवा दो बजे वहां पहुंचे । वहां एक बहुत बड़ी तोप चलवाकर देखी जो कारडाईट भर कर चलाई गई थी । दूसरी अन्य तोपों की भी इस ही प्रकार से परीक्षा की गई । यह तोप बहुत जल्द और वैज्ञानिक रीतियों से चलाई जाती थी । वहां जो अफ़सर मौजूद थे उन्हों ने वहां की प्रत्येक वस्तु बहुत अच्छी तरह से दिखलाई । वहां से वापिस आकर श्रीदरबार काऊन्टेस राबर्टस के 'ऐट होम' में पधारे जहां पर वाईकाऊन्ट किचनर से भी भेंट हुई ।

ता. १५ जुलाई । पूर्व रात्रि को कर्ज़न वायली के पास से एक पत्र आया था जिस में लिखा था हुजूर महारानी अलेग्ज़ैण्डरा साहिबा हुजूर साहिब की एक तसवीर चाहती हैं । इस लिये कर्नेल जैकब साहिब श्रीदरबार की तस्वीर ले कर इण्डिया आफ़िस गये । जनरल बेनन साहिब भूतपूर्व रैज़ीडैन्ट जैपुर ने मये अपनी दो लड़कियों के मोरेलाज में पधार कर लञ्च लिया ।

ता. १६ जुलाई । कोई विशेष लिखने योग्य बात नहीं हुई ।

ता. १७ जुलाई । सर राबर्ट क्रास्थवेट साहिब भूतपूर्व ए. जी. जी., राजपूताना, दरबार से मिलने पधारे । इस के उपरान्त हुजूर साहिब रायल थियेटर देखने डूरीलैन पधारे ।

ता. १८ जुलाई । कुच्छ काल नव्वाब साहिब के साथ वार्तालाप में व्यतीत किया और सायङ्काल **ऐल्हम्बरा थियेटर** देखने पधारे । वहां से रात्रि के १२ बजे वापिस पधारे ।

ता. १६ जुलाई । सात बजे दरबार ने **लफ़ेटी और डाउन्नी** फ़ोटोग्राफ़र्स से तसवीर खिचवाई । उस समय सादा पोशाक धारण कर रक्खी थी । इस ही दिन मारकुइस आफ़ सैलिसबरी (Marquis of Salisbury) से मिलने पधारे और वहां पर गार्डन पार्टी में भाग लिया ।

ता. २० जुलाई । महाराज साहिब बीकानेर और कप्तान काक साहिब और **मिस्टर कूपर** साहिब ६ बजे दरबार से मिलने पधारे ।

ता. २१ जुलाई । पौने चार बजे प्रथम बकिङ्गाम पैलेस पधारे, फिर महाराज साहिब बीकानेर से विण्डसर होटल में जा कर मिले और कुच्छ काल ठहर कर लार्ड रिपन साहिब, (Lord Ripon) लार्ड वैनलाक साहिब और कर्नल प्रीडू साहिब से मिलने पधारे और अपनी अकसी तसवीरें लार्ड रिपन साहिब और दीगर साहिबों के पास भिजवाई ।

ता. २२ जुलाई । वेलग्राम स्क्वायर में पधार कर वाईकाऊण्ट किचनर साहिब (Major General Lord Kitchner) से भेट की । लाट साहिब के सेक्रेटरी ने दरबार का दरवाजे पर स्वागत किया और लाट साहिब अत्यन्त प्रेम के साथ मिले । बाबू संसारचन्द्रजी सेन आप के साथ थे ।

ता. २३ जुलाई । कोई लिखने योग्य बात न हुई।

ता. २४ जुलाई । लार्ड विशाप साहिब की गार्डन पार्टी में भाग लेने के लिए फ़िलहम पैलेस पधारे । वहां पर पादरियों की बहुत अधिकता थी । वहां से लार्ड हैरिस साहिब से मिलने पधारे । उन्हों ने अत्यन्त प्रेम के साथ दरवाज़े से स्वागत किया । कुछ देर ठहर कर वहां से प्रस्थान किया । फिर उपरोक्त लाट साहिबान ने एक गुलाब के फूलों का गुलदस्ता श्री जी के नज़र किया । मार्ग में बैनरमैन साहिब (Col. Bannerman) से भेंट की जो समीप ही नं. ८ समर पिलेस में उतरे हुए थे। वहां से साढे सात बजे मोरेलाज वापिस पधारे ।

ता. २५ जुलाई । दो बज कर १५ मिनट पर लण्डन हास्पिटेल देखने पधारे । हास्पिटेल के एक बड़े अफ़सर ने सवारी से उतरने पर स्वागत किया । यहां की इमारत भी लण्डन की देखने योग्य इमारतों में गिनी जाती है । यहां ग़रीबों का इलाज मुफ्त किया जाता है । हास्पिटेल का कुल ख़र्च पब्लिक के चन्दे से चलता है । सब से पहिले दरबार ने "एक्सीडैण्ट्स वार्ड" मुलाहिज़ा फ़रमाया जिस में लगभग ६४ रोगी थे और तमाम सरजरी के इलाज के अन्दर थे । मरीज़ों के आराम का पूरा इन्तज़ाम था । फिर "टयूबरकोलेसि वार्ड" में पधारे । वहां पर मरीज़ों का इलाज इलैक्ट्रिक रेज़ से किया जाता है । मरीज़ों में ज्यादातर स्त्रियों की गणना थी । वहां के रजिस्टरों से प्रगट हुआ कि गतवर्ष में अर्थात् सं. १९०१ में उस शफ़ाखाने से लगभग १५०० मरीज़ों को आरोग्यता

प्राप्त हुई। इस के पश्चात् दरबार "इन्फेण्ट वार्ड" में पधारे। जहां पर केवल उन छोटे २ बच्चों का इलाज होता है जिन की उम्र ३ महीने से ६ वर्ष के अन्दर २ होती है। इसे देख कर महाराज अत्यन्त हर्षित हुऐ। रोगी बच्चों की संभाल सुधार वहां की दाइयां ही करती हैं। माता पिता केवल सप्ताह में दो वक्त संभालने जाते हैं। फिर ज्यूईश वार्ड का निरीक्षण किया। वहां से वापिस आकर लगभग ७ बजे सर आरनेस्ट कैसिल से मिलने पधारे। लार्ड सैलिस्बरी साहिब (Marquis Salisbury) ने एक फ़ोटो प्रदान किया।

ता २६ जुलाई। दरबार रायल ओपैरा का तमाशा देखने पधारे। उस दिन "रोमियो और जूलियट" का तमाशा था। तमाशा फ्रैञ्च भाषा में था। यद्यपि गाना और उन की वार्तालाप समझ में नहीं आती थी तथापि यह तमाशा अत्यन्त मनोरंजक था। तमाशा देख कर दरबार १२ बजे पधारे। इस ही तारीख को श्रीमान् सम्राट ने अपनी ताजपोशी की तारिख ९ अगस्त नियत कर के उस को प्रगट कर दिया। यह समाचार फ़ौरन अख़बारों में छपवा दिया गया और शहर की सजावट के इन्तज़ामात बदस्तूर आरम्भ हो गये।

ता. २७ जुलाई। लार्ड हैरिस साहिब Lord (Haris G. C. S. I., G. C. I. E.,) और लैफ्टिनेण्ट कर्नल बैनरमैन (Col. Bannerman) साहिब के पास महाराज साहिब ने अपनी तसवीरें भिजवाईं। इस ही दिन कँवर सर हरनामसिंहजी जो रियासत कपूरथला

ताल्लुक़ा अवध के सम्बन्धी थे दरबार से मिलने पधारे।

ता. २८ जुलाई। साढे सात बजे रायल ओपैरा देखने पधारे।

ता. २९ जुलाई। ठाकुर साहिब चौमू, राजा उदयसिंहजी, ठाकुर हरीसिंहजी, बाबू संसारचन्द्रजी, पं० मधुसूदनजी, डाक्टर हेमचन्द्रजी, डाक्टर दलजङ्गसिंहजी, और रामप्रसादजी हाऊस आफ़ कामन्स देखने गए। इस ही दिन हाऊस आफ़ लार्डस भी मुलाहिज़ा किया। श्रीहुजूर साहिब कर्नल जैकब साहिब और पृथ्वीसिंहजी के साथ सरचार्लस इलयट (Charles Eliot) लैफ्टिनेन्ट गवर्नर बंगाल से मिलने व्हीम्बिल्डन स्थान पर पधारे। वह अत्यन्त महरबानी के साथ पेश आये और उन्हों ने अपना बाग दिखाया।

ता. ३० जुलाई। साढे पांच बजे जनरल स्टेड मैन साहिब Maj. Gen. Sir. Edward Stedmans C. B. K. K. C. I. E., से मिलने के लिये ग्रेट कम्बरलैंड पैलेस पधारे वहां से विज़िटर बुक में हस्ताक्षर करने के लिये बकिङ्घाम पैलेस पधारे। उस के बाद सिसिल होटल में पधारे जहां पर सार्लबरा कालेज की तरफ़ से डिनर दिया गया था। इस ही दिन बाबू अविनाशचन्द्रजी और पण्डित मधुसूदनजी केम्ब्रिज यूनीवर्सिटी देखने गये। श्रीहुजूर साहिब ने विद्योन्नति के लिए जो स्कूल और कालेज खोल रक्खे हैं वह किसी से छिपे नहीं हैं। उस ही तरह जयपुर के पण्डितों की कीर्त्ति भी दूर २ के देशों में फैली हुई है। इस लिए जब इङ्गलेण्ड के विद्वानों को पण्डित मधुसूदनजी का विलायत

पहुंचने का हाल मालूम हुआ तो उन्हों ने पण्डितजी को केम्ब्रिज यूनीवर्सिटी में भेजने के लिए आज्ञा मांगना आरम्भ किया। जब महाराज की आज्ञा से पं. मधुसूदनजी और बाबू अविनाशचन्द्रजी यूनीवर्सिटी में पहुँचे तो सब लोग बहुत प्रसन्न हुए। पण्डितजी वहां पर प्रोफ़ेसर मैक्डोनल साहिब (Macdonnell) से भी मिले। प्रोफ़ेसर साहिब ने ही आप को यूनीवर्सिटी की सैर कराई। पंडितजी की संस्कृत विद्या और उन की चित्ताकर्षक वार्तालाप से प्रोफ़ेसर साहिब बहुत ख़ुश हुए और श्रीहुज़ूर साहिब को भी यूनीवर्सिटी में बुलाने की उन की लालसा हुई और इस के लिए वह प्रार्थी हुए। अन्त में हुज़ूर साहिब सहमत होगये और २० अगस्त को श्री जी का वहां पधारना निश्चित हुआ जिस का पूरा हाल उस तारीख़ में लिखा जायगा। इस ही तारीख़ को श्रीमहाराज साहिब ने ठा. पृथ्वीसिंहजी को अरबी घोड़े और बछेरे देखने के लिए स्टड में (Stud) भेजा।

ता. ३१ जुलाई। सवा नो बजे गाड़ी में सवार हो कर पैन्क्रास स्टेशन पर पहुंचे। वहां फ़र्स्ट क्लास गाड़ी रिज़र्व की हुई मौजूद थी। कर्नल जैकब साहिब, बाबू संसारचन्द्रजी, ख़वास बालाबख्शजी, नाज़िर गुलामरहमानजी और दीगर चार ख़िदमतगार आप के साथ गये थे। पैन्क्रास से १०। बजे रवाना हो कर एक बज कर ५० मिनट पर डरबी पहुंचे जहां पर लार्ड सियर्सडेल साहिब (Rev. Lord Searsdale) ने दो गाड़ियां भिजवा दी थीं। इन गाड़ियों में सवार हो कर श्री जी कैडल होटल पहुंचे जो क़रीब पाँच मील दूर था।

दरवाज़े खुलते ही बहुत से घोड़े और हिरन पार्क में उछलते कूदते दिखलाई दिए । वहां एक चश्मा भी बह रहा था । यह लार्ड साहिब, लार्ड कर्ज़न साहिब के पिता थे । लाट साहिब ने हुज़ूर साहिब का बहुत सम्मान के साथ स्वागत किया और स्वयं अपनी दो लड़कियों सहित साथ रह कर कोठी को मुलाहिज़ा कराया ।

ता. १ अगस्त । २॥ बजे गाड़ी में सवार होकर श्रीदरबार लार्ड लैन्सडाऊन साहिब (Marquess Lansdowne K. G., G. C. M. G., G. C. S. I., G. C. I. E.,) सेक्रेटरी फ़ारेन अफ़ेयर्स से मिलने बर्कले स्क्वायर पधारे । यह लार्ड साहिब पहिले हिन्दुस्तान में वाईसराय रह चुके थे । लाट साहिब श्रीजी से बहुत प्रेम से मिले और अपनी और अपनी लेडी की तस्वीर दरबार को दी । इस ही दिन दी राईट आनरेबिल लार्ड जार्ज हैमिल्टन साहिब सेक्रेटरी हिन्दुस्तान और लेडी ब्रेडफ़ोर्ड साहिबा ने मोरेलाज में पधार कर मुलाक़ात बाज़दीद फ़रमाई ।

ता. २ अगस्त । दो बजे बाद हुज़ूर साहिब सेन्ट पङ्क्राज़ स्टेशन पर पधारे । जहां पर सर अरनैस्ट कैसिल साहिब (Sir Ernest Cassel, K. C. M. G.) के आदमी दरबार का सम्मान करने के लिए पहिले से ही उपस्थित थे । एक स्पैशल फ़र्स्ट क्लास, एक थर्ड क्लास और एक लगेजवान रिज़र्व कर लिए गए थे । महाराज प्रतापसिंहजी भी उस ही स्पैशल से जाने के लिए वहां मौजूद थे । वहां की रेल गाडियां खूब सजी

होती हैं । हर एक गाडी की आलमारी के अन्दर हर तारीख़ के ताज़ा अख़बार रक्खे रहते हैं जिन को यात्री सफ़र में पढ़ कर वहीं रख जाते हैं । योरुप की पब्लिक अख़बार पढने की बहुत इच्छुक होती है । रेल्वे लाईनों की शहर लण्डन में इतनी अधिकता है कि उस से वहां की भूमि एक लोहे का जाल बन गई है । शहर लण्डन के प्रत्येक स्थान में रेल के तारों का जाल आसमान के नीचे तना हुआ दिखलाई देता है । शहर में चार प्रकार की रेल चलती हैं । एक ज़मीन से इतनी ऊंची है कि बाज़ २ जगह मकानों की छतों पर और पुलों के ऊपर हो कर गुज़रती है । दूसरी ज़मीन की सतह के बराबर २, तीसरी ज़मीन की सतह से कुछ नीचे और चौथी ज़मीन के बिल्कुल नीचे चलती है जिसका हाल आगे बयान किया जायगा । महाराज साहिब की स्पैशल न्यू मार्केट में पांच बज कर दस मिनट पर पहुँची । स्टेशन पर सर अरनेस्ट कैसल साहिब मय सवारियों के मौजूद थे । वहां से रवाना हो कर **ग्रेफ़टन** हाउस पहुँचे जो दरबार के ठहरने के लिए नियत किया गया था । वहां से सर अरनेस्ट कैसिल साहिब की कोठी पधारे । जहां लगभग चार पांच और मेहमान भी थे । आठ बजे रात तक लाट साहिब दरबार से बातें करते रहे । उस के पश्चात् ग्रेफ़टन हाऊस पधारे ।

ता. ३ अगस्त । दूसरे दिन ११ बजे मिस्टर फ़ैलिक्स कैसिल जो सर अरनेस्ट कैसल साहिब के भतीजे थे एक मोटर ले कर आए । मोटर के अलावा सहानुगामियों

के वास्ते गाडियां भी तैयार खड़ी थीं । मोटर में हिज़ हाईनेस महाराज साहिब बहादुर और गाडियों में अन्य सरदार सवार हो कर रवाना हुए और क़रीब पांच मिनट में मुक़ाम मोल्टन पैडाक में पहुँचे । वहां पर अन्य लेडीज़ और जेन्टिलमैन भी विद्यमान थे । अरनेस्ट कैसल साहिब ने अपना बाग़ मुलाहिज़ा कराया जो बहुत बड़ा और सुन्दर ढङ्ग से बना हुआ था । उस में एक हाट-हाऊस भी था । उस के अलावा मेवों के वृक्ष जैसे अंगूर नासपाती स्ट्राबेरी और रोज़बेरी अधिकता से थे । यद्यपि मेवों का मौसम ख़तम हो चुका था तथापि उस बाग़ में यह मेवे लगे हुए थे । बाग़ देख कर दरबार क़रीब १ बजे ग्रेफ़टन हाऊस वापिस पधारे और फिर चार बजे मोलटन पैडाक को पधारे । वहां पर बेण्ड बज रहा था और अन्य मनोरंजक वस्तुऐं उपस्थित थीं । थोड़ी देर तक महाराज साहिब सब्ज़ घास के मैदान में टहलते रहे । अस्तबल मुलाहिज़ा फ़रमाया । इस के बाद घुड़ दौड़ की सैर देखी और फिर कैसल साहिब के फ़र्न हाउस में पधारे और वहां आठ बजे रात तक बात चीत करते रहे । लेडी रोनेल्ड साहिबा के आटो ग्राफ़ बुक में दस्तख़त फ़रमाए । फिर नौ बजे ग्रेफटन हाउस में पधार कर भोजन के पश्चात् आराम फ़रमाया ।

ता. ४ अगस्त । डयूक आफ़ बेडफ़ोर्ड की कोठी में जा कर बारा बजे तक सन् १८९७ का फ़ैन्सी ड्रेसबाल ऐलबम मुलाहिज़ा फ़रमाया । बारिश की वजह से बाहिर नहीं पधार सके । वहां पर जितने लेडीज़ और जैन्टिलमैन

विद्यमान थे उन सब को अपने नाम के कार्ड वितीर्ण किए और उन से भी उन के नाम के कार्ड लिए। फिर २ बजे सर अरनेस्ट कैसल साहिब के ब्रेकफास्ट में पधारे। फिर करीव ५॥ बजे खुद अरनेस्टकैसल साहिब महाराज को स्टेशन तक पहुंचाने आए। वहां स्पैशल तैयार थी। तीन गाड़ी रिज़र्व कर ली गई थीं। अव्वल दर्जे में पांच सवारियां वैठीं। वाबू संसारचन्द्रजी सेन दरवार के साथ वैठे। छे वजे मोरेलाज में वापिस पधारे।

ता. ५ अगस्त। लगभग १२ वजे राईट आनरेविल ए. जे. वैलफ़ोर साहिव (A. J. Balfour) प्राईमिनिस्टर इङ्गलेण्ड से मिलने के लिए श्री दरवार डाऊनिङ्ग स्ट्रीट नम्बर १० पर पधारे। कर्नल जैकव साहिव प्राईमिनिस्टर साहिव की वातों का अनुवाद करते जाते थे। ब्रेडफोर्ड साहिव ने महाराज साहिव के अकाल के समय के इन्तज़ाम की प्रशंसा की और यह भी फ़रमाया "कि रुपए का योग्य उपयोग यही है कि शुभ समय में एकत्रित किया जाय और आवश्यकता आने पर व्यय किया जाय, लेकिन हिन्दुस्तान के अन्य महाराजाओं को इस का ध्यान कम है"। फिर दरवार से पूछा कि "आप ने मुल्क इङ्गलिस्तान की सैर की या नहीं"। श्रीहुजूर साहिव ने उस का यह उत्तर दिया कि "मुक़ामात की सैर करने के मुक़ाबिले में यहां के मशहूर आदमियों से मिलना श्रेष्ठ है और मैं हुजूर सम्राट की आज्ञा से यहां आया हूं अतः मेरा यही धर्म है कि मैं यहीं उपस्थित रहूं और लण्दन और पैरिस की सैर न करता फिरूं"। इस के पश्चात् वकिङ्गाम पैलेस

होते हुए २ बजे मोरेलाज पधारे और फिर चार बजे लार्ड नार्थब्रुक साहिब (Northbrook) से मिलने पधारे। यह लाट साहिब सन् १८७२ से १८७६ तक हिन्दुस्तान में वाइसराय रह चुके थे। यह लाट साहिब हैमिल्टनपैलेस में रहते थे। लाट साहिब ने दरवाज़े से महाराज का स्वागत किया। यहां भी जैकब साहिब ने ही अनुवाद का कार्य किया। लाटसाहिब ने प्रिन्स आफ़ वेल्स के दौरा हिन्दुस्तान की एक कापी अपने दस्तखत कर के हुज़ूर साहिब को दी। इसके अनन्तर बाक़ी समय प्रेमालाप में व्यतीत हुआ।

ता. ६ अगस्त। तमाम दिन मेंह बरसा और बादल छाए रहे। अर्ल नार्थब्रुक साहिब ने मोरेलाज में पधार कर दरबार से मुलाक़ात की। लार्ड साहिब ने उन विद्यार्थियों का वर्णन किया जो हिन्दुस्तान से विलायत जाते हैं। रुख़सत के वक्त हुज़ूर साहिब ने लाट साहिब का इत्र माला से सन्मान किया। इस दिन मिस्टर ल्यूकस साहिब भी दरबार से मिलने आए। यह पेश्तर न्यू मार्केट में दरबार से मिल चुके थे। इस के पश्चात् बाबा खेमसिंहजी सिक्खगुरु अपने पुत्र सहित दरबार से मिलने आए। दरबार के धर्मानुराग से वह अत्यन्त प्रसन्न हुए। श्रीमान् सम्राट को समुद्र के वायु सेवन से स्वास्थ्य प्राप्त हो गया था और ताजपोशी की तारीख़ समीप आ रही थी। इस लिए श्रीमानों ने इस ही तारीख़ को पोर्टस्मथ में जङ्गी जहाज़ों से सलामी ली।

ता. ७ अगस्त। लगभग चार बजे दरबार काउन्टैस आफ़ डार्टरे (Dartrey) से मिलने के लिए

नम्बर १० अपर वैलग्रेव स्ट्रीट में पधारे और फिर पांच वज कर ४५ मिनट पर राईट आनरेविल जोज़फ़ चेम्बरलेन साहिव (Right Hon. Joseph Chamberlain) से मिलने पधारे जो कालोनियल सेक्रेटरी थे। वहां पर राजपूतों की वीरता के विषय में वातें होती रहीं। चैम्वरलैन साहिव ने फ़रमाया कि सम्राट की हुकूमत में लगभग ४० कालोनी हैं और उन में भिन्न २ जाति के आचार विचार और पहनाव के मनुष्य हैं इस लिए उन सव को प्रसन्न रखना और क़ानून की पावन्दी कराना सरल कार्य नहीं है। हुजूर सम्राट इस ही तारीख़ को शहर लण्डन में पधारे। प्रजा को आप के दर्शनों की आकांक्षा थी इस लिए विक्टोरिया स्टेशन से वकिङ्गाम पैलेस तक आप खुली हुई लेण्डो गाडी में पधारे और गाडी की चाल भी बहुत धीमी रक्खी जिस से सव अच्छी तरह से दर्शन कर सकें।

ता. ८ अगस्त। राईट आनरेविल जोज़फ़ चैम्वरलेन साहिव मुलाक़ात वाज़दीद के लिए मोरेलाज पधारे। चैम्वरलेन साहिव के लड़के आर्थर चैम्वरलेन साहिब कैवीनेट में नियत किए गए थे। इस खुशी की श्रीहुज़ूर साहिव ने चैम्वरलेन साहिव को मुवारिक वादी दी। इत्र व माला से उन को रुख़सत किया। लार्ड रे साहिव गवर्नर वम्बई ६ वज कर ५० मिनट पर मुलाक़ात वाज़ दीद के लिए पधारे।

* दरबार ताजपोशी *

ता. ६ अगस्त। यह मुबारक रस्मे ताजपोशी वेस्टमिन्स्टर एबी में अदा हुईथी। श्रीहुजूर साहिब उस रोज़ ६ बजे से पहिले उठकर ज़रूरी बातों से फ़ुरसत पा गए थे और फिर स्टार आफ़ इण्डिया का चुग़ा जी. सी. आई. का स्टार अपने जामे पर लगा कर ताजपोशी में जाने के लिए तैय्यार हुए। खूंटेदार पाग, बहुत शोभायमान मालूम देती थी। मोरेलाज से ठीक आठ बज कर बीसमिनट पर रवाने होगए थे। इण्डिया आफ़िस से उस रोज़ पांच पास आए थे। दूसरे तीस साथ वालों को जुलूस ताजपोशी देखने के लिए न्यू स्काटलेन्ड यार्ड भिजवा दिए गए थे। ताजपोशी का समय बारह बजे दिनका नियत हो चुका था मगर सात बजे सुबह दरवाज़ा खुलने के साथ ही एबी में दरबारियों, महमानों, रईसों और अमीरों का प्रवेश प्रारम्भ होगया था। गैलेरी की बैठक का ढंग ठीक वैसा ही समझना चाहिए जैसा कि अकसर नाटक घरों में हुआ करता है। यानी हर तरफ़ कुर्सियां इस तरकीब से बिछवाई गई थीं कि पहली कुर्सी पर बैठने वालों और अखीरी नम्बर की कुर्सी पर बैठने वालों तमामही को कैफ़ियत बराबर दीख सके। तमाम आली क़दर लार्ड, अर्ल, डयूक, मारक्विस और बैरन इत्यादि अपनी पूरी दरबारी पोशाकें पहनकर शामिल हुए थे। सामने के दालान की शुरु में अमीरों और वज़ीरों की पत्नियों को जगह दीगई थीं जो निहायत सज धज के साथ बनठन कर अपने अपने मस्तकों पर

HIS LATE MAJESTY KING EDWARD VII WITH QUEEN ALEXANDRA.
(At the time of their Coronation.)

किलंगियां रक्खे हुए चमक दार और खुश वज़ह लिवासों से सुशोभित होकर लम्बे २ गाउनों से वाद वहारी का नक़शा खेंचती हुई एक अजीव दिल फ़रेव लिवास के साथ दरम्यानी हाल में होकर अपनी २ वैठकों पर पहुंचती जाती थीं। इस वैठक के इन्तज़ाम के अलावा करीव ६ हज़ार मोअज़िज़, और शरीफ़ आदमी पूर्व के दरवाज़ों के कोनों में वैठे हुए थे जिन को रस्म ताजपोशी तो दीख नहीं सकती थी लेकिन वह सव शानदार सवारियों के नज़ारे और खुशी के शब्दों की गूंजें और वाजों की सुरीली आवाज़ें सुन २ कर खुश हो रहे थे। बीच के बड़े कमरे में आला दर्जे के नीले रङ्ग के क़ालीनों का वड़ा फ़र्श हो रहा था जिस के वीचोंवीच वेदी वनी हुई थी और जिससे ताजपोशी की रस्मों का सम्वन्ध था। इस खास मुक़ाम के आस पास वादशाही खानदानी और दूर देश मुल्कों के शाहज़ादे और वाज़ वाज़ सलतनतों के वड़े २ हाकिमों के लिए जगह मुक़रिर की गई थी और एक तरफ़ को दुआ और प्रार्थना में साथ देने के खयाल से वैठे हुए थे। दरवार में शरीक होने वाले साहिवों की चमकदार पोशाकों और अजीवोग़रीव फ़ैशनों का वयान शब्दों में नहीं होसकता। प्रत्येक मनुष्य वढ़िया से वढ़िया पोशाक पहने हुए अपनी सुन्दरता और महत्व को प्रगट कर रहा था। गिरजाघर के सामने वाहर के मैदान में वादशाही फ़ौज ठाटवाट के साथ खड़ी हुई वहुत ही मनोहर मालूम होती थी। तमाशा देखने वालों का हजूम इतना ज्यादह हो रहा था कि जिस की गिनती नहीं। ऐवी के चौक में हज़ारहा

घोड़े गाड़ी और अनगिनित मोटर गाड़ियां खड़ी नज़र आती थीं। इतना हजूम होने पर भी कोई दुर्घटना नहीं हुई जो पुलिस के सुप्रबन्ध का प्रत्यक्ष प्रमाण था। तमाशाइयों का इन्तज़ाम करने के अलावा हुज़ूर प्रिन्स आफ़ वेल्स बहादुर ने मालबरो हाऊस के बाग़ में मेहरबानी के साथ एक हज़ार से ज्यादह अनाथ बच्चों और ग़रीबों को अपना महमान बना लिया था कि ऐसे ग़रीब ग़ुरबा जिनका ज़ाहिर में कोई ज़रया जलूस देखने का नहीं था खुद बादशाह के महमान बनकर आराम के साथ जलूस की सैर देख सकें। पाल माल बाज़ार सेन्ट जेम्स स्ट्रीट और पिकेडली के रास्तों में प्रजागण की बहुत भीड़ लगी हुई थी क्योंकि यह बात नियत होचुकी थी के ताजपोशी के बाद हुज़ूर बादशाह सलामत की जलूसी सवारी इन ही रास्तों में हो कर जावेगी। शहर लण्डन के बाज़ार दुकान और मकानात तमाम ऊपर तले आदमियों से भरे हुए नज़र आते थे। बहुत सवेरे से ही लोगों ने दोनों तरफ़ की जगह रोक ली थी। बूढ़े मर्द और औरतें रात के दो बजे से ही उठ उठ कर कैम्प स्टूल और खाने पीने का सामान लेकर जा पहुंचे थे। आम आदमियों का दिल बहलाने के लिए ख़ास २ स्थानों पर सुन्दर बाजे बज रहे थे। गार्ड्स बैन्ड का मशहूर बाजा वेस्टमिनिस्टर एबी के पास ही अपनी जादूभरी तानें सुना रहा था। दूसरे स्थान के बाजे वालों ने भी तमाशा देखने वालों को खुश करने और अपना कमाल दिखाने में इतनी कोशिश की थी कि किसी को भी ख़ाली बैठ कर इन्तज़ार करना बुरा मालुम नहीं हुआ। दरबारियों

की सवारियां साढे आठ बजे सुबह से बड़े ठाट बाट के साथ ऐबी की तरफ़ जानी शुरू होगई थीं। मगर बादशाह के खानदान वालों की सवारियां महल बकिङ्घाम से साढे दस बजे रवाना हुईं। शाहज़ादे वली अहद पौने ग्यारा बजे दिन के अपने स्टाफ़ को साथ लेकर हाऊसऋाफ़यार्क से रवाना हुए। इन की अर्दली में रायल हार्स गार्ड के फ़ौजी दस्ते आगे पीछे बादशाही रौब और जलाल बरसाते जाते थे। ठीक ग्यारा बजे हजूरसम्राटऐडवर्ड सप्तम की शाही गाड़ी महल बकिङ्घाम से निकलती हुई दिखलाई दी। जनाब मल्का मौअज़मा अलेगज़ैन्डरा साहिबा भी पूरी शान शौकत व ठाटबाट के साथ शाहाना लिबास पहने हुए उसी गाडी में सवार थीं। जिस वक्त बादशाही गाडी के घोड़ों का पहला कदम बकिङ्घाम के महल से बाहिर निकला उसी वक्त शाही तोपखाने से सलामी की तोपें चलनी शुरू हुईं, और सम्पूर्ण दर्शनाभिलाषी तोपों की आवाज़ों के साथ ही बादशाह सलामत के दर्शनों के लिए खड़े होगए। हुज़ूर सम्राट् भी निहायत हर्ष के साथ मुस्कराते हुए अपनी प्रजागण का सलाम लेते हुए आहिस्ता आहिस्ता ग्यारह बजकर पच्चीस मिन्ट पर ऐबी में दाखिल हुए। हजूर मलिकामौअज़्ज़मा ने उस रोज़ जो पोशाक धारण कर रक्खी थी उसपर हिन्दुस्तान वालों की कारीगरी खतम कीगई थी। चका चौंध के कारण निगाह उसपर ठहर नहीं सकती थी। इस पर लम्बा गाऊन कुछ और ही समा दिखला रहा था। उस के दामन को पांच मौअज़्ज़िज़ लेडियां उठाये चलरही थी। ग़रज़ यह है के इस

दराज़ दामनी ने दाखिले के दरवाज़े से लेकर वेदीके क़रीव तक अजव जगमगाहट और झलमलाहट का दरया वहा रक्खा था। एवी में इनके दाखिल होनेके वाद स्कूल के लड़कों ने निहायत जोश के साथ यह गीत गाया! "खुदा मलिका अलेगज़ेन्डरा को सदा सर्वदा खुश रक्खे"। मलिका के वाद हूज़ूरपुरनूर सम्राट का दाखिला हुआ जो वादशाही पोशाक धारण किये हुए थे, और एक वहुत लम्वा क़ीमती लवादा ज़ेब तन फ़रमा रक्खा था जिसको वहुत से मोअज़्ज़िज़ सरदार उठाये हुए थे। हुज़ूर सम्राट के पधारने पर चारों तरफ़ से चीअर्ज़ दिये जाने लगे। साथ ही लडको ने भी जैसा कि दस्तुर है यह गीत गाया। "खुदा एडवर्ड सप्तम को हमेशा ज़िन्दा और खुश रक्खे" इस के वाद तमाम दरवारी अपनी अपनी जगहों पर जावैठे। सिर्फ़ लार्ड सैलिस्वरी साहिव जो इङ्गलिस्तान के प्राचीन वज़ीर थे और डयूक आफ़ डैवन साहिव लम्वे २ चुगे ओढे हुए इधर उधर गश्त लगाते दिखलाई देते थे क्योंकि ताज पोशी का तमाम इन्तिज़ाम इनही के सुपर्द था। ठीक ग्यारह वजकर ५५ मिन्ट पर वादशाह सलामत ताजपोशी के छोटे कमरे से वरामद होकर हाल में दाखिल हुए, और पच्छिम के दरवाज़े से उन के दाखिल होने पर यह मज़हवी गीत गाया जाना शुरू होगया। "खुदा के घर में आने का इरादा क्या ही अच्छा है"। इस के वाद आर्क विशाप आफ़ कन्टरवरी ने वादशाह सलामत को नज़ारेगाह में यह कहते हुए पेशकिया "साहिवान! मैं आप के सामने वादशाह एडवर्ड सप्तम को जो इस सलतनत का वेशक

व शुआह बादशाह है पेश करता हूं। क्या आप लोग जो इस मुबारिक दिन की ताज़ीम व तकरीम के लिए जमा हुए हैं उन की यानी बादशाह सलामत की अताअत के लिए तय्यार हैं इस पर दरबारियों ने फ़ौरन् खुश होकर ज़ोर से यह कहा, "खुदा इस बादशाह को हम पर हमेशा सलामत रक्खे"। फिर बादशाह सलामत ने लाल टोपी मस्तक पर धारण की। गाजे बाजों में बराबर दुआ के गीत गाये जाते रहे। फिर सम्राट ने अञ्जील हाथ में ले कर सौगन्द खाई कि "मैं रिआया पर पारलीमेन्ट के मंज़ूर किये हुए कानून और उस के दूसरे नियमों के अनुसार यहां राज करूंगा." फिर प्राचीन रीती के अनुसार ज़ैतून का तेल मले जाने के बाद बादशाही पोशाक धारण की। शाही महमेज़ बूट में लगाने, शाही तलवार कमर में बांधने, और शाही अंगूठी हाथ में पहनने के बाद हुकूमत का असा (डण्डा) हाथ में दिया गया। हर एक रसम अलग २ होती रहीं, और उस के साथ उस की नमाज़ भी अदा होती रही आर्कबिशोप आफ़ केन्टरबरी ने फिर सब से पहले आशीर्वाद दे कर सेन्ट एडवर्ड का ताज बादशाह के सिर पर रख दिया। फिर वह ताज पहनाया गया जो खास उसी दिन के लिए बनवाया गया था। इस के पीछे चारों तरफ़ से यह खुशी की आवाज़ गूंज उठी "खुदा हमारे बादशाह को सलामत रक्खे." बादशाह की ताजपोशी हो जाने के बाद आर्कबिशाप आफ़ यार्क ने मलका मौअज़मा अ्लकज़ेंडरा को ताज पहनाया। फ़िर हज़ूर प्रिन्स आफ़ वेल्स ने सब से पहले अपने बाप के क़दमों को बोसा दिया जो

खानदान की तरफ़ से अताअत की दलील थी। फिर आर्क बिशापआफ़ केन्टरबरी ने मज़हबी गिरोह की तरफ़ से इसी तौर पर अताअत का इज़हार किया। इन रसमों के खतम होने के बाद शाही सलामी की तोपें चलनी शुरू हुईं, और बादशाह और मलका मौअज़मा एक बज कर ५० मिन्ट पर अैबी से रवाना हुए। रास्ते में प्रजा की बहुत भीड़ भाड़ हो रही थी और जहां तक निगाह जाती थी दोनो तरफ़ प्रजागण अपने हुज़ूर सम्राट् को आशीर्वाद देते दिखलाई देते थे। बादशाह, व मलका भी बहुत प्रसन्न नज़र आते थे और सलाम करने वालों को सिर झुका २ कर सलाम का जवाब देते जाते थे। सवारी महल बकिङ्घाम में दाखिल हो गई मगर प्रजागण का इतना प्रेम था के बाज़ारों से हट कर बादशाही महल के दरवाज़े पर जा खडे हुए। रिआया को ख़ुश रक्खना ज़रूरी समझ कर बादशाह सलामत और मलका मौअज़मा शाम को पांच बजे सहन में जाकर खड़े हो गये। और वहां प्रजागण का सलाम लिया। उस रोज़ शहर में चारों ओर हर्ष आनन्द छा रहा था। ताज पोशी ख़तम होने के बाद शाही चहरे के टिकट और नया सिक्का जारी हो गया। इस लिए उन की खरीदारी उस रोज़ डाक खानों में इतनी ज्यादह हुई के जिस की हद नहीं। उसी रात को तमाम लण्डन में रोशनी की सैर देखने के लायक़ थी। तमाम शहर जग-मगा रहा था। सरकारी महल और मकानों पर सरकार की तरफ़ से रोशनी की गई थी। व्योपारियों और दुकान-दारों ने अपनी दुकानों पर रोशनी का खूब इन्तज़ाम

किया था। रोशनी तमाम बिजली की थी। शौक़ीनों के ठट के ठट बाज़ारों में फिरते नज़र आते थे, मगर वाह रे तहज़ीब! लुत्फ़ यह था के बावजूद इतने भीड़ भाड़ के भी गुल गपाड़ा नाम को न था। बादशाह की गाड़ी वापिस चले जाने के बाद क़रीब साढे तीन बजे हुज़ूर साहिब वापिस पधारे। आप उस रोज़ बिलकुल थक गये थे। मगर सब से ज्यादह खुशी इस बात की थी कि ताजपोशी की रसम कि जिस की बहुत दिनों से चाह थी कुशलपूर्वक पूरी हुई।

ता. १० अगस्त। उस रोज़ महाराजा साहिब किसी जगह बाहर तशरीफ़ नहीं ले गये। पौने पांच बजे लार्ड लारैनस साहिब मये अपने लडके के दरबार से मिलने को तशरीफ़ लाये।

ता. ११ अगस्त। सर आरनैसट कैसिल साहब मुक़ाम **स्वईज़रलेण्ड** पधारने वाले थे। इस कारण वहां जाने से पहले उस रोज़ क़रीब तीन बजे तशरीफ लाये, और बतौर यादगार दोस्ताना एक अपनी अक्सी तस्वीर दरबार को दे गये।

ता. १२ अगस्त। साढे ग्यारा बजे महाराजा साहिब तय्यार हो कर यारक् हाऊस को हुज़ूर शाहज़ादे प्रिन्स आफ़ वेल्स से मिलने के लिए पधारे। रास्ते में इण्डिया आफ़िस से करज़न वायली साहिब को अपने हमराह लेलिया। करीब साढे बारह बजे यारक् हाऊस पहोंचे। शाहज़ादा साहिब ने निहायत अख़लाक़ के साथ स्वागत किया, और अप ने साथ काऊच पर बिठा कर बहुत देर तक बातें फ़रमाते रहे। करज़न वायली साहिब दूसरी कुर्सी पर बैठे हुए तर्जुमानी

का काम कर रहे थे। श्रीदरबार एक बजे वहां से वापिस पधारे, और फिर बहुत जल्दी से जीमण करके तीन बजे बादशाह सलामत से मिलने गये। कुछ देर इन्तज़ार करना पड़ा। फिर बादशाह सलामत दूसरे कमरे में तशरीफ़ लाये और महाराजा साहिब को वहां बुला लिया। बादशाह सलामत ने बहुत खुशी ज़ाहिर करते हुए जयपुर की तारीफ़ की और खास कर शेरकी शिकार का ज़िक्र किया। फिर दरबार ने एक जड़ाऊ तलवार जो पहले से वहां भिजवादी गई थी श्रीमान् सम्राट की सेवा में भेंट की। उसकी क़ीमत क़रीब दस हज़ार पाऊण्ड के थी। उस की बाढ़ मुल्क दमिश्क़ के फ़ोलाद की बनी हुई थी और उस में बड़े बड़े हीरे क़रीब एक एक इञ्च के जड़ रहे थे। बादशाह सलामत उस की चमक दमक देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुए और फ़रमाया कि मैं इस को कल फ़ौज हिन्दुस्तान की पैरेड में इस्तेमाल करूंगा। मलका मौअज़मा कुईन अलेक-ज़ेन्डरा साहिबा ने भी उसी वक्त फ़रमाया के दरबार ने जो प्याले रकाबी मुझ को दी हैं मैं उन को हर रोज़ काफ़ी पीने के वक्त इस्तेमाल करती हूं। दरबार ने हुज़ूर सम्राट से उन की तस्वीरें मांगी जो उन्हों ने निहायत खुशी से उसी वक्त इनायत फ़रमाई। फिर दरबार वहां से रुख़सत हो कर वापिस तशरीफ़ लाये। उसी रात को हुज़ूर सम्राट् की तरफ़ से आठ तमग़े पुजारी श्री ठाकुरजी, करनैल जैकब साहिब, ठाकुर साहिब चौमूं, राव राजाजी सीकर, राजा उदयसिंहजी बाबू संसारचन्द्रजी, धनपतरायजी और ठाकुर हरिसिंहजी के वास्ते आये।

॥ पैरेड फ़ौज हिन्दुस्तान ॥

ता. १३ अगस्त । महाराजा साहिब साढे दस बजे चन्द सरदारों के साथ इण्डिया आफिस जाने के लिऐ तय्यार हुए । इण्डिया आफ़िस के दरवाज़े पर सुर्ख़ मख़मल बिछी हुई थी । गाड़ी से उतर कर अव्वल श्रीदरबार ने लार्ड जार्ज हेमिल्टन साहिब से मुलाक़ात फ़रमाई । उन्हों ने दरबार से हाथ मिलाया और हिन्दुस्तान कुशल पूर्वक पहोचने की दुआ मांगी । फिर साढे तीन बजे फ़ौज हिन्दुस्तान की पैरेड़ देखने बकिङ्गयाम पैलेस् तशरीफ़ ले गये । करज़न वायली साहिब आप को हाल में ले गये । बाग़ के मैदान में एक ख़ूबसूरत शामियाना खड़ा था जिस की मेख़ें चांदी की थीं । इस शामियाने के सामने हिंदुस्तानी फ़ौज लाईन बांधे खड़ी थी, और फ़ौज के अफ़सर करनल वाटसन् साहिब मौजूद थे । बादशाह सलामत और उन की मलका के लिए जड़ाउ कुर्सियां रक्खी थीं । हिन्दुस्तान के राजा महाराजा तमाम मौजूद थे । क़रीब चार बजे हुज़ूर सम्राट् शामियाने में पधारे और एक एक करके हिन्दुस्तान के तमाम राजा महाराजाओं से हाथ मिलाये । आप निहायत ख़ुशी के साथ कुछ बात चीत भी फ़रमाते जाते थे । फिर शाहज़ादे वेल्स साहिब कारोनेशन मेडिल जो मेज़ पर सामने रक्खे हुए थे उठाकर हुज़ूर सम्राट् के रूबरू पेश करते थे और सम्राट् अपने हाथ से हिन्दुस्तान के राजाओं को देते जाते थे । इस तरह कुल पन्दरह तमग़े महाराजगान हिन्दुस्तान को बख़्शे गये । फिर शाहज़ादे साहिब ने हिन्दुस्तान की फ़ौज

को जिस की तादाद क़रीब एक हज़ार थी तमगे़ बांटे और फिर हुज़ूर सम्राट् ने यह स्पीच फ़रमाई।

॥ स्पीच ॥

"करनैल वाटसन् साहिब! मैं चाहता हूं कि आप मेरी तरफ़ से हर रसाले के लोगों को जो इस जगह मौजूद हैं इस बात से आगाह करदें कि मैं इन को देख कर निहायत खुश हुआ हूं। मुझे बहुत डर था कि कहीं ऐसा न हो कि मेरी सख्त बीमारी मुझे इन के देखने से रोक ले, लेकिन मैं खुदा के फ़ज़ल व करम से बिल्कुल तन्दुरुस्त हूं। यह भी बहुत खुशी की बात है कि इस क़दर लोगों ने तमगे़ हासिल किये हैं। मैं इन में से बहुत सी रजिमेंटों को पहचानता हूं कि जिन को मैं ने देहली के ममनुई जंग और हिन्दुस्तान के दूसरे स्थानों में देखा था। मुझे उम्मीद है कि यह इङ्गलिस्तान में रह कर बहुत खुश हुए होंगे और अपने वतन को बख़ैर व ख़ूबी वापिस जावेंगे।"

फिर बादशाह सलामत ने हाथ मिलाया। दरबार बरख़ास्त हुआ। उस रोज़ महाराजा साहिब ने जी. सी. ऐस. आई. और जी. सी. आई. ई. के स्टार और कारोनेशन मेडिल धारण कर रक्खे थे। दरबार बरख़ास्त होने के बाद श्री हुज़ूर साहिब क़रीब छे बजे वापिस पधारे।

ता. १४ अगस्त। राजा उदयसिंहजी को हुज़ूर साहिब ने इन्तज़ाम के वास्ते अपनी रवानगी से पहले हिन्दुस्तान भिजवाना तजवीज़ फ़रमाया था। चुनांचे वह इस तारीख़ को दरबार से रुख़सत हो कर अपने सेवकों के साथ डोवर तशरीफ़ ले गये और वहां से पी. एण्ड ओ.

स्टीमर में सवार हो कर कैले गये। बम्बई में पेशतर से पूजनह वग़ैरह का इन्तज़ाम करना भी इन्हीं के सुपुर्द किया गया था। उस के अलावा रसोड़े वग़ैरह के दीगर ४० आदमियों को सेठ रामनाथजी, राधाकिशनजी और डाक्टर दलजंगसिंहजी के साथ उसी रोज़ वहां से लीवर-पूल रवाना करदिया गया कि वह बज़रिये जहाज़ ओलैम्पिया रवाना होकर मारसैलीस पहुंच जावें और २४ अगस्त को वहां श्री दरबार से मिलें, क्यों कि उस रोज़ दरबार का वहां पहुंचना तै पाचुका था। इन इन्तज़ामात से फ़ुरसत पा कर दरबार मिस्टर काब साहिब रेज़ीडेन्ट जयपुर की मां से मिलने **नारउड** तशरीफ़ ले गये और उन को अपनी एक तस्वीर दी। नारउड क्रिस्टैल पैलेस के पास बना हुआ है और बहुत ही सुन्दर स्थान है।

ता. १५ अगस्त। श्रीदरबार सात बज कर बीस मिन्ट पर एमपायर थियेटर देखने पधारे, और वहां से पौने बारह बजे वापिस पधारे। उस रोज़ आप के हमराह खवास बालावख्शजी, खवास रामकँवारजी, पण्डित मधुसूदनजी, बाबू संसारचन्द्रजी, डाक्टर हेमचन्द्रजी, और करनेल जैकब साहिब भी थे। तमाशा उस रोज का भी बहुत दिलचस्प और देखने के क़ाबिल था॥

ता. १६ अगस्त। करनेल जैकब साहिब के साथ दरबार **वेस्टमिनिस्टर एबी** देखने पधारे। पहले सरसरी तौर पर ता. २२ जून को भी इस स्थान को देख चुके थे। मगर इस रोज़ खास तौर पर तमाम मशहूर मुक़ामात देखने का मौक़ा मिला। बिशाप वैलुन साहिब

ने जाकर तमाम जगह की सैर कराई. और उन मुक़ा-मात को खास तौर पर दिखलाया कि जहां पर हुज़ूर सम्राट् के रोग़न ज़ैतून मला गया था। और उस के बाद उन्हों ने हलफ़ उठाया था। शाहन्शाह हैनरी सप्तम का चेपिल यानी गिरजा भी दिखलाया। यहां से दरबार सेन्टपाल कैथैडरेल तशरीफ़ ले गये। यह एक आलीशान इमारत है। उस में हज़ारों मरद औरतें इकट्ठी होती हैं और दुआ मांगतीं हैं, मगर आश्चर्य जनक बात यह है कि इस क़दर आदमियों के शामिल होने पर भी सन्नाटा छाया रहता है। किसी मनुष्य की आवाज़ सुनाई नहीं देती। सिर्फ़ पादरी साहिबान की जो दुआ की किताब पढते हैं उनकी अवाज़ सुनाई देती है। लण्डन की मशहूर आग लग जाने ने इस को तबाह और बरबाद करदिया था मगर उस के बाद इस में बहुत उलट पुलट होते रहे हैं। इस में एक बहुत बड़ा गुम्बज़ है जिस का घेरा १४७ फुट है। यह गुम्बज़ मीलों दूर से मकानात और ऊंची २ इमारतों के ऊपर हो कर दिखलाई देता है और उस की चोटी पर एक अतीव सुन्दर लालटेन लगी हुई है। गिरजा के पच्छमी दरवाज़े के सामने लडगेट हिल के मुक़ाबले में मलका एन की मूर्ति है। इस की दक्षणी बूरज में एक बहुत बडा और देखने योग्य घण्टा लगा हुआ है जिस की सुईयां भी बहुत बड़ी हैं। टेम्स की नदी के उपर से इस का दृश्य बहुत सुन्दर मालूम होता है। ताजपोशी के बाद इङ्गलिस्तान के बादशाह इस में शुक्रिये की नमाज़ पढ़ने आया करते हैं। इस में भी इङ्गलिस्तान के

मशहूर आदमी दफ़न हुआ करते हैं। दरबार वहां से मोरेलाज वापिस पधारे, और उसी रोज़ आप ने जामनगर के रंजीतसिंहजी प्रसिद्ध क्रीकेटीयर को एक हज़ार पाऊण्ड इनाम दिये जो वर्त्तमान समय में महाराजा जामनगर हैं।

ता. १८ अगस्त। नौ बज कर पचास मिनिट पर मिस्टर लारैन्स साहिब से मिलने पीटरबरो श्रीहुजूर तशरीफ़ ले गये। वहां ११ बज कर पचास मिनिट पर पहुंचे। मिस्टर लारैन्स साहिब के बडे लड़के दो गाडी ले कर स्वागत के लिये स्टेशन पर आये थे। लारैन्स साहिब ने अपने घोड़े और सूर दिखलाए और दूसरी खेती वाड़ी की चीज़ें मुलाहज़े कराई। चार बज कर पचास मिनिट तक वहां ठहरे और फिर मिस्टर लारैन्स के साथ किङ्कास स्टेशन पर वापिस पधारे और ७ बज कर ४५ मिनिट पर मोरेलाज में सवारी दाख़िल हुई।

ता. १९ अगस्त। जोज़फ़ चेम्बरलेन साहिब के पास से जो कालोनियल सैक्रैट्री थे एक अक्सी तस्वीर आई।

ता. २० अगस्त। ११ बजे केम्ब्रिज यूनीवर्सीटी देखने तशरीफ़ ले गए और उसी रोज़ म्यूज़ियम, ट्रीनिटीकालेज और कुईन्स कालेज मुलाहज़ा फ़रमाया। साढे तीन बजे यूनीवर्सिटी के उस हाल में पहुंचे कि जिस में हज़ूर साहिब की आमद की खुशी का जलसा प्रोफ़ैसरों और विद्यार्थियों की तरफ़ से किया गया था। यूनीवर्सिटी के विद्यार्थियों ने दरवाज़े से हज़ूर साहिब का स्वागत किया। जलसे में स्पीचों के सिवाये एक एडरैस

उर्दू ज़बान में मिस्टर लतीफ़ ने दिया। मिस्टर लतीफ़ उसी साल सिविल सर्विस के आखरी इम्तिहान में पास हुए थे और दूसरे विद्यार्थी जो पास हुए थे उस जलसे में शरीक थे। मिस्टर लतीफ़ के एडरैस का जवाब दरबार की तरफ़ से बाबू संसारचन्द्रजी ने दिया। महाराजा साहिब की तरफ़ से विद्यार्थियों और प्रोफ़ेसरों के लिए चाय का इन्तज़ाम कर दिया गया था। जलसा बरखास्त होने के बाद भी दरबार ने कुछ देर वहां आराम किया। कालेज में क़रीब बीस हिन्दुस्तानी तालिब इल्म थे। वापसी के समय विद्यार्थियों ने तीन चीअर्ज़ दिये।

ता. २१ अगस्त। इण्डिया आफ़िस के वास्ते एक तस्वीर जी. सी. एस. आइ. का चुग़ा पहन कर खिचवाई और दूसरी तस्वीर अपने वास्ते जी. सी. आइ. ई. के चुगे व स्टार पहन कर खिचवाई। इस के अतिरिक्त और भी फ़ोटो खिचवाए गए। सो पाऊण्ड का चैक उन युरुपियन मुलाज़मान को इनाम के तौर पर बख़्शा गया जो मोरेलाज में रह कर दरबार की सेवा करते थे।

दरबार के साथ वालों ने शहर लण्डन में और जो मकामात देखे उन में से खास तौर पर लिखने के लायक यह हैं:—

अण्डर ग्राउण्ड रेलवे और टूपैनी टयूबस।

शहर के एक कूचे से दुसरे कूचे में जाने और माल असबाब की आमद रफ़्त के वास्ते बहुत तरह की सवारीयां मिस्ल फ़िलाई, केब्स, हैनसम, ओमनीबस, मोटर ट्रैमवे और रेल वग़ैरह इतनी ज्यादती से हैं कि जिस की हद नहीं।

बाज़ जगह रेल दुकानों और मकानों के ऊपर चलती है और बाज़ी जगह ज़मीन के अन्दर और उस के ऊपर और फिर दूकानों के ऊपर चलती रहती हैं, मगर बावजूद इस कदर ज्यादह आबादी और आमद रफ्त के भी शहर में गुल गपाड़ा बिल्कुल सुनाई नहीं देता। अलबत्ता खास क़िस्म की आवाज़ जो इस क़दर तिजारत की वजह से होती है हवा में हर वक्त सुनाई देती रहती है। टूपैनी रेलवे के देखने से इङ्गलिस्तान के काबिल इञ्जनीयरों की आला दिमाग़ी और कारीगरी का तमाशा नज़र आता है यह सतह ज़मीन से बहुत नीचे वाक़ै है। इस की डबल लाईन है जो सरकिल यानी दायरे की शकल में तमाम शहर के गिरद ज़मीन के अन्दर अन्दर घूम जाती है। एक लाईन पूर्व से पच्छिम को और दूसरी लाईन पच्छिम से पूर्व को जाती है। मुसाफ़िर टिकट ले कर बज़रिये लिफ्ट के ज़मीन के नीचे उतार दिये जाते हैं। यह लिफ्ट बराबर एक एक मिन्ट बाद ऊपर नीचे आते जाते रहते हैं। ज़मीन के नीचे जहां रेल चलती है दिन के वक्त भी इतना उजाला बिजली वग़ैरह से बना रहता है कि जैसा साधारण तौर पर चार बजे होता है और रात्री को बिजली की रोशनी से चका चोंद रहता है। अन्दर ज़मीन कहीं नज़र नहीं आती। ऊपर नीचे चारों तरफ़ केवल दीवारें दिखलाई देती हैं जिन पर सौदागरों के अनगिनत नोटिस लगे रहते हैं। साथ ही हवा का ऐसा प्रबन्ध किया गया है कि किसी को अनसुहावना नहीं मालूम होता। स्टेशनों पर प्रत्येक स्थानों पर सौदागरों के स्टाल

(काठ के सन्दूक़) बने हुए हैं। इस के ऊपर उस के अन्दर चीज़ों की सूची लगी हुई हैं। जो चीज़ किसी को खरीदना हो तो उस चीज़ की पूरी क़ीमत उस के एक सुराख़ में डाल देने से वह चीज़ फ़ौरन बाहर आ जाती है। अण्डर ग्राउण्ड रेलवे टपैर्नाटच्यूब्स के मुक़ाबिले में ज्यादह ऊंचाई पर और खुली ज़मीन के कुछ नीचे के हिस्से में बनी हुई है। इस तरह दो प्रकार की रेल ज़मीन के ऊपर चलती हैं। दो प्रकार की जमीन के नीचे और अन्दर हर समय जारी रहती हैं।

॥ टावर ब्रिज ॥

यह एक झूलता हुआ पुल है जो टेम्स नदी के ऊपर बहुत मज़बूत और खूब सूरती के साथ बनाया गया है। यह नदी से क़रीब ५० फ़ुट ऊंचा है इस के दोनों सीरों पर नदी के किनारे दो सौ फ़ुट के फ़ासले पर दो बुरज बने हुए हैं। नदी पार करने के लिए दो पुल हैं, एक नीचे का एक ऊपर का। नीचे के पुल से पैदल चलने वाले और सवारी गाडीयां आती जाती हैं और ऊपर का पुल सिर्फ़ उस समय काम आता है जब किसी जहाज़ के आने के वास्ते नीचे का पुल खोल दिया जाता है। जब पुल दो टुकड़ों में टूट कर ऊपर चढ जाता है तो पुल के दोनों टूटे हुए टुकड़े ऐसे मालूम होते हैं कि मानों दरवाज़े के दो पट खुले हुए हैं और इसी लिए लण्डन के रहने वाले इस पुल को गेट आफ लण्डन कहते हैं। ऊपर के पुल पर पहुंचने के वास्ते दो तरीक़े काम में लाए जाते हैं। अव्वल लिफ्ट के ज़रिये से, दूसरे चक्कर दार सीढियों से जो मीनारों में बनी हुई

हैं। यह पुल अपनी सुन्दरताई के कारण तमाम दुनया के दर्शनीय पुलों में मशहूर गिना जाता है।

॥ टावर आफ़ लण्डन ॥

यह शहर लण्डन का मशहूर क़िला है जिस ने ज़माने की तरह रंग बदले हैं। कभी तो शाही महल बना रहा, कभी अदालत का स्थान बन गया, कभी क़ैदखाने की जगह काम आया, और अब सिलहखाना और नुमाइश-गाह बना हुआ है। इस में देखने के क़ाबिल स्थान वाईट-टावर, बैलटावर, औरब्लैडीटावर हैं। बैलटावर में मलका एलीज़ैबिथ क़ैद रही थीं। वाईट टावर में सर वाल्टर रेले ने अपनी क़ैद तनहाई के दिन पूरे किये थे। इन स्थानों को देख कर दिल में बहुत विरक्तता के विचार पैदा होते हैं। सिलहखाने में स्पेनिश आरमेडा के बचे कुचे हथियार पड़े हुए हैं। यह इमारत ऐतिहासिक विचारों से लण्डन में देखने योग्य एक ही स्थान है। इस ही स्थान में प्राचीन और वर्तमान सम्राटों के ताज बहुत हिफ़ाज़त से रक्खे हुए हैं। संसार भर का प्रसिद्ध कोहनूर हीरा इसी जगह रक्खा हुआ है।

॥ हाईड पार्क ॥

इस पार्क की खूबसूरती भी आज तक दुनिया में मशहूर है। लण्डन के बाशिन्दे इसे लण्डन की जान बताते हैं। अगरचे अब इस के चारों तरफ़ कुछ मकानात भी बन गये हैं मगर फिर भी इस की ठंडी २ हवा बहुत सुहावनी मालूम होती है। सरपेन्टाईन का बहना अजब लुत्फ दिखाता है।

इसी बाग़ में फ़ौज के सिपाही सिपाहगरी के फ़न दिखाते हैं। इस में बड़े २ जलसे हुआ करते हैं और यहीं पर घुड़दौड़ होती है। लण्डन में शायद ही कोई ऐसा मर्द औरत होगा जो जवानी के दिनों में बन ठन कर इस बाग़ में न टहला हो और अपनी पोशाक का नया फ़ैशन न दिखलाया हो। इस के आठ दरवाज़े हैं। नहाने के वास्ते एक खूब सूरत हौज़ बना हुआ है। रसिक जन किश्तियों में बैठ बैठ कर सरपैन्टाईन की सैर करते हैं। शहर के अमीर और बड़े आदमी घोड़ों या गाडीयों पर सवार हो कर हवा खोरी को आते हैं। स्कूल के विद्यार्थी क्रीकेट फुटबाल और टैनिस इत्यादि खेल खेल कर अपना दिल बहलाते हैं। बाग़ में वृक्षों के नीचे जगह २ बैञ्चें पड़ी रहती हैं जिन पर शौक़ीन लोग शाम के वक्त बैठ कर अपना दिल खुश करते हैं। कहीं कहीं पर घास आदमी के क़द के बराबर लम्बी उगी हुई है और दूर से लहलहाती हुई बहुत अच्छी मालूम देती है। उस में खूबी यह है कि जब कोई उस के ऊपर हो कर चलता है तब फ़ौरन मखमल की तरह पैरों के नीचे दबती चली जाती है और बीच में रास्ता हो जाता है।

॥ मैडेम टीस्सूड्स की नुमाईश गाह ॥

यह लण्डन के देखने योग्य स्थानों में गिनी जाती है। इस को शहर लण्डन की एक निहायत दौलतमन्द लेडी मैडेम टीस्सूडस ने अपनी तमाम जमा की हुई दौलत को लगा कर तय्यार कराया था। इस में मोम की मुर्तियां इतनी खूब

सूरत बनी हुई मौजूद हैं कि उन के देखने से बिलकुल असली मालूम होती हैं। इङ्गलिस्तान के बादशाहों की मूर्तियां भी बनी हुई हैं, वह ऐसी मालूम होती हैं कि मानो बोलने के लिये भी तैय्यार हैं। महाराज सैंधिया और महाराज जम्मू की मूर्तियां भी उसी में बैठी हुई मौजूद हैं जिन्हें देख कर यही मालूम होता है कि सचमुच दोनों महाराजा तशरीफ़ ले आए हैं। पहले से यह बात मालूम होजाने पर भी कि यहां की तमाम मुर्तियां मोम की हैं मुमकिन नहीं कि कोई मनुष्य जिस ने उसे पहले नहीं देखा हो वह किसी न किसी सूरत से धोका न खा जाय और उसे असली न समझे। हुजूर शाहज़ादे वलीअहद और शाहज़ादी लूई का वह ज़माना कि जब शाहज़ादी पिंगूरे में बैठी हुई और शाहजादे साहिब लेटे हुए झुन झुना हाथ में लिए खेल रहे हैं ऐसे खूबसूरत हैं कि मनुष्य का दिल यही चाहता है कि घण्टों उसे देखता रहे। नैपोलियन की वह गाडी जिस में सवार हो कर वह हमले-आवर हुआ था और जो कि वाटरलु की लड़ाई में अंग्रेज़ों के हाथ आई थी और उस पर कैम्पो का पलंग कि जिस पर वह सेन्ट हैलेना में सोया करता था, बादशाह जार्ज-चहारम की तख्त नशीनी की पोशाक **ड्यूक आफ़ वेलिङ्गटन** और **जोज़फ़ बोनापार्ट** की असली पोशाकें उसी स्थान में बहुत हिफ़ाज़त से रक्खी हुई हैं। **नैपोलियन** की मुर्दा लाश जो मोम की बनी हुई है अजब इबरत दिलाती है। बात यह है कि यह स्थान तस्वीर और कारीगरी के खयाल से हैरत की जगह है।

॥ बेङ्क आफ़ इङ्गलेण्ड ॥

यह वह स्थान है कि जहां क़रीब २ आधी दुनिया का रुप्ये पैसे का काम होता है। इस के गिरद निहायत मज़बूत दीवार बनी है। इस की कोठरियों में सैंकड़ों शलाखें सोने की मौजूद हैं और सावेरन और नोट बहुत रक्खे हुए हैं। इसी के बराबर दूसरी प्रसिद्ध जगह रायल एक्सचेन्ज की है जहां व्योपारी और अनेक देशों के सौदागर प्रातःकाल एकत्र हो कर व्योपार की बातें किया करते हैं। बेङ्क में नोटों की छपाई सिक्कों के ढालने और तोलने का काम भले प्रकार किया जाता है। कहते हैं कि बेङ्क में पांच पाऊण्ड से लेकर एक हज़ार पोऊण्ड तक की क़ीमत के करीब पच्चास हज़ार नोट प्रति दिन तय्यार हो जाते हैं। खारिज किया हुआ नोट भी बेङ्क में पांच बरस तक हिफ़ाज़त से रक्खा जाता है क्यों कि अक्सर मुकद्दमात में उन को अदालतों में पेश करने की ज़रूरत होती है। पांच साल के बाद भट्टियों में डाल कर जला दिया जाता है।

॥ सफ़र वापसी, लण्डन से रवानगी ॥

ता. २२ अगस्त सन् १९०२। यह वह शुभ दिन था की जब विलायत से हिन्दुस्तान वापस आने की प्रातः काल से धूम मची हुई थी। तारीख १४ अगस्त को सेठ रामनाथजी, डाक्टर दलजङ्गसिंहजी और दूसरे मुलाज़मान राज पहले से रवाना कर दिये गये थे कि वह लिवरपूल पहुंच कर मुक़ाम मारसैलिज़ में २४ अगस्त को दरबार से मिलें और राजा उदयसिंहजी को यह हुक्म था कि वह

पेश्तर से बम्बई पहुंच कर पूजन और दूसरी ज़रूरी बातों का प्रबन्ध करें, इस लिए श्रीहज़ूर साहिब के साथ वापिस आने वाले मनुष्यों की संख्या केवल १८ रह गई थी। सामान के रवाना करने की हल चल मच रही थी, और ठीक सात बजे दरबार का सामान रवाना हो गया। साढे आठ वजे श्रीहज़ूर साहिब सब से विदा हो कर मुक़ाम मोरेलाज से रवाना हुए। बाबू सत्येन्द्रनाथ मुकर्जी और कप्तान चुन्नी-लालजी (मानसिंहजी कप्तान के बेटे कि जो दक्खनी अफ़्री-क़ा की लड़ाई से आये थे) दरबार के साथ हो गये। करज़न वाईली साहिब भी आप के साथ विक्टोरिया स्टेशन तक आये। गाडी से उतरने के स्थान से ले कर ट्रेन तक पहले की तरह सुर्ख कपड़ा बिछा दिया गया था। स्टेशन पर उस समय भी इङ्गलिस्तान के रहने वालों और दूसरे बडे अफ़सरों की भीड़ लगी हुई थी। स्पैशल साढे नो बजे विक्टोरिया स्टेशन से रवाना हुई और ठीक साढे ग्यारह बजे डोवर पहुंची जहां पर स्टीम बोट डचेज़ आफ़ यार्क मोजूद था। वाईली साहिब वहां से रुख़सत हुए। जहाज़ क़रीब ६ बजे शाम को डोवर से रवाना हुआ। जहाज़ के कैले पहुंचने पर मिस्टर सी. ए. पेटन साहिब बृटिश कौन्सल आखीर समय तक दरबार की सेवा में उपस्थित रहे। मुक़ाम कैले में महूरत साधने के खयाल से एक स्पैशल का तारीख १८ अगस्त को ही इन्तज़ाम कर दिया गया था। इस लिए वह स्पैशल मुक़ाम मारसैलीज़ जाने के लिए मौजूद थी। यह स्पैशल मारसैलीज़ तक तीन स्थानों पर ठहराई गई। अव्वल तारीख़ २३ अगस्त को डारसी स्थान में क़याम रहा, वहां

नहिर का जल अत्यन्त स्वच्छ और मीठा था, इसी जगह सब ने स्नान किया, वहां से सात बजे शाम को रवाना हो कर मुकाम लावी में ठहरे, वहां ट्रेन से उतरने के लिए बिलकुल जगह न थी, वहां से स्पैशल १ बजे रवाना हुई।

ता. २४ अगस्त। स्पैशल मारसैलीज़ में ६ बजे सुबह पहुंची, जो साथ वाले पहले ही लिवरपूल से रवाना हो कर मारसैलीज़ में पहुंच चुके थे वह वहां पर इन्तज़ार कर रहे थे। तमाम सामान ट्रेन से उतार कर जहाज़ ऐस. ऐस. औलम्पिया में लादा गया। इसी स्थान पर नव्वाब मुमताज़ उद्दौला सर महोमद फ़ैयाज़अलीखांजी मये अपने सात मुलाज़मान के पैरिस की सैर से वापिस आकर दरबार के हमराह हुए, खुद दरबार ने अपने हमराहियान के लिए कैबिन तजवीज़ फ़रमाए। अब कुल मनुष्यों की संख्या १३९ हो गई। दरबार ने कप्तान जहाज़ को अपनी अकसी तस्विर अता फ़रमाई।

ता. २५ अगस्त। नव्वाब साहिब बहादुर ने पैरिस की खूबसूरती और वहां के दूसरे स्थानों की दरबार से बहुत तारीफ़ की मगर वहां के अख़लाक़ी हालत पर बहुत अफ़सोस ज़ाहिर किया। कप्तान जहाज़ ने दरबार से आ कर मालूम किया कि दो सौ पचास मील का सफ़र हो चुका है और चार्ट दरबार को मुलाहज़े कराया। कारसीका सारडेनीया के टापुओं से गुज़रने के बाद मुकाम अस्तम्बोल के ज्वाला मुखी पर्वत दिखलाई देने लगे। उन के अन्दर से धुंवां बहुत निकल रहा था।

ता. २६ अगस्त। जहाज़ सीला और केरबडिस

के बीच में हो कर मैसीना सट्रेट में से गुज़रा, जो एक विख्यात स्थान है । शहर मैसीनिया में रोशनी अजब लुत्फ़ दे रही थी और वहां का दृश्य बहुत सुहावना मालूम दे रहा था ।

ता. २७ अगस्त । यह दरबार की सालगिरह का मुबारिक दिन था और उस रोज़ जहाज़ ख़ास तौर पर झन्डियों से ख़ूब सजाया गाया था और एक बड़ा झन्डा बीच में खड़ा किया गया, जिस से जहाज़ की शोभा और भी ज़ियादा बढ़ गई थी । जहाज़ के कर्मचारियों और साथ वालों के लिए दावत का इन्तज़ाम किया गया था । बाबू संसारचन्द्रजी, ख़वास बालाबखशजी, ठाकुर साहिब चोमूं और दूसरे सरदारों अहलकारों ने हज़ूर साहिब को नज़रें पेश कीं । कप्तान आसबर्न साहिब ने आ कर मुबारिक बाद अर्ज़ की । कप्तान साहिब को महाराज साहिब ने एक क्रानोमीटर वाच बख़शी जो लण्डन में उन्हें देने के लिए ख़रीद की गई थी और उस में "दरबार ने बख़शी" खुदा हुआ था । हज़ूर साहिब ने श्री गोपालजी के मन्दर में पधार कर ४३ मोहरें भेंट कीं । उस स्थान पर श्रीमान् सम्राट और उन की महारानी की ओर से रुख़सती तार आया जो पढ कर सुनाया गया । जहाज़ में "लाङ्ग लिव दी किङ्ग" की गत बजा कर सलामी उतारी गई । यह तमाम दिन और रात गाना बजाना और खुशी में गुज़रा ।

ता. २८ अगस्त । समुद्र में तूफ़ान प्रारम्भ हुआ । जहाज़ के डगमगाने से साथ वाले बहुत बेचैन हो गए और प्रत्येक मनुष्य समुद्री रोग से पीड़ित हो गया ।

जहाज़ लहरों के ऊपर उछल कर जाता था, और उस में पानी भी भर आता था, जिस से साथ वालों को बहुत डर मालूम होता था। समुद्र में तूफ़ान की यह हालत कई दिन तक बनी रही। श्रीदरबार ने कप्तान जहाज़ के कमरे में जा कर क्रीट टापू की सैर फ़रमाई।

ता. २९ अगस्त। समुद्र का तूफ़ान बदस्तूर रहा।

ता. ३० अगस्त। जहाज़ दिन के तीन बजे स्वेज़ बन्दर गाह में पहुंचा। वहां कुकसन के एजन्ट की मारफ़त हिन्दुस्तान की डाक पहुंची, जिस में रेज़ीडेन्ट साहिब की चिट्ठी थी। उन्हों ने दरियाफ्त किया था कि वक्त से इत्तला दें। यहां जहाज़ के हौज़ में पानी भरा गया, क्यों कि पहला पानी रंग की वजह से ख़राब हो गया था, पौने दस बजे रात को जहाज़ रवाने हो गया।

ता. ३१ अगस्त। जहाज़ स्वेज़ कैनाल में दाख़िल हुआ और वहां लंगर न डाल कर साढे तीन बजे आगे रवाने हो गया। यहां का दृश्य मानिन्द राजपूताने के मालूम होता था। इस मुक़ाम पर रात्रीके समय में जहाज़ हारडिञ्ज मिला जिस में हिन्दुस्तानी फ़ौज हिन्दुस्तान को वापिस जा रही थी। इस में रोशनी बहुत तेज़ और देखने योग्य हो रही थी। यहां पर बाबू मोतीलालजी गुप्ता प्राईवेट सैक्रेटरी का तार हिन्दुस्तान से पहुंचा जिस में दर्ज था कि जयपुर में वर्षा अच्छी हो चुकी। अब यूरुप देश की हद्द पूरी हो चुकी थी और अरब देश का हिस्सा शुरू हो गया था। गरमी बहुत ज़ियादह मालूम होने लगी। श्रीठाकुरजी के कैबिन में

बिजली का पंखा लगा दिया गया। इस समुद्र में पहली रात्री की तरह बहुत गरमी थी जिस से सब को बेचैनी रही।

ता. १, २, ३, ४, सितम्बर। गरमी का वही हाल रहा। तारीख ३ सितम्बर को जहाज़ रेड सी में दाखिल हुआ। श्रीदरबार ने दूरबीन से दोयेज के चन्द्रमा का दर्शन किया, जिस की यह वजह थी कि अगर दोयेज का चन्द्रमा न देख कर चौथ का चन्द्रमा देखा जाय तो ठीक नही समझा जाता, कारण यह कि भद्रा में चौथ के रोज़ चन्द्रमा देखना वर्जनीय है। ४ सितम्बर को हवा बिल्कुल बन्द रही और बहुत से स्टीमर जहाज़ उस रोज़ इधर उधर आते हुए दीख पड़े।

ता. ५ सितम्बर। जहाज़ दो बजे अदन पहुंचा। उसी वक्त २१ तोपें सलामी की अदन के क़िले से चलाई गईं। वहां पर राजा उदयसिंहजी का तार पहुंचा जिस में लिखा था कि "हिन्दुस्तान के समुद्र में मानसून (मेंह की हवा) ज़ोर पर है और समुद्र में तूफ़ान आ रहा है". दरबार ने भी तार द्वारा उन को सूचना दी कि "हम १२ सितम्बर शुक्रवार को बम्बई पहुंचेंगे, और १४ सितम्बर दीतवार को सवारी जयपुर में दाखिल हो जावेगी". बाबू मोतीलालजी प्राइवेट सैक्रेटरी को भी इस की इत्तला दी गई।

ता. ६ सितम्बर। हवा फिर बिल्कुल बन्द रही जहाज़ तूफ़ान से डगमगाता रहा।

ता. ७ सितम्बर। तूफ़ान का वही हाल रहा

जहाज़ के तख्तों के नीचे पानी भर गया। कप्तान ने आ कर अर्ज़ किया कि यह मानसून (मेंह की हवा) है। शाम को कम हो जावेगा। दरबार कप्तान के कैबिन में बैठे हुए तूफ़ानी समुद्र की सैर करते रहे।

ता. ८ सितम्बर। तूफ़ान की हालत भयङ्कर बन गई, जहाज़ के दोनों ओर समुद्र की लहरें ज़ोर से टकराने लगीं जिस से जहाज़ के टूट जाने का भय हर समय मालूम होता था। शाम के वक्त एक बड़ी लहर जहाज़ से आ कर इस ज़ोर से टकराई कि जहाज़ के डैक (तख्ता) के साएबान का लट्ठा टूट गया और जहाज़ में कुछ पानी भी भर गया, तमाम साथ वाले और खास-कर रसोवड़े के मुलाज़िम बहुत घबरा गये। उस वक्त की हालत लिखने में नहीं आ सकती। जहाज़ में जगह २ चटखने की (टुटने की) आवाज़ें सुनाई देती थीं। एक एक मिनिट पर्वत के समान कठोर मालूम होता था। चित्त में भयङ्कर विचार पैदा होते थे। सब पिछली खुशियां भूल-गये और हर एक के चेहरे पर उदासी छाई हुई थी।

ता. ९ सितम्बर। यह रात भी बहुत बेचैनी से कटी। इस रोज़ समुद्र का पानी रसोवड़े में भी पहुंच गया। दरबार को ज्यादह चिन्ता नहीं थी, कारण यह कि आप के रक्षक श्रीगोपालजी महाराज आप के साथ थे और आप को विश्वास था किः—

"जिन के रिछपाल गोपाल धनी उनको बलभद्र कहां डर रे"

मगर साथ वालों को घबराया देख कर श्रीहजूर साहिब

ने दो रोज़ तक जीमण नहीं फ़रमाया । श्री गोपालजी महाराज की कृपा से इतना भयङ्कर रूप दिखलाने पर भी तूफ़ान से कुछ नुक़सान न हुआ और धीरे २ बम्बई के समीप पहुंचते २ कम हो गया ।

ता. १० सितम्बर । इस रोज़ राधा अष्टमी थी इस वास्ते श्रीहज़ूर ने ठाकुरजी महाराज की भेंट नियमानुसार की और वहां गोटे का हार परसाद दिया गया ।

ता. ११ सितम्बर । श्रीदरवार के हुकम से तीन लाकट मीने कारी के काम के कप्तान और जहाज़ के चीफ़ अफ़सर व इञ्जीनियर को वख्शे गये और जहाज़ के दूसरे मुलाज़मों को १०० पाऊण्ड इनाम दिया गया । अव बम्बई बन्दर समीप आता जाता था । प्रत्येक मनुष्य अपने निज देश में पहुंचने के लिए उतकण्ठित था । सब की निगाहें समुद्र के किनारे पर लगी हुई थीं । अव जो सफ़र वाक़ी रह गया था वह भी इन को वहुत ही अनसुहावना मालूम होता था और प्रत्येक मनुष्य की यही इच्छा थी कि वम्बई पहुंच कर भारतवर्श की पवित्र भूमी के देखने का सौभाग्य प्रात करे ।

(बम्बई में प्रवेश)

ता. १२ सितम्बर । जव जहाज़ वम्बई में पहुंचा तो दो दफ़ा सलामी की तोपें चलाई गईं । श्रीहज़ूर ने दूसरी पोशाक धारण फ़रमाई । राजा उदेय सिंहजी ने हाज़िर हो कर बम्बई के तमाम इन्तज़ाम के वारे में अर्ज़ की, मिस्टर काव साहिब रेज़िडेन्ट जयपुर, व दूसरे ताज़ीमी सरदारान जयपुर ठाकुर बहादुरसिंहजी रानावत, ठाकुर देवीसिंहजी डांगरथल,

प्रोहित राम प्रतापजी, व दूसरे उमरा मौजूद थे जिन्हों ने दरबार की पेशवाई की। दूसरे साथियों के इष्टमित्र भी वहां पहुंच गये थे जो एक दूसरे को मुबारिकवाद देते थे। प्रत्येक मनुष्य के दिल में खुशी की लहरें उठ रही थीं। जब जहाज़ अपेलो बन्दरगाह में पहुंचा दरबार ने विधिपूर्वक समुद्र का पूजन किया। वङ्कटेश्वर प्रेस की तरफ़ से खेमराज जी ने श्रीहज़ूर की खिदमत में ऐडरेस पेश किया। दूसरा ऐडरेस जैन सभा बम्बई की तरफ़ से दिया गया। वहां पर भीड़ बहुत ज़ियादह थी, फिर दरबार कोलाबा स्टेशन पर पधारे और वहां तीन घण्टे ठहरने के बाद दरबार की स्पेशल साढे सात बजे रवाना हुई। इस तमाम वक्त में नौरोजी धनजी भाई प्रोपराइटर थीएटरिकल कम्पनी की पारटी गाना गाती रही और नौरोजी ने भी दरबार की खिदमत में ऐडरेस पेश किया। स्पेशल में रेज़िडैन्ट काब साहिब व करनल जैकब साहिब दरबार के शरीक थे।

ता. १३ सितम्बर। ७ बजे स्पैशल अहमदाबाद पहुंची, वहां दरबार की पारटी की पेशवाई के लिए सर प्रतापसिंहजी के कँवर दौलतसिंहजी स्टेशन पर मौजूद थे। स्पैशल असोनियां प्लेटफ़ार्म पर खड़ी की गई थी और वहां दरबार ईडर की तरफ़ से श्रीहज़ूर के लिए एक डेरा लगाया गया था, दरबार ने उसी में भोजन फ़रमाया और वहां से स्पैशल दो बजे बाद रवाना हुई। मुलाज़मान ईडर को दरबार ने एक हज़ार रुपया इनाम दिया। रानी स्टेशन पर स्पैशल ११ बजे रात्री को

पहुंची वहां श्रीदरबार ने १॥ घण्टे तक क़याम फ़रमाया नीमाज ठाकुर साहिब ने हाज़िर हो कर श्रीहजूर साहिब की नज़र की। महाराजा सर्दारसिंहजी और सर प्रताप सिंहज़ी मारवाड़ जङ्क्शन पर पेशवाई के वास्ते मौजूद थे। मारवाड़ जङ्क्शन से स्पेशल रात्री को ढाई बजे रवाना हुई।

ता. १४ सितम्बर। सुबह सात बजे स्पेशल अजमेर पहुंची। बाबू श्यामसुन्दरलालजी मुसाहिब रियासत किशनगढ, और ठाकुर भरतसिंहजी मेम्बर किशनगढ दरबार से स्टेशन किशनगढ पर आ कर मिले। फुलेरे में प्लेटफ़ार्म पर बहुत ज्यादा भीड हो रही थी। लग भग दो हज़ार आदमियों से ज्यादा मौजूद थे। तमाम मुलाज़मान राज ने वहां पर दरबार की नज़रें कीं।

(जयपुर में प्रवेश)

ता. १४ सितम्बर। स्टेशन जयपुर पर प्रातः काल से सर्दारान् व ओहदेदारान् रियासत व अगनित रिआया का हुजूम हो रहा था। ताज़ीमी सर्दारान् व खास चोकी सर्दारान् व तमाम मेम्बरान् कौन्सिल और तमाम शहर के मनुष्य अपने अन्नदाताजी के दर्शनों के लिए प्लेटफ़ार्म पर खड़े हुऐ स्पेशल का इन्तज़ार कर रहे थे। स्टेशन खूब सूरत झंडों और बांदरवार वगैरह से खूब सजाया गया था। स्टेशन से हथरोई की कोठी तक सड़क के दोनों तरफ फ़ौज लैन बांधे हुए खड़ी हुई थी और ट्रेन्सपोर्ट कोर की सौ गाडियां सामान रखने के लिए खड़ी हुई थीं। स्टेशन पर प्लेटफ़ार्म से पुल तक कालेज और स्कूल के

विद्यार्थी सुन्दर वस्त्र पहने हुए और पुष्पों के हार हाथों में लिए हुए ट्रेन का इन्तज़ार कर रहे थे। उन में से कितने ही खूब सूरत झण्डे लिए हुए थे जिन पर "वैलकम होम", "लाङ्ग लिव दी महाराजा" और इस ही तरह के दूसरे माटो खूब बडे हरफ़ों में लिखे थे, वे हवा में लहराते हुए बहुत ही मनोहर मालूम होते थे। जिस वक्त ट्रेन क़रीब ११। बजे के सीटी देती हुई नले अमानीशाह से आगे बढ़ी। इन लड़कों ने एक दम खुशी के जोश में "लाङ्ग लिव ग्रवर महाराजा" (हमारे श्री माहाराजाधिराज चीरंजीव रहैं) के शब्दों को ज़ोर से उच्चारण किया। हार और फुलों की बोछार उस सेलून पर होने लगी कि जिस में श्री अन्नदाताजी विराजमान थे। दरबार भी निहायत खुशी और मुस्कराहट के साथ इन विद्यार्थियों को देखते हुए अपने दर्शनों से कृतार्थ करते जाते थे। प्लैटफ़ार्म पर पहुंचने से पहले जब ट्रेन माल गोदाम के नज़दीक पहुंची उस वक्त सलामी की तोपें चलना शरू हुईं। और दर्शनाभिलापियों के दिलों में खुशी की तरंगें और ज्यादा उठने लगीं। प्लैटफ़ार्म पर मिस्टर स्टाथर्ड साहिब रेवरेन्ड मेकलिस्टर साहिब, ट्रेल साहिब और अन्य यूरोपियन साहिबान भी मौजूद थे। प्लैटफ़ार्म पर एक खूब सूरत क़ालीन और कुर्सियां बिछी हुई थीं। दरबार के सेलून से उतरने पर दर्शनाभिलापियों ने उन को चारों तरफ़ से घेरलिया और हुजूम के सबब से गाडी तक पहुंचने में आप को बहुत वक्त लगा। श्रीठाकुरजी पहले से रवाना कर दिये गये थे। जेकब साहिब और रज़िडेन्ट काब साहिब
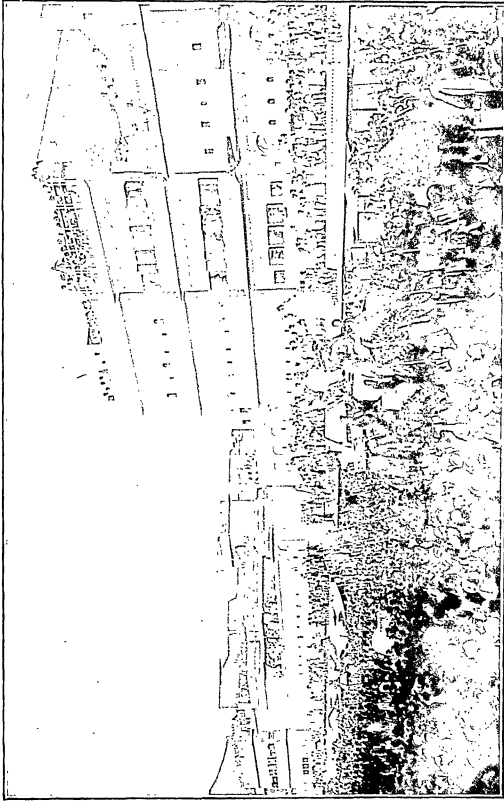
सवारी जलुस वापसी समय शहर में दाखिल होनेकी.

श्रीदरबार के हमराह कोठी तक गऐ । कोठी से वे रुखसत हुए और कोठी में दाखिल होने पर २५ तोपे सलामी की चलाई गई । सरदारों ने नज़रें गुज़रानीं । ३ अकतूबर तक दरबार ने कोठी में क़याम रक्खा और इन दिनों में रियासत के औहदेदारों और महकमेजात राज के मुलाज़मों को नज़रें दिखाने का अवकाश दिया गया ता कि हर एक को एकान्त मे श्रीहुज़ूर के दर्शनों का शुभ अवसर प्राप्त हो सके ।

॥ शहर में प्रवेश ॥

ता. ४ अक्तूबर । श्रीदरबार जलूस के साथ शहर में पधारने को थे इस लिऐ बाज़ार में दुकानों और मकानों की छतों पर प्रजा का बहुत ज्यादा हुजूम हो रहा था । दुकानदारों ने अपनी दुकानों को खास तौर पर सजाया था और स्कूल और कालेज के विद्यार्थी उस दिन महाराजा कालेज के दरवाज़े से संस्कृत कालेज तक बराबर लाईन बांधे खड़े हुए थे । उन के सामने दरबार पर नोछावर करने के लिए मेज़ों पर हारों और फूलों के ढेर लगे हुए थे । हाथ में सुन्दर झण्डे भिन्न भिन्न माटोज़ के लहराते थे ।

हथरोई की कोठी पर माही मरातब और लवाज़मा तैय्यार था, और वहां रियासत के तमाम सर्दार मैम्बरान कौन्सिल, और कर्मचारी, व सन्त महन्त इत्यादि मौजूद थे । दरबारने ६ बजे उठ कर जी. सी. एस. आइ. की पोशाक धारण फ़रमाई, श्रीगोपालजी का रथ पहले से रवाने कर दिया गया था । फिर दरबार तख्तरवान् में सवार हुए ।

और २५ तोपें सलामी की चलाई गईं । कोठी के दरवाज़े से गुलाब गज हाथी पर सवार हो कर ७॥ बजे सवारी शहर की तरफ़ रवाना हुई । रावजी दूनी ख़वासी में पीछे बैठे थे। और दायें बायें तरफ़ ठाकुर साहिब सिवाड़ और ठाकुर साहिब अचरोल ख़वासी में हाथी पर थे । जब जलूस रवाना हुआ तमाम ताज़ीमी सरदार घोड़ों पर सवार हो गये थे। रज़ीडेन्ट काब साहिब पहले से शहर में सवारी देखने के लिए बालमुकन्दजी बज की हवेली पर जा बैठे थे । जलूस सड़क अजमेर हो कर सांगानेर दरवाज़े से शहर में दाख़िल हुआ । रजिडेन्ट साहिब से रास्ते में सलाम हुआ । जब सवारी कालेज के सामने पहुंची तो स्कूल और कालेज के विद्यार्थीयों ने बड़ी प्रसन्नता से चीयर्स दिये और हार व फूलों की इतनी बोछार की कि हाथी का होदा तमाम फूलों से भर गया । श्रीहुज़ूर साहिब का स्वागत जयपुर में उसी उत्साह वा धूम धाम से किया गया कि जिस तरह विलायत में हुज़ूर बादशाह सलामत का स्वागत हुआ था । तमाम जयपुर निवासी स्त्री पुरुष आ-बाल वृद्ध दुकानों में व मकानों की छतों पर हरतरफ़ से अपनी प्रसन्नता प्रकट कर रहे थे । दरबार भी इस उत्साह को देख कर बडे प्रसन्न हुए । सिरे ड्योढी दरवाज़े से हो कर साढे नो बजे सवारी ड्योढी में दाख़िल हुई और दरबार के चन्द्र महल में पधारने पर फिर २५ तोपें सलामी की चलाई गईं । श्री हुज़ूर ने छोटे और बडे दरबारों के मंदिरों में जा कर भेट की । फिर कुछ आराम करने के बाद सीताराम द्वारे श्री गोबिन्ददेवजी और ईश्वरावतार की

छतरी में पधारे और वहां भेट चढा कर दस बजे चन्द्रमहल में वापिस पधारे। उस वक्त किले नाहरगढ से फिर २५ तोपें सलामी की चलाई गई, ब्राह्मणो ने उसी रोज़ वरणी ख़तम की थी और शान्ति जल (आशीष) श्री अन्नदाताजी को ला कर दिया।

॥ दरबार आम ॥

ता. ६ अक्तुबर सन् १६०२। श्रीहुजूर साहिब के लण्डन से आने की खुशी में दीवाने आम में दरवार हुआ, ३॥ बजे श्रीअन्नदाताजी ने वह पोशाक धारण फ़रमाई कि जो लण्डन में बादशाह सलामत से मुलाक़ात करने को जाते वक्त धारण की थी, यानि जामा, कमरबन्द, कटार, खूंटेदार पाग, जेवरात और तलवार। साहिब रज़ीडेन्ट वहादुर का स्वागत उस दिन ठाकुर साहिब करनसर और ठाकुर साहिब गुढ़ा ने अजमेरी दरवाज़े से किया था और सरहद की ड्योढी पर ठाकुर साहिब अचरोल ठाकुर साहिब मलसीसर ने रज़ीडेन्ट साहिब वहादुर की पेशवाई की। रज़ीडेन्ट साहिब यूनीफ़ार्म पहने हुए थे। जैकब साहिब डाक्टर रोबिनसन साहिब, स्टाथर्ड साहिब और रैवरन्ड मैकालेस्टर साहिब भी दरवार में शरीक थे। यह सब चन्द्रमहल में गये, और वहां से ४ बज कर ४० मिन्ट पर श्रीदरवार को अपने हमराह दरवार में लाये, रज़ीडेन्ट साहिब ने यह स्पीच फ़रमाई।

॥ स्पीच ॥

"जनाब **महाराजा साहिब** बहादुर व जुमले हाज़रीन

दरबार ! एक साल का अरसा गुज़रता है कि मैं ने इस ही दिवान खाने में जनाब महाराजा साहिब बहादुर को विलायत जाने और जनाब बादशाह आलम पनाह और उन की मलका मोअज़मा के जशन ताज पोशी में शरीक होने के लिए दावत शाही का पैग़ाम पहुंचाया था। सिवाय हम लोगों के कि जो यहां पर मौजूद हैं और कोई ख़ास तरह से नहीं जानता है कि इस फ़रमान शाही की तामील में जयपुर की पुरानी चाल और रसम से किस क़दर तजावुज़ करना पड़ा है। जिस रोज़ कि महाराजा साहिब बहादुर का जहाज़ विलायत को रवाना हुआ उस रोज़ तक भी बहुत से लोगों को महाराजा साहिब की तबीयत का ठीक अन्दाज़ा नहीं हो सका, क्यों कि वे यह झूंटा ख़याल बांधे हुए थे कि महाराज साहिब विलायत जाने के इरादे को ज़रूर छोड देंगे। आज हम लोग इस ख़ुशी और मुबारिक मौके पर सफ़र विलायत से आप को अपनी दारुल-सलतनत और अपनी रिआया में अमनोअमान के साथ वापस आने की मुबारिकबाद देने को इस दरबार में जमा हुए हैं। और हम कह सकते हैं कि आप का विलायत जाना हर तरह से कमाल व बहुत ज्यादा कामयाबीका सबब हुआ। आप के विलायत जाने में जो जो मुशकिलात पेश आईं वह सब यके बा दीगरे रफ़ा हो गईं, और दरयाई सफ़र के ख़तरात जो ऐसे लोगों की नज़रों में ख़ोफ़नाक मालूम होते थे कि जिन्हों ने पहले कभी दरयाई सफ़र नहीं किया था वह तजरुबे से उतने भयानक नहीं पाये गये। विलायत पहुंच कर १० हफ्ते तक आप वहां रहे

जितना आप को अपने बादशाह से कई बार निहायत इत्तहाद के साथ मुलाक़ात करने का ऐज़ाज़ हासिल हुआ और बहुत से मशहूर-उल-वक्त अंग्रेजों से मिलने और बात चीत करने का मौक़ा पेश आया हम नहीं कह सकते कि आप के थोड़े से नये तजरबों ने आप के दिल में क्या कैफ़ियत पैदा की होगी मगर हम उम्मीद करते हैं बल्कि हम को विश्वास होता है कि उन की तासीरात निहायत दिल चस्प होंगी। अब मेरी यह ख्वाहिश है कि उस मिसाल अताअत और वफ़ादारी तख्त की बाबत कि जो आपने तमाम हिन्दुस्तान के लिए क़ायम कर दी है, और सबरो इस्तक़लाल के बाइस कि जिस से आपने तमाम उन मुशकिलातों को हल किया है कि जो आप के फ़र्ज़ पूरा करने में हारिज हुई हैं और उस कामिल कामयाबी की बाबत कि जो आप की कोशिश के शामिल हाल रही है मैं आप को निज के तौर पर मुबारिक बाद बृटिश गवरनमेन्ट की तरफ़ से कि जिस के क़ायम-मुक़ाम होने की इज्जत इस जग मुझ को हासिल है और इन साहिबान की तरफ़ से कि जो इस रियासत में काम कर रहे हैं और अगर हम कह सकें तो आप के जागीर दारान और प्रजा की कि जो आज यहां दरबार में मौजूद हैं हम आप को सच्चे दिल से मोहब्बत से भरा हुआ मुबारिक बाद देते हैं और चाहते हैं कि आप को अपनी रियासत और राजधानी में लोट कर आना मुबारिक हो"।

इस स्पीच का तर्जुमा उर्दू में बाबू संसारचन्द्रजी साहिब ने पढ़ कर सुनाया और उस के पश्चात् हिज़ हाईनेस महाराजा

साहिब बहादुर की तरफ़ से स्पीच का जवाब उर्दू और अंग्रेज़ी भाषा में निम्न लिखित बाबू साहिब मौसूफ़ ने बयान किया।

॥ जवाब स्पीच ॥

मिस्टर काब साहिब वा हाज़रीन दरबार! जो स्पीच हमारे दोस्त मिस्टर काब साहिब बहादुर ने अभी पढी है उस ने सब लोगों को उस दरबार आम की याद दिलाई होगी कि जो पिछले साल तारीख १० अक्तूबर को इसी दिवान खाने में हुआ था। और उस वक्त हुजूर बादशाह सलामत किङ्ग ऐडवर्ड सप्तम शाहनशाह हिन्दुस्तान का फ़रमान पढा गया था कि जिस की ताज़ीम और तकरीम हम ने और हमारे जागीरदारों ने मुनासिब तरीके से की थी। उस वक्त हमारे ख़याल में नही आया था कि बादशाही फ़रमान की तामील में जनाब बादशाह आलम-पनाह और उन की मलका मौअज्जमा के ताजपोशी के जशन में शरीक होने के लिए विलायत जाने में हम को कितनी तकलीफ़ों का सामना करना पड़ेगा, हमारे प्यारे दोस्त मिस्टर काब साहिब बहादुर ने इस सफ़र में पुरानी रस्म और चाल को छोडना बयान किया है यह दर असल बहुत सही है, इस सफर के पेचीदा मामले को तै करने में जो बहुत सी कठिनाइयां पेश आईं अगर उन सब की कैफ़ियत बयान की जावे तो हम को ख़याल है कि इस दरबार के उपस्थित सभ्यगण सुनते सुनते थक जावेंगे। सब से पहला और बडा मामला यह था कि लण्डन में किस तरह रहना उचित होगा कि जिस से हमारे देश की

हमारी जाति की और हमारे धर्म के परिचारित आचार विचारों की पावन्दी भी पूरी तौर पर बनी रहे, और वहां के रिवाज के विरुद्ध भी कोई बात न होने पावे। दूसरी कठिनाई यह मालूम होती थी कि यह दरयाई सफ़र किस तरह तै पावेगा क्यों कि तीन हफ्ते तक जहाज़ में रहने से जिन जिन घटनाओं का सामने आना वयान किया जाता था उन के विषय में भिन्न भिन्न बातें सुनाई दिया करती थीं। हम उपस्थित सज्जनों से यह बात भी छुपाना नहीं चाहते कि हम को इस सफ़र के करने में बहुत सोच विचार था। बम्बई से रवाने होने के बाद ही हम को समुद्र तूफ़ानी हालत में मिला क्यों कि कुछ समय पहले ही एक तूफ़ान उधर हो कर गुज़र चुका था। सौभाग्य से ख़ास हम को दरयाई बीमारी नहीं हुई मगर बहुत से हमारे साथ जाने वाले इस रोग से पीड़ीत हो गए। उस तूफ़ान के बरदाश्त करने के बाद हम को हमारे पूर्वजों की बुद्धिमानी पर आश्चर्य हुआ कि जो समुद्र के सफ़र से जान बूझ कर बचे रहते थे, लेकिन वे लोग अपने फ़र्ज़ को अदा करने के वास्ते अपने बादशाह की रहीमाना फ़र्मान नहीं रखते थे कि जिस की तामील करना हमारी जात के लिए फ़ख्र और खुशी का सबब है। हम उपस्थित दरबारियों को यक़ीन दिलाते हैं कि फ़र्मान शाही की तामील और वफ़ादारी ज़ाहिर करने के अतिरिक्त हम किसी और उद्देश्य को ले कर इतनी तकलीफ़ें बरदाश्त नहीं करते। अपने बादशाह के हुक्म की तामील

करने और वफ़ादारी दिखलाने का ख़याल हर एक सच्चे राजपूत के दिल को ज़िन्दा और ताज़ा करने वाला होता है और ख़ास हमारे लिए तो इस सफ़र के करने में कोई सोच विचार की बात भी होती तो उस को दूर करने के लिए सिर्फ़ यह ही ख़याल काफ़ी था और आप ने अपनी स्पीच में हमारे मुलाक़ातों का ज़िकर किया है कि जो हुज़ूर सम्राट् और शाही खान्दान के सर्दारों और इङ्गलिस्तान के बडे बडे रईसों से हुई इस की निसवत सिर्फ़ इतना कहना काफ़ी होगा कि इङ्गलिस्तान में रहने से जो जो खयालात हमारे दिल में पैदा हुए हैं उन को पूरी तौर से वयान करने में हम असमर्थ हैं । अव ऐसा मालूम होता है कि मानों हम किसी ऐसे पवित्र और मनोज्ञ देश में गये हुए थे कि जहां लताफ़त, अज़मत, शराफ़त के सिवाय और कुछ नज़र नहीं आता । जिस महरबानी और बादशाही आग्रह से हुज़ूर सम्राट् और महारानी मलका मोअज़्ज़मा ने हमारी महमानी की वह लिखने में नहीं आसकती । मगर हम जानते हैं कि जो नक़्श हमारे दिल पर जम गया है वह कभी दूर नहीं होगा । न केवल सलतनत के बडे बडे वज़ीरों और शहर के माननीय सर्दारों कि जिन से हम को मुलाक़ात का मौक़ा मिला बल्कि विलायत के हर एक रहने वालों को ख़ुश तवाज़े महरबानी और ख़ातिर दारी में एक दूसरे को बढा चढा पाया, तमाम अमीर व ग़रीव हम को देख कर आम तौर से ख़ुश होते थे कि हम पूर्व से इतने दूर का रास्ता तै कर के

बादशाही आदाब बजा लाने के लिए वहां गये हुए थे । जिस सन्मान और प्रेम का बर्ताव हमारे साथ किया गया वह हम से कभी भूला नहीं जा सकता । और मिस्टर काब साहिब बहादुर हम आप का तहे दिल से शुक्रिया अदा किये बगैर नहीं रह सकते कि आप ने महरबानी फ़र्मा कर हमारे सफर का और विलायत में हमारे ठहरने का अच्छा प्रबन्ध कर-दिया था । और आप ने हमे यक़ीन दिलाया था कि जो मुश्किलें हम को इस वक्त ऐसी मालूम होती है कि हम उन को रोक नहीं सकते वह हमारे साहस के सामने धीरे २ दूर हो जावेंगी और सच मुच ऐसा ही हुआ । अलबत्ता यह बहुत अफ़सोस रहा कि आप हमारे साथ विलायत नहीं जा सके क्यों कि हम और आप दोनों एक ही समय में रियासत से बाहर नहीं जा सकते हैं । हमारे पुराने और सच्चे दोस्त करनैल सर स्विन्टन जैकब साहिब बहादुर की खिदमात सफ़र वाक़ेई क़ाबिले क़द्र हैं और उन का शुक्रिया अदा करते हैं । उन्हों ने हमारे विलायत के सफ़र को कामयाब बनाने में बहुत मेहनत उठाई और उन की आज़मूदाकारी और मुस्तैदी से हम को बहुत फ़ायदा पहुंचा । हम को उम्मीद है कि जनाब हुज़ूर वाइसराय गवर्नर जनरल बहादुर और जनाब आनरेबिल मिस्टर मारटिन्डैल साहिब बहादुर की रोज़ अफज़ूं महरबानी और नवाज़िश के इज़हारे शुक्रिये का हम को बाद में अच्छा मौक़ा मिलेगा । मगर इस जगह भी मुख्तसर तौर पर ज़िकर किये बगैर अपनी स्पीच खतम नहीं कर सकते हैं

क्यों कि विलायत में हम को जो सन्मान मेहरवानी का मिला वह वहुत कुछ उन्हीं की हमदर्दी और दोस्ताना सलूक का वाइस था। आख़िर में हम आप साहिवों की बहुत महरवानी और मुबारिक बादी का शुक्रिया अदा करते हैं"।

तमाम सर्दार ओहदेदार और अहलकार वगैरा इस दरबार में शरीक थे। पांच बज कर दस मिनट पर नाच और गाना शुरू हुआ। श्रीहुजूर साहिब ने फूल माला और इत्र से रजीडेन्ट बहादुर और दूसरे युरुपियन साहिबों की तवाज़े की जो कि साढे पांच बजे दरबार से वापिस पधार गये। ठाकुर साहिब डिग्गी और ठाकुर साहिब चोमूं फ़र्श कालीन तक उन के साथ गये। बाबू संसारचन्दरजी ने लेडी जैकब साहिबा और दूसरे युरुपियन साहिबों की इत्र और हार से तवाज़े की। बाद में हाज़रीन दरबार ने श्रीहुजूर साहिब की नज़रें कीं। दरबार बरखास्त होने पर श्रीहुजूर साहिब तख्त रवां पर सवार हो कर पांच बज कर ४५ मिनिट पर चन्द्र महल में दाखिल हुए।

॥ कुछ और आवश्यक ऐतिहासिक परिचय ॥

यह कितने आनन्द की बात है कि जिस पुस्तक के प्रकाशित करने की अभिलाषा पूरे बीस वर्ष से बनी हुई थी वह ईश्वर की कृपा से आज पूरी हुई। हम चाहते थे कि यह पुस्तक श्री जयपुर नरेश के विलायत यात्रा से पधार-आने के पीछे तुरन्त ही प्रकाशित करदी जाती। परन्तु समयाभाव से हम ऐसा न कर सके। इस के अतिरिक्त यात्रा के समाचारों का संग्रह करना भी कुछ सरल कार्य

न था। फल यह हुआ कि श्रीहुज़ूर साहिब की यात्रा और इस पुस्तक के प्रकाशन् में बीस वर्ष का अन्तर हो गया। अतः यह आवश्यक जान पड़ा कि इस समय में जो जो राज्य सम्बन्धी विशेष घटनायें हुईं उन का भी कुछ उल्लेख किया जाय।

सन् १९०२-१९०३ इङ्गलेण्ड से पधारने के पीछे श्रीहुज़ूर साहिब हिन्दुस्तान के वाइसराय साहिब बहादुर लार्ड कर्ज़न से भेट करने को तारीख़ ११ अक्तुवर सन् १९०२ को **शिमला** पधारे। वहां से लोटते समय श्री हरिद्वार में गङ्गा स्नान किया। इस ही वर्ष के नवम्बर मास की २७ तारीख़ को **लार्ड कर्ज़न** जयपुर पधारे। ता० १ जनवरी सन् १९०३ को होने वाले देहली दरबार में सम्मलित होने के लिए श्री दरबार तारीख़ २५ दिसम्बर सन् १९०२ को **देहली** पधारे। सन् १९०३ में ही दरबार को जी. सी. वी. ओ., की उपाधि मिली। जिस के उपलक्ष में ता० ११ फ़रवरी सन् १९०३ को शरबते में दरबार हुआ। उन्हीं दिनों में **ड्यूक और डचेज़ आफ़ केनाट** भी जयपुर में पधारे हुए थे। उसी वर्ष के नवम्बर मास में **सर कर्ज़न वायली** साहिब का जयपुर में आगमन हुआ।

सन् १९०४। इस वर्ष मेओ कालेज अजमेर में रईसों की कानफ़ेन्स हुई उस में जयपुर महाराज तारीख़ १० मार्च से १७ मार्च तक **अजमेर** विराजमान रहे। वहीं पर उदयपुर, ग्वालियार, विकानेर, रीवां, धोलपुर कोटा, कच्छ, औरछा और सैलाना आदी रियासतों के रईसों से

भेट हुई । अजमेर से लौटते समय श्री महाराज साहिब तीन दिन किशनगढ़ विराजे। इसी वर्ष तारीख़ १४ जुलाई (सन् १९०३) से जयपुर राज्य पोस्ट आफ़िस का नया प्रबन्ध हुआ, और इसी समय से टिकट, लिफ़ाफ़े और पोस्टकार्ड जारी हुए ।

सन् १९०५। प्रिन्स आफ़ वेल्स और शाहज़ादी साहिबा २१ नवम्बर से २३ नवम्बर तक जयपुर में रहे जो आज ईश्वर की कृपा से सम्राट पञ्चम जार्ज और सम्राज्ञी मेरी के नाम से राज करते हैं ।

सन् १९०६ । श्रीमान् दरबार तारीख़ २० अप्रेल को आबू पधारे और वहां से ग्वालियार २३ अप्रेल को पधार कर २६ अप्रेल तक विराजे, ग्वालियार से ईडर पधारे और वहां पहली मई तक रहे ।

सन् १९०७। हिज़ मजेस्टी अमीर हबीबउल्ला खां साहिब अमीर काबुल के हिन्दुस्तान पधारने के उपलक्ष में आगरे में दरबार हुआ उस अवसर पर श्री जयपुर नरेश ४ जनवरी को आगरे पधारे । २३ जनवरी तक सवारी वहीं विराजी । इसी वर्ष में श्री बड़ी महाराणी जादूणजी साहिबा अमरगढ़ पधारीं और वहां पर आप २६ सितम्बर से ४ अक्तुबर तक विराजी रहीं। फिर दिसम्बर मास में श्री जगदीशपुरी की यात्रा की।

सन् १९०८। तारीख़ १० जनवरी को महारानीजी साहिबा यात्रा से वापिस पधारीं । तारीख़ १७ फ़रवरी को ज़नानी ड्योढी में दरबार हुआ जिस में मलिका अलेगज़ेण्डरा साहिबा की तसवीर खोली गई और उन की चिट्ठी

पढ कर सुनाई गई। महारानीजी साहिवा आव हवा वदलने के लिए **मसूरी** पधारीं और साथ में राय वहादुर वावू संसारचन्द्रजी सैन और राजा उदयसिंहजी गय थे। वहां डेढ मास तक कयाम रहा और वहां से वापिस आते समय **आगरे की कोठी** में ३० सितम्बर तक सवारी विराजी और पूरे सात हफ्ते वाद सवारी जयपुर में पधारी।

सन् १९०९ । तारीख १८ जून को श्रीदरवार जोधपुर पधारे और वहां तारीख २० जून तक विराजे। इस ही वर्ष तारीख ५ नवम्वर को श्री वडे महारानीजी साहिवा का स्वर्ग वास हुआ, जिस से तमाम प्रजा गणों को वड़ा शोक हुआ।

सन् १९१० । तारीख ६ मई को सम्राट सप्तम ऐडवर्ड का देहान्त हुआ और इन के शोक का दरवार दीवान खाने में तारीख ९ मई को हुआ। फिर तारीख २४ अगस्त को दीवान खाने में श्रीहुजूर सम्राट की यादगार के लिए फन्ड इकट्ठा करने के अभिप्राय से जन साधारण की एक मीटिङ्ग हुई। तारीख २३ दिसम्वर को हिज़ रायल हाईसेन युवराज जर्मनी जयपुर में पधारे और तारीख २७ दिसम्वर तक निवास किया।

सन् १९११ । तारीख २२ जुन को इङ्गलेण्ड में हुजूर सम्राट जार्ज पञ्चम की ताजपोशी का दरवार हुआ। तदनन्तर देहली में भी दरवार ताजपोशी होना निश्चित हुआ। उस में शामिल होने के लिए हुजूर सम्राट हिन्दुस्तान पधारे। इस दरवार में शामिल होने के लिए श्रीदरवार तारीख २ दिसम्वर को देहली पधारे और तारीख १६

दिसम्बर तक वहां रहे। वहां पर अलावा बड़े २ भारतीये नरेश के आला अफ़सरान गवर्नमेन्ट, अर्ल आफ़ क्रु, सर जेम्स डनलफ़ स्मिथ, बटलर और हयूवट साहिबान से भेट हुई। तारीख़ ११ दिसम्बर को देहली दरबार हुआ और वहां श्री दरबार को मेजर जनरल की पदवी से सम्मानित किया गया। तारीख़ १६ दिसम्बर को हुजूर सम्राट नैपाल पधारे। और श्रीमती सम्राज्ञी आगरे पधारीं। दरबार के पश्चात श्रीदरबार ने तारीख १६ दिसम्बर को देहली से रवाना हो कर १७ दिसम्बर को जयपुर में पदर्पणकिया।

इसी महीने की तारीख़ ११ से २१ तक श्रीमती सम्राज्ञी जयपुर में विराजीं।

सन् १९१२। तारीख १५ जनवरी को माजी साहिबा श्री बड़ा राठोड़जी का स्वर्ग वास हुआ।

हिज़ एक्सेलेन्सी लार्ड हार्डिङ्ग साहिब तारीख़ ११ नवम्बर को जयपुर पधारे और तारीख़ २१ को वापिस पधारे। उक्त लाट साहिब ने २१ नवम्बर को श्रीहुजूर एडवर्ड की यादगार का उद्घाटन किया और इस से एक दिन पूर्व लेडी साहिबा ने कर्ज़न वायली की यादगार शफ़ाख़ाने में खोली।

सन् १९१३। तारीख़ १२ जनवरी को राइट आनरेबिल लार्ड माण्टेग साहिब अण्डर-सेक्रेटरी फ़ार इण्डिया जयपुर पधारे। और तारीख़ १३ जनवरी को वापिस गए। दरबार दरभंगा हिन्दु युनिवर्सिटी का डेपुटेशन ले कर २४ जनवरी को जयपुर आए, और २६ तक यहां रहे। श्रीदरबार ने ५०००००) पांच लाख मुद्रा प्रदान की।

सन् १९१५ । २४ मई को श्रीगङ्गाजी की प्रतिष्ठा नये मन्दिर में हुई । और तारीख २४ जून को श्रीगोपालजी की प्रतिष्ठा वृन्दावन के माधोविलास नामी मन्दिर में हुई । तारीख २१ फ़रवरी को श्री लाडलीजी की प्रतिष्ठा बरसाने के मन्दिर में हुई । गंगोत्री में श्रीदरबार ने गङ्गाजी का एक नया मन्दिर बनवाया है उस के लिए श्रीगङ्गाजी की मूर्ति जड़ाउ ज़ेवर सहित तथा १ लाख रुपये राजा टिकेन्द्रजंग टेहरी नरेश के पास ५ जूलाई को भेजे । इस मूर्ति की प्रतिष्ठा ११ जूलाई को गंगोत्री के मन्दिर में हुई ।

सन् १९१६ । श्रीदरबार गङ्गाजी का बन्द (Narora Ganges Band) देखने राजघाट पधारे । लार्ड हार्डिङ्ग साहिब बम्बई तशरीफ़ ले जा रहे थे उन से भेंट करने के लिए श्रीदरबार तारीख १ अप्रेल को सवाई माधोपुर पधारे । वहां विमान भवन में चाय पानी कराया गया । स्वयं श्रीदरबार ने एक मोहरबन्द लिफ़ाफ़ा श्रीमान् लाट साहिब को दिया जिस में अपने उत्तराधिकारी का नाम दर्ज था और वाईसराय साहिब से यह प्रगट किया कि इस लिफ़ाफ़े को उस समय तक सुरक्षित रक्खा जावे कि जब तक इस के खोलने की आवश्यकता उपस्थित हो ।

श्रीमान् लार्ड चेम्सफ़ोर्ड भारत वाईसराय तारीख ९ नवम्बर को जयपुर पधारे । उसी दिन उन्हो ने जयपुर शेखावाटी रेलवे का उदघाटन किया और दो दिन ठहर कर तारीख १२ नवम्बर को वापिस पधारे । श्रीदरबार की इच्छानुसार यह निश्चित हुआ कि श्री हरद्वारजी में खास२

हिन्दु नृपतियों की एक कान्फ्रेंस की जावे जिस में हरद्वार से बनने वाली एक नहर के बावत विचार किया जावे कि श्री जल की पवित्रता में फ़रक न पड़ सके और नहर भी जारी हो सके । श्रीदरबार के अतिरिक्त महाराजा पटियाला, बीकानेर, अलवर, बनारस, दरभंगा, कासिम-बाज़ार तथा पण्डित मदनमोहन मालविया, राजा रामपाल सिंह और हिन्दु जाति के अन्य नेता इस कान्फ्रेंस में उपस्थित हुए । सर जेम्स मेस्टन साहिब लेफ़टिनेन्ट गवरनर यू. पी. (संयुक्त प्रांत) इस कान्फ्रेंस के सभापति थे। उक्त सम्मेलन का एक साधारण अधिवेशन तारीख १७ दिसम्बर को हुआ और दूसरा विशेष अधिवेशन १९ को हुआ । गवर्नमेन्ट ने कान्फ्रेंस की बहुत सी तजवीज़ों को स्वीकार कर के यह इकरार किया कि नहर इस प्रकार से बन वादी जावेगी कि श्री जल का स्वाभाविक प्रवाह हर की पैड़ि तक न रुकेगा ।

सन् १९१७ । महारानीजी श्री झालीजी साहिबा की सवारी तारीख़ १६ अप्रेल को मुक़ाम धांगधड़ा पधारी और वहां से तारीख़ ३० जून को जयपुर वापस आई ।

सन् १९२० । पिछले दो बरस में कोई बात लिखने योग्य नहीं हुई । यह वर्ष बहुत क्लेश दायक रहा । इस के आरंभ में ही तारीख़ २१ मार्च को लालजी साहिब श्री गोपालसिंहजी बैकुण्ठ सिधारे जिस का समस्त प्रजा और श्री हुजूर साहिब को बहुत शोक हुआ । इसी वर्ष की तारीख़ १८ मई को हुजूर साहिब को बीमारी का पहला दौरा हुआ । यह दौरा बाईस मिनिट तक रहा । जिस्से कमज़ोरी

वहुत हो गई । श्री हुजूर साहिब ने अपने इलाज के वास्ते डाक्टर सर जेम्स रावर्ट साहिब को बुलाया जो हिन्दुस्तान के मशहूर डाक्टर हैं । डाक्टर साहिब ने तारीख़ २७ मई को जयपुर पधार कर इलाज शुरू कर दिया । तारीख़ पहली नवम्बर को दरवार बुंदी मिजाज पुरसी के वास्ते जयपुर पधारे और तारीख़ ३ नवम्बर तक यहां रामवाग में रह कर वापस गए ।

तारीख़ १६ सितम्बर को सर चार्ल्स क्लीवलेण्ड साहिब जयपुर पधारे ।

सन् १६२१ । बीमारि के कारण श्री हुजूर साहिब ने रियासत के काम के लिए महक्मा **ख़ास (कैबिनेट)** क़ायम फरमाया जिस का पहला इजलास मुबारक महल में तारीख़ १८ फ़रवरी को हुआ । इस में ख़ास ख़ास आला मैम्बरान कौन्सिल के अलावा डाक्टर सर जेम्स रावर्ट साहिब व सर चार्ल्स क्लीवलेण्ड साहिब भी मैम्बर नियत किए-गए । यद्यपि इस समय तक जयपुर की प्रजा अत्यन्त आनन्द के साथ अपना जीवन विता रही थी परन्तु वाल वृद्ध प्रतेक मनुष्य के जी में यह इच्छा वनी हुई थी की परमात्मा वह शुभ अवसर शिघ्र प्रदान करे की महाराज कुमार के मुखचन्द्र देखने का सौभाग्य प्राप्त हो । हम उपर लिख चुके हैं कि श्री हुजूर साहिब ने अपने जानशीन का नाम लिख कर वन्द लिफ़ाफे में हुजूर वाइसराय लार्ड हारडिङ्ग साहिव को दे दिया था यह वर्ष प्रजा की खुश किस्मती का था कि श्रीहुजूर साहिब ने प्रजा को बहुत

आरजूमन्द देख कर ईस भेद को छुपा रखना उचित न समझा और तारीख़ १२ मार्च को चन्द्र महल में तमाम सरदारों व हुक्काम रियासत को एकत्र कर के फ़रमाया कि हमने अपने समीपवर्ती राजावत खानदान में से एक कँवर को उत्तराधिकारी बनाना तजविज़ कर लिया है। हमारी उस तजविज़ से जो सहमत हो वह इस फ़हरिस्त पर अपने हस्ताक्षर कर दे। दो चार सरदारों को छोड कर और सब ने फ़हरिस्त पर हस्ताक्षर कर दिये। दूसरे दिन १३ मार्च को नायबान महकमेजात राज, सेठ साहूकारान और वकीलों को चन्द्र महल में बुला कर पहले की तरह हाल ज़ाहिर किया और सब ने खुशी के साथ फ़हरिस्त पर दस्तख़त कर दिये। फिर श्री हुज़ूर साहिब ने २१ मार्च को ठाकुर साहिब ईसरदा के दूसरे कँवर मोरमुकटसिंहजी को कोटे से जयपुर बुला लिया, जहां पर वह अपने बडे भाई सहित शिक्षा ग्रहन करने में लगे हुए थे। तारीख़ २४ मार्च को श्री महाराजकुमार का शुभ दत्तक संस्कार यथा विधी सम्पादित हुआ और आप का शुभ नाम मानसिंहजी रखा गया। उसी दिन से शहर में खुशी का जोश इस क़दर बढ़ा कि जा बजा रोशनी नाच गान दावतें ख़ैरात वग़ैरा रोज़ होने लगे।

॥ दोहा ॥

जयपुर में मङ्गल महा, घर घर मोद समाज।
धन्य घड़ी आनंद भरी, सिद्ध भये सब काज॥
माधवेन्द्र महाराज ने, गोद लिये युवराज।
प्रजा मनावै हर्ष तें, खुशी सुमङ्गल काज॥

श्री महाराज कुमार मानसिंहजी, जैपुर.

तारीख २४ मई को हुजूर वाइसराय के पास से मंजूरी गोद नशीनी का तार आया और तारीख १० जून को खुशी का दरबार दीवान खाने आम में हुआ। उस रोज़ रात्री को शहर के तमाम बाज़ारों क़िलेजात और दरवाज़ों के बाहर राज की तरफ़ से रोशनी हुई। शहर के तमाम जलसों और दरबार के पूरे हालात हम अपनी पुस्तक "श्री मान महोत्सव" के "दरबार नम्बर" में लिख चुके है।

इस खुशी की मुबारिक बाद देने के लिए तारीख़ ३१ मई को महाराज साहिब अलवर, तारीख़ २१ मई को दरबार किशनगढ, ता० १० जोलाई को महाराना साहिब धांगधडा, तारीख़ ११ अगस्त को महाराव साहिब कोटा और २ सीतम्बर को महाराजा साहिब काश्मीर जयपुर पधारे। महाराज साहिब काश्मीर ने रामबाग़ में महाराज कुमार की गोद नशीनी की खुशी का जलसा और रोशनी भी की।

श्री हुजूर साहिब के राज में जयनगर की सारी प्रजा स्वर्गसुख का अनुभव कर रही है, इसी से १४ हज़ार पांच सो सताईस वर्ग मील प्रथवी में बसने वाले चौबीस लाख प्रजा अपने शुद्ध हृदय से अपने सरताज श्री अन्नदाताजी के और श्री महाराज कुमार के हक़ में दआ करती रहती है:-

तुम सलामत रहो हज़ार बरस,
हर बरस के हों दिन पचास हज़ार।